सूचीपत्र ।

पृष्ठ

मरियम का प्रभु यीशु का अभिषेक करना ।

अखमीरी रोटी का पर्व्व जो निस्तारपर्व्व कहलाता है निकट आया। (लूक २२ : १) । प्रभु यीशु ने अपने शिष्यों से कहा तुम जानते हो कि दो दिन के पीछे निस्तारपर्व्व होगा और मनुष्य का पुत्र क्रूश पर चढ़ाये जाने के लिये पकड़वाया जायगा । तब महायाजक और लोगों के प्राचीन कयाफा नाम प्रधान याजक के भवन में एकट्ठे हुए और आपस में परामर्श किया कि यीशु को छल से पकडे और मार डालें । पर उन्हों ने कहा पर्व्व में नहीं ऐसा न हो कि लोगों में हुल्लड मचे ॥

जब यीशु बैथनिया में शिमोन कोढ़ी के घर में था तब एक स्त्री उजले पत्थर के पात्र में बहुमूल्य सुगन्ध तेल लेके उस के पास आई और जब वह भोजन पर बैठा था तब उस के सिर पर ढाला । यह देखके शिष्यों ने रिसियाके कहा यह व्यर्थ उठाव क्यों हुआ । क्योंकि यह बहुत दाम में बिक सकता और कंगालों को दिया जा सकता । यीशु ने यह जानकर उन से कहा स्त्री को क्यों दुःख देते हो उस ने तो अच्छा काम मुझ से किया है । क्योंकि कगाल सदा तुम्हारे साथ हैं पर मैं सदा तुम्हारे साथ नहीं हूं । क्योंकि उस ने जो यह सुगन्ध तेल मेरी देह पर ढाला है सो मेरे गाड़े जाने के निमित्त किया है । मैं तुम से सच कहता हूं सारे जगत में जहां कहीं यह सुसमाचार प्रचारा जाय वहां यह भी जो इस ने किया उस के स्मरण के लिये कहा जायगा । मत्ती २६ : १—१३। मार्क १४ १—९ और योहन १२ : १—८ को भी देखो ॥

निस्तारपर्व्व निकट आया और मसीहरूपी निस्तारपर्व्व का मेम्ना उस स्थान में पहुंचा था जिस में वह चढ़ाया जावे । जो जो बातें मसीह को नबी होते हुए सुनानी थीं उन्हें वह सुना चुका था । अब वह घड़ी आ पहुंची कि जिस में वह अपना महायाजकीय काम पूरा करे । लोगों के प्राचीनों ने आपस में परामर्श किया कि हम यीशु को किस रीति से पकड़वाके मरवा डालें । ऐसा करने से उन्हों ने न केवल अपने पापों का माप पूरा भर दिया बल्कि परमेश्वर की जो इच्छा मनुष्यों की मुक्ति के विषय थी उस को भी पूरा किया । देख लो कि सर्वशक्तिमान परमेश्वर अपने वैरियों के बीच में ऐसी प्रभुता करता है कि यद्यपि वे अंधे और बुरे होते हैं तौभी उन को उस की सेवा करनी पड़ती है । यूसुफ के भाइयों ने

भी अपने भाई के मार डालने का परामर्श आपस में करके और निर्दयता दिखाकर उसे इश्माएलियों के हाथ बेचा पर धर्मपुस्तक में लिखा है कि "उस ने" अर्थात् परमेश्वर ने "यूसुफ नाम एक पुरुष को उन से पहिले भेजा था जो दास होने के लिये बेचा गया था"। यूसुफ न जानता था कि मैं ये सब दु ख और क्लेश अपने भाईबन्धुओं की भलाई और सजीव रहने के लिये सहता हू। परन्तु प्रभु यीशु को मालूम था कि मैं किस कारण से दु ख उठाके मर जाऊंगा। उस ने अपने को हमारे लिये मृत्यु के वश में सौंप दिया। उस ने कई एक बार अपने शिष्यों को बताया था कि मैं मर जाऊंगा जिस्तें उन को आगे से मालूम होवे कि मरण उस पर अचानक न आ पडा। हां परमेश्वर का पुत्र अपने पिता की इच्छा के अधीन होके मृत्यु लों शान्तमन और आज्ञाकारी रहा। वह स्वेच्छा से अपने प्रेम के कारण अन्धकार के अधिकार और मृत्यु के वश में आया जैसा उस ने कहा कि "इस कारण पिता मुझ से प्रेम रखता है क्योंकि मैं अपना प्राण देता हूं कि मैं उसे फिर लेऊं। कोई उस को मुझ से नही लेता परन्तु मैं आप ही उसे देता हूं। उसे देने का मुझे अधिकार है और उसे फिर लेने का मुझे अधिकार है। यह आज्ञा मैं ने अपने पिता से पाई"। (योहन १० : १७, १८)। वैरियों के परामर्श करने के पहिले उस ने अपने शिष्यों से खोलकर कहा "तुम जानते हो कि दो दिन के पीछे निस्तारपर्व्व होगा और मनुष्य का पुत्र क्रूश पर चढ़ाये जाने के लिये पकडवाया जायगा"। (मत्ती २६ : २)। शिष्य लोग जानते थे कि निस्तारपर्व्व निकट आया है पर उन को मालूम नही था कि इसी पर्व्व में हमारा धन्य गुरु अपना प्राण देके हमारे और सारे जगत के लोगों के पापों को दूर करेगा। महायाजक ने कहा "पर्व्व में नहीं" पर परमेश्वर ने ठहराया था कि जिस बलि के द्वारा मनुष्यों के पाप दूर किये जावें सो पर्व्व ही में चढ़ाया जावे ॥

हम अब बैथनिया गांव में प्रवेश करें। जानना चाहिये कि प्रभु यीशु ने शिमोन को कोढ़ से चंगा किया था। जो उपनाम वह रखता था उस से उस को स्मरण होता था कि प्रभु ने मेरा बड़ा उपकार किया है। शिमोन कोढ़ी ने प्रभु के लिये भोजन तैयार कराया। जो लोग प्रभु के संग भोजन पर बैठे थे उन में से लाजर एक था जिसे उस ने मुर्दों में से जिलाया था। हे लाजर जो प्रभु आप ही पुनरुत्थान और जीवन है उस को तू ने कैसे बिचारा होगा। फिर जब हम महिमा में प्रविष्ट हुए उस के संग मेज पर बैठेंगे तब उस को कैसे बिचारेंगे। यद्यपि मथा अतिथ्य-

कारिणी न थी तौभी वह आनन्द से सेवा करती थी। प्रभु उस के मन से जानकार होके उस की सेवा से प्रसन्न था। शायद उस ने जाना होगा कि मर्था अपने मन में सोच रही कि हे प्रभु तू जानता है कि मर्था मुझ से स्नेह करती है तौभी कृपा करके मुझ को यह वर दे कि मैं परिश्रम करके अपनी सेवा के द्वारा अपना प्रेम प्रगट करूं। शायद मर्था की बहिन मरियम प्रभु के चरणों पर बैठे हुए उस के वचनों को सुन रही थी। उस ने उस के सौम्य चिहरे मे परमेश्वर की महिमा को प्रतिबिम्बित देखा होगा। देखते देखते उस का प्रेम अत्यन्त तप्त हो गया। वह उस को रोक न सकी बल्कि प्रेमवश होकर ठाना कि मैं अपनी सारी धन सम्पत्ति को प्रभु की सेवा में खर्च करूंगी॥

मरियम उठके अपना बहुमूल्य सुगन्ध तेल प्रभु के सिर पर ढालने लगी। ऐसा करने से उस ने अपने तईं संपूर्ण रीति से प्रभु यीशु को सौंप दिया। उस ने यह बहुमूल्य सुगन्ध तेल अपने भाई की लोथ के मलने के लिये मोल लिया होगा। पर जब कि प्रभु ने कृपा करके इस को जिलाया था तो उस ने इस सुगन्ध तेल को धन्यवाद बलि करके प्रभु को चढ़ाया। मरियम की समझ में तेल बहुत धीरे बहता है इस लिये उस ने पात्र को तोड़ा। जैसे टूटे पात्र में से तेल ने बहकर सारे घर को सुगन्ध से भर दिया तैसे मरियम का हृदय प्रभु की ओर तप्त प्रेम से परिपूर्ण होके फट चला। हां प्रभु का अपार प्रेम उस में समा नहीं सका। प्रभु ने मरियम पर दया करके और उस को प्रेम दिखाकर यह बड़ा स्नेह उस के मन में उपजाया था। मरियम ने जो काम प्रभु से किया सो उस के प्रेम का फल था। किसी दूसरे शिमोन के घर में किसी पापिनी ने प्रभु के पांवों को आंसूओं से भिंगाके अपने सिर के बालों से पोंछा और उस के पांव चूमके उन पर सुगन्ध तेल मला क्योंकि वह उस से अति बडा प्रेम रखती थी। इस स्त्री के प्रेम का कारण यह था कि प्रभु ने उस के बहुत से पापों को क्षमा करके उस को शान्ति दिई थी। मरियम की इच्छा थी कि जिस स्नेही मित्र से मै बहुत दिन से प्रीति रखती आई हूं उस से मैं मन और धन से प्रेम रखूंगी इस लिये उस ने प्रभु के सिर पर तेल ढालके और जो बूंदें सिर से गिरी उन से उस के पांवों को मलकर अपने सिर के बालों से पोंछा। पितर ने प्रेम से भरपूर होके प्रभु से कहा "हे प्रभु केवल मेरे पांव ही न धो परन्तु मेरे हाथ और मेरा सिर भी"। (योहन १३ ९)। मरियम ने सोचा होगा कि मैं मसीह का अभिषेक संपूर्ण रीति से करूंगी। हे भाइयो जो तुम मरियम के समान

प्रेम रखने चाहो तो प्रभु को अपने से प्रेम रखने देओ। प्रभु यीशु से बिनती करो कि हे प्रभु हमारी हृदयरूपी वेदी पर अपने प्रेमरूपी अंगारे को रख कि मन में तेरी ओर प्रेम उपजे॥

जो शिष्य प्रभु के संग भोजन पर बैठे थे उन में से कोई २ मरियम का व्यवहार देखके रिसियाने और यह कहने लगे कि "यह व्यर्थ उठाव क्यों हुआ"। उन में से एक जन मरियम के काम को देखकर बहुत क्रोधित हुआ क्योंकि जिस से मरियम प्रेम रखती थी उस से वह मन ही मन वैर रखता था। यह जन यहूदा था। वह दूसरे शिष्यों के संग सोचने लगा कि यदि यह सुगन्ध तेल बेचा जाता और उस का प्राप्त हुआ दाम कंगालों को दिया जाता तो क्या अच्छा होता। नि सन्देह गुरु ऐसे काम से प्रसन्न होता। पर सच पूछो तो यहूदा कंगालों की चिन्ता नहीं करता था। वह चोर होके रूपैयों का लालची था। चोरी करते करते वह लालच के वश यहां लों आया था कि वह सह नहीं सका कि मरियम प्रभु को प्यार दिखावे। फिर यह भी उस को बुरा लगा होगा कि प्रभु ने मरियम को नही डांटा बलिक उस की करणी से प्रसन्न भया॥

प्रभु यीशु यहूदा की बुराई और दूसरे शिष्यों के अचम्भा करने के कारण अति उदास हुआ। वह उन से इस लिये अप्रसन्न भया कि उन्हों ने मरियम को रंज दिलाया था। मरियम ने अपनी ओर से कुछ नही कहा। उस ने अपनी दृष्टि शिष्यों की ओर से फेरके प्रभु पर लगाई। प्रभु ने उस का रंज देखकर उस के बदले में उत्तर दिया और उन से कहा "स्त्री को क्यों दुःख देते हो उस ने तो अच्छा काम मुझ से किया है"। "मुझ से" प्रभु ने कहा। हां मरियम ने यह काम प्रभु से किया इस लिये वह अच्छा ठहरा। "कंगाल सदा तुम्हारे साथ हैं और जब तुम चाहो तब उन से भलाई कर सकते हो पर मैं सदा तुम्हारे साथ नही हूं"। यहूदा कंगालों से भलाई करने नही चाहता था जो मनुष्य मरियम के समान प्रभु को प्रिय जानता हो सो कगालों से भलाई किया करता है। जैसे कनान् देश में सदा कोई कोई दरिद्र पाया जावे। (व्यवस्थाविवरण १५ ११) तैसे मसीही मण्डली मे दरिद्र लोग सदा पाये जावेंगे जिस्तें मसीहियों का विश्वास और प्रेम परखा जावे। मसीह की ओर जो प्रेम है सो सब सच्चे प्रेम की मानो सजीव शक्ति है। जो हम मसीह से प्रेम न रखें तो हमारे सारे कर्म निकम्मे ठहरेंगे। अवश्य था कि प्रभु के समीप रहते और उस की सगति करते हुए शिष्यों के मन में उस की ओर प्रेम उत्पन्न होके बढ़ता जावे। चाहिये था कि जब लों वह उन के

बीच में था तब लों वे आनन्द से उस से प्रेम रखें जिस्तें जब वह दृश्य रीति से उन के संग न रहे तब भी वे उस से प्रेम रखते जावें ॥

मरियम अपने काम के अभिप्राय से अच्छी रीति से जानकार नहीं थी। जो कुछ उस से बन पड़ा सो उस ने किया। यह सुगन्ध तेल किसी के गाड़े जाने के लिये रख छोड़ा गया था पर लाजर के लिये नहीं बल्कि प्रभु यीशु के गाड़े जाने के लिये। यह वही भला काम था जिसे मरियम ने उस से किया। जब कि पुरानी बाचा के समय होमबलि उठाव और ठोकर के कारण न गिने जाते थे तो कौन प्रेम करनेवाली मरियम को इस लिये दुःखावे कि उस ने बहुमूल्य सुगन्ध तेल को उसी मनुष्यरूपी मेम्ने पर ढाला जिस का प्रतिरूप पुरानी बाचा के बलि सम्बन्धी पशु थे। प्रभु ने मरियम को इस लिये चुन लिया था कि जिस काम को निकोदीम और यूसुफ ने यीशु के मरण के पीछे किया उसे वह अपना प्रेम दिखाके आगे से करे। क्या मरियम मन ही मन चाहती थी कि प्रभु यीशु मरके गाड़ा जावे। नहीं। वह सारे तन मन से प्रभु से प्रेम रखती और यह चाहती थी कि मैं अपना सर्वस्व प्रभु की सेवा के लिये छोड़ देऊं। उस ने प्रभु यीशु पर विश्वास करने से उस को जानना और उस से प्रेम रखना सीखा था। उस ने समझा होगा कि प्रभु मुझ से प्यार करके पृथिवी पर उतर आया कि वह मुझे बचावे। सच वह उस के मरण का बोध नहीं रखती तौभी वह उस पर अनुरागी होकर उस से अत्यन्त प्रेम रखती थी। हां वह उस से ऐसा प्रेम रखती थी जैसा कि वह जानती होगी कि वह मेरे लिये अपना प्राण दे चुका है। वह समझती थी कि प्रभु यीशु मेरा सब कुछ है इस लिये मैं उस का आदर करूंगी ॥

जानना चाहिये कि यदि हम वह करें जो हम से बन पड़े तो प्रभु हमारे लिये वही करेगा जो हम से नहीं हो सकता। यदि हम अपनी सारी शक्ति और जान अपनी करणी में लगावें तो प्रभु उसी को हमारी करणी से मिलावेगा जो हमारी शक्ति से बाहर है। परमेश्वर के लोगों के कामों में कभी कभी ऐसे भेद छिपे हैं जिन से वे अनजान हैं। जब हम यहां से कूच करके परलोक की निर्मल ज्योति में प्रविष्ट हुए और अपने पृथिवी पर के जीवन की दौड़ पर ध्यान देकर उसी को बूझने लगेंगे जिसे परमेश्वर ने अपने आत्मा के द्वारा हम से कराया तब हम बहुत अचंभित होवेंगे। जो उस से बन पड़ा सो उस ने किया। यह बचन बिश्वासी मसीहियों के लिये बड़ा शान्तिदायक है पर जो लोग सीधे

नहीं हैं सो उन से दोषी ठहराये जाते हैं। अवश्य करके परमेश्वर की इच्छा है कि जो हम से बन पड़े सो हम करें अर्थात् वह चाहता है कि हम विश्वस्त होवें नहीं तो हम कृतार्थ न होवेंगे॥

यदि यहूदा बच सकता तो वह प्रभु की करुणा और कोमलता को देखके उस के चरणों पर गिर पड़ता और उस से दया मांगता। प्रभु ने उस के मन का भेद तो प्रगट किया था पर उस ने उस को दूर न किया और न उस को डांटके कहा तू झूठ और अधर्म्म से भरा हुआ चोर है और थोडी देर के बाद तू खूनी भी ठहरेगा। नही नहीं। प्रभु ने केवल यह बताके कि मैं मरूंगा उस के कठोर मन पर खटखटाया। उस ने मानो उस से कहा मरियम ने मुझे गाड़े जाने के लिये तैयार किया है पर हे यहूदा तू मुझे मरण के लिये कैसे तैयार करेगा। यहूदा प्रभु के चितवन को सहके उस के पकडवाने का प्रबन्ध करने को निकला। परन्तु मरियम अरु और लोग जो प्रभु के संग भोजन पर बैठे थे उदास हुए क्योंकि उन्हें मालूम हुआ था कि हमारा प्रिय प्रभु हम से अलग होगा। उस के दु:खभोग और मरण का भेद जिस में उन का और हमारा जीवन छिपा है उन से गुप्त था॥

फिर प्रभु उन से बोला कि जहां कही जगत में यह प्रचारा जायगा कि ईश्वर के पुत्र ने जगत के लोगों से इतना बडा प्रेम रखा कि उस ने उन के बचाने के लिये अपना प्राण दिया वहां वह भी सुनाया जायगा कि मरियम मुझ से कैसा प्रेम रखती थी। प्रभु का बचन पूरा हुआ और पूरा होता जाता है और जगत के अन्त लों पूरा होता जायगा। वह मनुष्य क्या ही धन्य है जो मन से प्रभु यीशु मसीह के सुसमाचार की प्रतीति करता है और मरियम के समान मसीह से प्रेम रखता और उस की सेवा करने में अपना जीवन बिताता है। हां जहां कहीं मसीह के दु:खभोग और मरण की कथा सुनाई जाती और उस का बिश्वास किया जाता है वहां थोडी देर में मरियम का सा प्रेम प्रगट होगा और लोग मसीह की महिमा के बढ़ाने की चेष्टा करने लगेंगे। आमेन॥

———

तुम मुझे क्या देने चाहते हो कि मैं उस को तुम्हारे हाथ पकड़ा दूं।

और यहूदा इस्करियोती जो बारहों में से एक था महायाजकों के पास चला गया कि उस को (अर्थात् यीशु को) उन के हाथ में पकड़वा दे। वे यह सुनके आनन्दित हुए और उस को रुपैये देने की प्रतिज्ञा दिई। और वह अवसर ढूंढने लगा कि क्योंकर उस को पकड़वा देवे। मार्क १४: १०, ११। मत्ती २६: १४—१६ और लूक २२: ३—६ को भी देखो॥

यहूदा सत्तर शिष्यों में से नहीं था बल्कि बारहों में से एक था। वह प्रभु यीशु का शिष्य होने के लिये पितर और योहन के संग बुलाया गया था। प्रभु ने देखा होगा कि यह सम्भव है कि यहूदा सच्चाई का साक्षी हो जावे इस लिये उस ने उसे सच्चाई के चुनने का अवसर दिया जिस्तें वह आप ही ठहरावे कि मैं परमेश्वर की सेवा करूं या नहीं। यहूदा नाम का अर्थ यहोवा की स्तुति है। चाहिये था कि वह अपने नाम का अर्थ स्मरण करते हुए अपने सारे कामों और सारी चालों से यहोवा परमेश्वर की स्तुति और बड़ाई करता जाता। सम्भव है कि इसके बदले वह आरम्भ से झूठ और संसार के अभिलाष में फंसके सच्चाई को छोड़ने और परमेश्वर के प्रेम से अलग होने लगा। होते होते वह लालच के बश में आने लगा और उस की इच्छा यहां लों बिगड़ गई कि वह नीच कमाई में प्रीति रखने और धन की सेवा करने लगा। वह यहां लों भ्रष्ट होता गया कि वह केवल इस संसार के विषयों की चिन्ता करता था। धन उस का ईश्वर था। उस ने सोचा होगा कि यदि प्रभु यीशु शैतान को दण्डवत करके जगत के सारे राज्यों को प्राप्त करता तो क्या ही अच्छा होता क्योंकि तब मैं बड़ा धनी और आदरमान होता। हां यहूदा मसीह का विश्वासयोग्य प्रेरित होने की चेष्टा नहीं करता था बल्कि उस की यह इच्छा थी कि मैं इस संसार में बड़ा हो जाऊं। वह बड़ा होने का अभिलाषी तो था पर चोर बन गया। प्रभु ने आगे से उस को जिताया जब उस ने शिष्यों से कहा "तुम में से कितने हैं जो विश्वास नहीं करते। क्या मैं ने तुम बारहों को नहीं चुना और तुम में से एक शैतान है"। यह उस ने शिमोन इस्करियोती के पुत्र यहूदा के विषय में कहा क्योंकि वही उसे पकड़वाने पर था और वह बारहों में से एक था। (योहन ६: ६४,

७०, ७१)। दिन दिन प्रभु यीशु सहनशीलता और धीरज दिखाके यहूदा से प्रेम का व्यवहार करता था जिस्तें उस का टेढ़ा मन सीधा हो जावे पर जैसे गरम लोहा ठण्डा होने पर फिर कडा होता है तैसे यहूदा का मन दिन प्रतिदिन अधिकतर कठोर और टेढ़ा होता गया। हां दयाशील और प्रेमवान प्रभु यीशु दिन ब दिन उस की समझ में और अधिक घिनोना दिखाई देता था। क्या जाने वह यह सोचा करता था कि यदि ईश्वर न होता तो अच्छा होता क्योंकि तब ही मैं निर्भय होके अपने मन की अभिलाषाओं को पूरा कर सकता। मसीह के समीप रहते हुए उस को इन दोनों बातों में एक चुननी पडी अर्थात् प्रेम करना या वैर रखना। यहूदा ने वैर रखना चुना। वह प्रभु से इस लिये वैर रखता था कि उस का मन उस को दोषी ठहराके उस से कहा करता था कि एक दिन तुझ को यीशु मसीह के विचारासन के साम्हने खडा होना पड़ेगा। मन में वह बहुत दिन से प्रभु से और इस के शिष्यों से अलग रहा पर जब कि वह उन के रुपैयों का भण्डारी था तो वह अब तक प्रगट में उन के संग रहता था। वह चोर था। शायद कोई पूछेगा कि काहेको रुपैये उस के हाथ में दिये जाते थे। प्रभु का अभिप्राय यह हुआ होगा कि यहूदा अपनी बुरी बान को जीतके अपने विशेष दान या गुण से सेवा करे। यदि वह आत्मा की चितौनी और उपदेश के अधीन होता तो वह होते होते जीतेन्द्रीय होकर लालच पर जयवन्त होता। परन्तु जब कि वह पाप को मन में बढ़ने देता था तो उस का भण्डारीपन उस की परीक्षा और सत्यानाश का कारण ठहरा। जानना चाहिये कि बुरी अभिलाषा उस के निज की थी। यदि वह पाप से पछताके प्रभु की ओर फिरता तो वह अपनी बुरी अभिलाषा को दबाके जीत सकता। पर वह पछताने नही चाहता था बल्कि जान बूझके पाप करने से कठोर होता गया। निदान उस की दशा इतनी बुरी हो गई कि उस का बचना अन-होना ठहरा॥

जो घटना बैथनिया नाम गांव में हुई उस के बाद यहूदा सहज से और सम्पूर्ण रीति से उस बुरे अधिकार के बश में आया जिस को वह अपने तई उस दिन सौंपने लगा जिस दिन उस ने पहिली बेर अपना हाथ बढ़ाके प्रभु के और कंगाल लोगों के रुपैयों को चुराया। वह प्रार्थना नहीं किया करता था। सो वह शैतान का साम्हना किस प्रकार से कर सके। वह इस कारण प्रार्थना कर नही सका कि वह कपटी था क्योंकि

कपटी लोग प्रार्थना कर नहीं सकते हैं। जो मनुष्य प्रार्थना नही किया करता उस की दशा बड़ी डरौनी है। फिर जो मनुष्य प्रार्थना किया करता था पर प्रार्थना करनी छोड दिई है उस से शैतान जो कुछ चाहे सो करता है। हां वह प्रभु के वचन के अनुसार जाके सात और आत्माओं को जो उस से दुष्ट हैं अपने संग ले आता है और वे मनुष्य के मन में भीतर पैठके वहां वास करने लगते हैं और उस मनुष्य की पिछली दशा पहिली से बुरी होती है। (लूक ११. २६ को देखो)। जब लों प्रभु अपना प्रेम दिखाके यहूदा के मन में असर करता था तब लों वह कभी कभी उदास हुआ होगा और पापरूपी जंजीरों से छूटने की इच्छा किई होगी। पर अब वह निरुपाय हो गया था। उस की समझ में प्रभु का प्रेम सहने योग्य नहीं है। वह प्रभु के सौम्य और प्रेमवन्त चिहरे को विना घिन खाये देख नहीं सकता। प्रभु की प्रेममय दृष्टि से वचने के लिये उसने अपने को शैतान के वश में सरासर दे दिया। लूक ने इस बात का इशारा किया जब उस ने लिखा कि "तब शैतान ने यहूदा में प्रवेश किया"। हां शैतान ने अपनी इच्छा निमित्त उस को ऐसा बझाया था कि वह उस के फंदे में से निकल न सका। जिस मनुष्य के मन में पाप प्रवल होता उस के ऊपर शैतान प्रभुता करते हुए उस को अपनी इच्छा के अनुसार चलाता है॥

महायाजक अध्यापक और प्राचीन लोगों ने ठाना था कि यीशू नासरी मार डाला जावे। उन्हों ने सोचा कि हम छल करके उस को पकड़वायेंगे। लाज़र के जिलाये जाने के कारण साधारण लोग प्रभु यीशू का आदर करने लगे थे इस लिये उन्हों ने सोचा कि पर्व्व में नही ऐसा न हो कि लोगों में हुल्लड़ होवे। प्रभु यीशू जानता था कि मेरी दुःख उठाने की घडी आ पहुंची है। हां उस को मालूम था कि जिस दिन इस्राएलवंशी मिस्र के दासत्व से छुटकारा पाने के स्मरण के लिये मेम्ना खावेंगे उसी दिन मैं अपना प्राण संसार के लोगों को पाप से छुड़ाने के लिये देऊंगा इस लिये उस ने यहूदा से कहा "जो तू करता है सो शीघ्र कर"। यहूदा ने प्रभु को मरवा डालने और अपने को उस की दुःखदाई दृष्टि से बचाने चाहा। उस ने सोचा कि मैं चुपके उस को पकड़वाऊंगा पर संतमेंत नहीं। हां मैं यह काम ऐसी चालाकी से करूंगा कि मुझ को उस से लाभ होगा। "उस ने महायाजकों के पास जाके कहा तुम मुझे क्या देने चाहते हो कि मैं

उस को तुम्हारे हाथ पकडवा दूं । और उन्हों ने उस को तीस रुपैये दिये" । एक वरसोदिया की मजूरी तीस रुपैयों को थी और निर्गमन के २१ ३२ के अनुसार तीस रुपैये एक दास या दासी का ठहराया हुआ दाम थे ॥

यह संयोग से नहीं हुआ कि महायाजक यहूदा को इतनी थोड़ी मजूरी देवें क्योंकि परमेश्वर ने आगे से ठहराया था कि मसीह सब से तुच्छ और निकम्मा गिना जावे । जकर्याह नाम नबी ने अपनी पुस्तक के ग्यारहवें पर्व्व में वर्णन किया है कि किस प्रकार से अच्छा गड़ेरिया मनोहरता नाम लाठी को हाथ में लेके इस्राएलरूपी भेड़बकरियों को पिछली बेर चराने लगा । परन्तु ये भेडबकरियां उस को नही चाहतीं थीं बलिक उस से घिन करने लगीं । ये इस्राएलरूपी भेड़बकरियां घात होनेहारी थी क्योंकि उन्हों ने परमेश्वर को त्याग दिया था सो अच्छे गड़ेरिये ने उन के ऊपर अपनी लाठी तोड़ डाली जिस्तें प्रगट होवे कि प्रभु ने अपने भक्तिहीन लोगों को दगड पाने के लिये छोड दिया है । वह अच्छा गड़ेरिया होके अपने काम की मजूरी का हक रखता था सो उस ने उन से कहा "यदि तुम को अच्छा लगे तो मेरी मजूरी देओ और नहीं तो मत देओ सो उन्हों ने मेरी मजूरी में रूपे के तीस टुकड़े तौल दिये" । यह बचन तब पूरा हुआ जब यहूदा ने महायाजकों से तीस रुपैये मजूरी में लिये । प्रभु परमेश्वर ने अधर्म्मी यहूदा के द्वारा अपना बचन पूरा किया । बिना जाने यहूदा ने परमेश्वर की बडाई किई । उचित होता कि वह "दया का पात्र" बनके परमेश्वर की स्तुति करता पर उसने यह नही चाहा इस लिये उस को "क्रोध का पात्र" बनके प्रभु की स्तुति करनी पड़ी । यहूदा का इतिहास जो है सो सब भक्तिहीन और कपटी लोगों का है क्योंकि जो लोग प्रभु की सहनशीलता और दया को तुच्छ जानके अपनी बुरी चाल से फिरने नहीं चाहते हैं उन पर ईश्वर की यथार्थ क्रोध स्वर्ग से प्रगट होगा । लोग उन का दगड देखकर मान लेवेंगे कि परमेश्वर न्यायी और सच्चा होके अधर्मियों को दगड देनेहारा ईश्वर है ॥

हे पढ़नेहारो क्या तुम अधर्मी यहूदा से घिन करके उस से मुंह फेरते हो । ऐसा मत करो बलिक अपने को परखो । क्या जाने तुम्हारा मन यहूदा का सा है । क्या तुम ने कभी नहीं सोचा है कि मुझे क्या मिलेगा

यदि मैं प्रभु यीशू को त्यागूं । क्या तुम ने सांसारिक आदर सुखबिलास और धन पाने के लिये मसीह की ओर कभी पीठ न फेरी हो । क्या तुम ने मनुष्यों के डरके मारे उस बचन को मानो बेच डाला हो जो त्राण के निमित्त तुम्हें बुद्धिमान कर सकता है । जानना चाहिये कि प्रभु यीशू मसीह तुम्हारा सच्चा स्वामी है । उस से प्रेम रखना तुम पर फर्ज़ है जो तुम जान बूझके या सोच बिचार करके उस की इच्छा के बिरुद्ध कुछ करो तो यहूदा का सा पाप करोगे । सब मनुष्यों पर फर्ज़ है कि जो कुछ उन को मसीह से अलग करने का कारण हो सके उसे दूर करना जिस्तें वे दिल ओ जान से उसी से प्रेम रक्खें जिस ने उन से प्यार करके उन के उद्धारने के लिये अपना प्राण दिया । आमेन ॥

मसीह का शिष्यों के पांव धोना ।

अखमीरी रोटी के पहिले दिन शिष्यों ने यीशू के पास आकर कहा तू कहां चाहता है कि हम तेरे लिये निस्तारपर्ब्ब का भोजन करने का सजाव करें । उस ने कहा नगर में अमुक मनुष्य के पास जाओ और उस से कहो गुरु कहता है कि मेरा समय निकट है मैं अपने शिष्यों के संग तेरे यहां निस्तारपर्ब्ब करूंगा । और शिष्यों ने जैसा यीशू ने उन्हें आज्ञा दिई थी वैसा किया और निस्तारपर्ब्ब का भोजन बनाया । जब सांझ हुई वह बारह शिष्यों के सग भोजन पर बैठा । मत्ती २६ : १७-२० मार्क १४ : १२-१७ और लूक २२ ७-१४ को भी देखो ॥

शिष्यों में यह बिवाद भी हुआ कि हम में बड़ा कौन है । उस ने उन से कहा कि अन्यजातियों के राजा उन पर प्रभुता करते हैं और जो उन पर अधिकार रखते हैं सो हितकारी कहलाते हैं । परन्तु तुम ऐसे न होओ पर जो तुम में बड़ा है सो छोटे की नाईं होवे और जो प्रधान है सो सेवक की नाईं होवे । क्योंकि कौन बड़ा है क्या भोजन पर बैठनेहारा बड़ा नहीं है परन्तु मैं तुम्हारे बीच में सेवा करनेहारे की नाईं हूं इत्यादि । लूक २२ २४-२७ ॥

बियारी के समय जब कि शैतान शिमोन के पुत्र यहूदा इस्करियोती के हृदय में यह डाल चुका था कि उसे पकड़वावे यीशू यह जानके कि पिता ने सब कुछ मेरे हाथ में कर दिया है और मैं ईश्वर की ओर से

आया और ईश्वर के पास जाता हूं बियारी से उठा और अपने वस्त्र उतार रखे और अंगोछा लेके अपनी कमर बान्धी। तब पात्र में जल डालके वह शिष्यों के पांव धोने लगा और जिस अंगोछे से उस की कमर बन्धी थी उस से पोंछने लगा। तब वह शिमोन पितर के पास आया। उस ने उस से कहा हे प्रभु क्या तू मेरे पांव धोता है। यीशू ने उत्तर दिया और उस से कहा जो मैं करता हूं सो तू अब नही जानता पर इस के पीछे जानेगा। पितर ने उस से कहा तू मेरे पांव कभी न धोवेगा। यीशू ने उस को उत्तर दिया यदि मैं तुझे न धोऊं तो मेरे संग तेरा कुछ भाग नहीं है। शिमोन पितर ने उस से कहा हे प्रभु केवल मेरे पांव ही न धो परन्तु मेरे हाथ और मेरा सिर भी। यीशू ने उस से कहा जो नहलाया गया है उस को पांव को छोड़ और कुछ धोना आवश्यक नहीं है पर वह सर्वथा शुद्ध है और तुम लोग शुद्ध हो परन्तु सब नहीं। क्योंकि वह अपने पकड़वानेवाले को जानता था इस लिये उस ने कहा तुम सब शुद्ध नहीं हो। योहन १३ २-११॥

जिस दिन प्रभु यीशू ने अपने शिष्यों को निस्तारपर्व्व का भोजन तैयार करने को भेजा सो वृहस्पति था। प्रभु को मालूम था कि मैं कल मरूंगा। हां वह जानता था कि मै अत्यन्त बड़ा मानसिक और शारीरिक दु:ख और कष्ट उठाके मरूंगा। उस को मालूम था कि मैं कुकर्मियों में गिना जाके दोषी मनुष्य के समान मरूंगा पर उस को यह भी मालूम था कि मै अपने दु:ख और मरण के द्वारा मनुष्यों का उद्धार करके महिमा में प्रवेश करूंगा। यद्यपि वह इन भारी बातों पर सोच रहा था तौभी वह अपने शिष्यों को नहीं भूला वल्कि उस का मन उन की ओर लगा रहा। वह अपने बड़े प्रेम के कारण महिमा और सुख को त्यागकर इस बुरे संसार में उतर आया कि वह अभागे मनुष्यों को पाप की विपत्ति से बचावे और उन्हें परमसुख देवे। जा बडी दु:खरूपी धाराएं अब उस पर बहने लगी थीं सो उस की प्रेमरूपी आग को बुझा नहीं सकीं वल्कि वह अधिकतर अपने शिष्यों की चिन्ता करता रहा। जैसे उस ने अपने निज लोगों से जो जगत में थे प्यार किया तैसे अन्त तक उन से प्रेम रखा। हां मसीह ने अपने ही को प्रसन्न नहीं किया वल्कि उस के सारे सोच और काम उस का प्रेम जो शिष्यों की ओर था प्रकट करते थे॥

वह अपने शिष्यों के लिये मेज तैयार करने के लिये तरसता था। हां वह उनके अशान्त और व्याकुल मनों को शान्त और स्थिर करने का अभिलाषी था। वह परमेश्वर की व्यवस्था के अधीन होते हुए बड़ी दीनताई दिखाके इस्राएली गृहस्थ के समान अपने शिष्यों के संग निस्तारपर्व्व का मेम्ना खाने के लिये अपने को तैयार करता था। उस ने बड़ी दीनताई की दशा में होके अपनी महिमा की कुछ किरणों को शिष्यों पर चमकने दिया। जिस आज्ञा को उस ने उन्हें दिया कि जाके निस्तार पर्व्व का भोजन तैयार करो उस से शिष्यों को मालूम हुआ कि हमारा गुरु सर्वज्ञानी है क्योंकि जैसा उस ने बताया था वैसा उन्हों ने पाया। शिष्य लोग उस गुप्त चेले को जिस की चर्चा प्रभु ने किई थी पाके उस के घर में निस्तारपर्व्व का भोजन तैयार करने लगे। जब वे तैयारी कर चुके थे तब प्रभु यीशू अपने दूसरे शिष्यों के संग आके मेज पर बैठा। किस ने इस भोजन पर अतिथिसेवक होना न चाहा होगा। जकई पर यह अनुग्रह हुआ कि वह अपने घर में प्रभु को ग्रहण करने और उस की अतिथिसेवा करने पाया। गायस के विषय लिखा है कि वह सारी मण्डली का अतिथ्यकारी था। जब वह मण्डली की सेवा करता तब प्रभु की सेवा करता था। आज कल भी ऐसे लोग पाये जाते हैं जो प्रभु यीशू के अतिथ्यकारी हैं। अवश्य है कि जब कि प्रभु यीशू अपने प्रेमरूपी हाथ से हमारे हृदयरूपी घर के द्वार पर खटखटावे तब द्वार खोलके उसे ग्रहण करें। वह हमारा धन सो नहीं बल्कि मन पाने को आता है॥

ऐसा जान पड़ता है कि घर का स्वामी हाजिर नही था और कोई सेवक भी नही था। यदि उन में से कोई हाजिर होता तो उस पर फर्ज होता कि वह प्रेम दिखाके प्रभु के और इस के शिष्यों के पांव धोवे। जब कि हाल यह था तो आवश्यक हुआ कि शिष्यों में से कोई यह काम करे। इस के बारे में बात करते करते उन में यह विवाद हुआ कि हम में बड़ा कौन है। सेवा करने में कोई बड़ा होना नहीं चाहता था परन्तु सब समझते थे कि ऐसा नीच काम करना हम बड़े लोगों के योग्य नही है। तीन बरस से वे मसीह की संगति कर रहे थे तौभी वे घमण्डी थे। प्रभु बचन चाल और नमूने से उन्हें दीनताई सिखलाता रहा पर अब लों वे समझते थे कि हम कुछ हैं। आज कल मसीही लोगों में बहुत जन हैं जो अपने को बड़े समझके दीन होना और सेवा करनी नहीं चाहते हैं। बहुत से काम जो उचित हैं और जिन के करने से कोई

मनुष्य तुच्छ और नीच नही होता है उन की समझ में ऐसे हैं कि विना आदर खोये हम उन को नहीं कर सकते हैं। जिस को बीस एक रुपैये महीने में मिलते है सो समझता है कि घर के लिये पानी भरना या लकडी काटनी या बजार से कुछ सौदा घर को ले आना या कंगालों दुःखियों या बपमुओं की सुध करके उन की सेवा करनी मुझ बड़े जन के योग्य नहीं है। जो लोग ऐसे खियाल किया करते सो मसीह का सा मन नहीं रखते हैं॥

प्रभु यीशु मेज पर बैठ गया था पर शिष्यों को अपने बड़े होने के विषय झगडते सुनके उठ खडा हुआ। बहुत उदास होके वह यहूदा की ओर दृष्टि करता है। वह जानता है कि यह जन अपने अधर्म से शुद्ध नहीं हो सकता है। परन्तु दूसरे ग्यारह शिष्य प्रभु के प्रेम से शुद्ध किये जा सके। वे तो भूलचूक करते और अच्छी बात सीखने में बड़े मन्द-मति थे पर उन की इच्छा थी कि हम सब अधर्म से शुद्ध हो जावें। मसीह ने चाहा कि मैं उन को परीक्षक के जाल से छुडाऊंगा हां जो मैं अब करने पर हूं उस के द्वारा उन को एक ऐसी शिक्षा देऊंगा जिसे वे कभी न भूलेंगे। वे मेरी दिई हुई शिक्षा को सीखते सीखते अपने घमण्ड से लज्जित होवेंगे। हां वे एक दूसरे से दीन और छोटा होने की चेष्टा करने लगेंगे। उस ने अपने प्रेम और वचन के द्वारा उन को शुद्ध करके धर्मी ठहराया तो था। यद्यपि वे ससार के नहीं थे तौभी वे संसार में रहते थे इस लिये ससार की धूल उन से लगती थी और आवश्यक था कि वे दिन प्रतिदिन इस से शुद्ध किये जावें। हे भाइयो चित्त लगाके उस को देखो जो स्वर्ग और पृथिवी का प्रभु है। वह क्या करता है। "उस ने अपने बस्त्र उतार रखे और अंगोछा लेके अपनी कमर बान्धी। तब पात्र में जल डालके वह शिष्यों के पांव धोने लगा और जिस अंगोछे से उस की कमर बन्धी थी उस से पोंछने लगा।" हे भाइयो प्रभु की इस करणी पर ध्यान करो। जिस के हाथों में परमेश्वर पिता ने सब कुछ दिया था सो अपने शिष्यों के हाथ नही परन्तु उन के पांव धोता है। योहन बपतिस्मा देनेहारा समझता था कि मैं मसीह की जूती का बन्ध खोलने के योग्य नहीं हूं पर मसीह बड़ा दीन होके अपने शिष्यों के पांव धोता है। यदि प्रभु ऐसा न करता तो कौन यह खियाल कर सकता कि वह जो सभों का सिरजनहार और स्वामी है लाचार और निकम्मे मनुष्यों के पांव धोवे। पर जैसा उस ने उन से प्यार किया था तैसा

अन्त तक उन से प्रेम रखता रहा। वह वही बन्धु है जो सब समयों में प्रेम रखता है बल्कि वह विपत्ति के दिन भाई बन जाता है। (नीतिवचन १७ : १७)॥

शिष्य अपने गुरु के व्यवहार पर ध्यान धरके अचम्भित और विस्मित भये पर जब वह पितर के पास आया तब वह चुप नहीं रह सका बल्कि कहा "हे प्रभु क्या तू मेरे पांव धोता है" । बस कर मैं अधम पापी होके इस के योग्य नहीं हूं कि तू मेरे पांव धोवे। यदि सब और शिष्य यहां लों ढीठ होके तुझ को यह नीच काम करने देवें तौभी तू मेरे पांव कभी नहीं धोने पावेगा। हां पितर ने तो ऐसे खियाल किये होंगे और उन में कुछ दीनताई प्रगट तो होती है पर उस पर फर्ज था कि जो कुछ प्रभु चाहे सो उसे करने देवे। पितर के वचन में कुछ घमण्ड और हठ भी छिपा था। सच वह प्रभु की करणी के अर्थ से अनजान था इस लिये प्रभु ने कृपा करके उस से कहा "यदि मैं तुझे न धोऊं तो मेरे संग तेरा कुछ भाग नहीं है"। यह सुनके पितर दब गया और कहा "हे प्रभु केवल मेरे पांव ही न धो परन्तु मेरे हाथ और मेरा सिर भी" अर्थात् जो तू चाहे सो मुझ से कर। मुझे धो कि मैं हिम से अधिक श्वेत हो जाऊं मैं केवल यह चाहता हूं कि मेरा भाग तेरे संग होवे। हे प्रभु तुझ से अलग मैं नष्ट हुआ नष्ट सो मेरी नादानी से आनाकानी करके मुझे मत त्याग॥

प्रभु ने उत्तर दिया कि "जो नहलाया गया है उस को पांव को छोड और कुछ धोना आवश्यक नहीं है पर वह सर्वथा शुद्ध है और तुम लोग शुद्ध हो"। इन वचनों से प्रभु यीशू अपने दृष्टान्तरूपी काम का अर्थ बताता है। वह मानो यह कहता है कि जैसे जो मनुष्य नहलाया गया है उस को घर आते समय केवल पांव शुद्ध करना आवश्यक है तैसे जो मनुष्य नये सिरे से उत्पन्न होके धर्मी ठहराया गया है सो शुद्ध है और उस को केवल यह अवश्य है कि वह दिन प्रतिदिन उस पापरूपी मैल से शुद्ध किया जावे जो उस के बुरे संसार में रहने के कारण उस को लगता है। हां सब मसीहियों को अवश्य है कि वे दिन दिन शुद्ध किये जावें क्योंकि वे दिन ब दिन नाना प्रकार की भूल चूक किया करते और जैसा चाहिये तैसा विश्वस्त नहीं हैं। प्रभु यीशू ने मसीहियों की दो प्रकार की शुद्धता की चर्चा तब किई जब उस ने शिष्यों से कहा "जो डाली फलती है माली उसे शुद्ध करता है कि वह अधिक फल फले। अब तुम

उस वचन के कारण जो मैं ने तुम से कहा है शुद्ध हो गये"। पहिले मनुष्य धर्मी ठहराया जाता है इस के पीछे वह पवित्र किया जाता है। जो मनुष्य पाप से पछताके यीशू मसीह पर विश्वास करता सो धर्मी ठहराया जाता है। उस के सब पाप क्षमा किये जाते हैं और परमेश्वर उस को सम्पूर्ण धर्मी और पवित्र गिनता है। पवित्र चाल चलने और दिन प्रतिदिन पाप से शुद्ध किये जाने से वह धर्मी ठहरता है। अति अवश्य है कि सब विश्वासी अपने मन वचन और कर्म में हां अपनी सारी चालों में पवित्र होने की चेष्टा करते जावें। शिष्यों के पांव धोके प्रभु ने कहा "तुम शुद्ध हो गये हो और यहूदा पर दृष्टि कर फिर कहा तौभी सब नहीं" यहूदा वचने से बाहर हो गया था क्योंकि वह सारे तन और मन से बुराई में लौलीन था॥

हम जानते हैं कि किस प्रकार का पापरूपी मैल शिष्यों को लगा था। वह घमण्ड और अभिमान था। प्रभु ने अपने क्षमा करनेहारे प्रेम से उन को इस अशुद्धता से शुद्ध किया और अपने को दीन कर उन का सेवक बनकर उस ने दीनताई और अधीनताई उन के शुद्ध किये हुए मनों में समवाई। उस ने उन के पापों को क्षमा करके उन्हें पवित्र चाल चलने की शक्ति दिई। हां उस ने उन को ऐसा मन दिया कि जो उस ने उन से किया था उसे वे एक दूसरे से करने लगे जैसा उस ने उन्हें आज्ञा दिई कि "जब कि मैं ने प्रभु और गुरु होके तुम्हारे पांव धोये तो तुम्हें भी एक दूसरे के पांव धोना उचित है" इस वचन का ठीक अर्थ लगाना चाहिये। क्या इस का यह अर्थ है कि हम एक दूसरे के पांव धोवें। हां यदि हमारे भाई की दशा ऐसी हो कि अवश्य है कि हम उस के लिये यह भ्रात्रीय सेवा करे तो करना हम पर फर्ज़ है। पर यह भी निश्चय है कि जो कोई मसीही स्वार्थत्यागी होके प्रेम से अपने भाई की सेवा करता है चाह उस के पांव धोवे चाहे उस की सहायता करके उस की भूख और प्यास मिटावे या उस को शान्ति देकर उस के आंसूओं को पोंछे या उस के लिये प्रार्थना किया करे सो प्रभु की इस आज्ञा को पूरा करता है। हमारी करणी का ग्राह्य होना उस मनसा पर निर्भर है जिस से हम उसे करते हैं। मसीह के पहिले शिष्य और प्राचीन मसीही जो एक दूसरे से तप्त प्रेम रखते थे यह बात भली भांति जानते थे। वे उसी का सा मन रखने की चेष्टा किया करते थे जो यद्यपि वह सभों का स्वामी था तौभी सभों की सेवा करता था। रोमी कत्तोलिया का पापा

साहिब बरस बरस एक बार १२ कंगाल जनों के पांव धोया करता है। क्या ऐसा करने से वह उसी की आज्ञा को पूरा करता है जिस ने अपने अनुगामियों से कहा कि "अन्यजातियों के राजा उन पर प्रभुता करते हैं और जो उन पर अधिकार रखते हैं सो हितकारी कहलाते हैं। परन्तु तुम ऐसे न होओ पर जो तुम में बड़ा है सो छोटे की नाईं होवे और जो प्रधान है सो सेवक की नाईं होवे।" प्रभु किस प्रकार के पांव धोने से प्रसन्न होता है। क्या उस से जो रोम नगर में हुआ करता अथवा उस से जो गुप्त में कंगालों और बीमारों की सुध लेने से किया जाता है। सो जानना चाहिये कि प्रभु का विशेष मतलब यह नहीं है कि हम पानी से एक दूसरे के पांव धोवें। पर हे भाइयो यदि तुम प्रभु के नमूने पर चलने चाहो तो मन ही मन दीन होके जो वरदान और शक्तियां परमेश्वर ने तुम्हें दिई है उन्हें अपने निज लाभ और आदर के लिये सो नहीं बल्कि अपने भाईबन्धुओं की भलाई और सुधराव के लिये काम में लाया करो। ऐसे करने से प्रभु का आदर मनुष्यों में बढ़ाया जाता और प्रभु ऐसे कामों को प्रसन्नता से ग्रहण करता है। फिर ऐसे काम करने से हम शैतान के छल और चालाकी से रक्षित होते हैं। धन्य वह मनुष्य है जो प्रभु के समान कमर बान्धके दूसरों के पांव धोता अर्थात् अपने तन मन और धन से अपने भाईबन्धुओं की सेवा किया करता है॥

फिर एक दूसरे का पांव धोना यह भी है कि हम एक दूसरे के भार उठावें और दुर्बलों की दुर्बलताओं को सह लेवें और एकदूसरे की भूल चूकों को क्षमा किया करें। क्योंकि हाल यह है कि इस संसार में कोई मनुष्य नहीं है जिस की दुर्बलता और घटी न हो। ईश्वर करे कि हम सभों का ऐसा मन होवे जो मसीह यीशू में था। आमेन्॥

तुम में से एक मुझे पकड़वा देगा॥

उस ने उन से कहा मैं ने यह निस्तारपर्व्व का भोजन दुःख भोगने के पहिले तुम्हारे संग खाने की बड़ी लालसा किई क्योंकि मैं तुम से कहता हूं कि जब लों वह ईश्वर के राज्य में पूरा न होवे तब लों मैं उसे कभी न खाऊंगा। और उस ने कटोरा लेके धन्यवाद किया और कहा इस को लेओ और आपस में बांटो क्योंकि मैं तुम से कहता हूं कि जब लों ईश्वर का राज्य न आवे तब लों मैं अब से लेके दाखरस न पीऊंगा। लूक

२२ : १५-१८। देखो मेरे पकड़वानेहारे का हाथ मेरे संग भोजनमंच पर है। लूक २२ : २१ ॥

यीशू आत्मा में व्याकुल हुआ और साक्षी देके बोला मैं तुम से सच सच कहता हूं कि तुम में से एक मुझे पकड़वावेगा। तब शिष्य यह सन्देह करते हुए कि वह किस के विषय में बोलता है एक दूसरे की ओर ताकने लगे। उस के शिष्यों में से एक जिस से यीशू प्रेम रखता था यीशू की गोद में उठंग बैठा। सो शिमोन पितर ने उस को सैन किई और उस से कहा कि बता कौन है जिस के विषय में वह बोलता है। सो उस ने यीशू की छाती पर उठंगके उस से कहा हे प्रभु वह कौन है। यीशू ने उत्तर दिया जिस को मैं रोटी का टुकड़ा डुबोके देऊंगा वही है। सो उस ने टुकड़े को डुबोया और उसे लेके शिमोन इस्करियोती के पुत्र यहूदा को दिया। और टुकड़ा देने के पीछे उसी समय शैतान उस में पैठा। तब यीशू ने उस से कहा जो तू करता है सो शीघ्र कर। परन्तु बैठनेहारों में से किसी ने नहीं जाना कि उस ने किस कारण यह बात उस से कही। क्योंकि यहूदा थैली रखता था इस लिये कितनों ने समझा कि यीशू ने उस से कहा कि पर्व्व के लिये जो हमें आवश्यक है सो मोल ले अथवा कि वह कंगालों को कुछ देवे। सो टुकड़ा पाके वह तुरन्त बाहर गया और रात थी। योहन १३ २१-३०। मत्ती २६ २१-२५,२६ और मार्क १४ १८-२१,२५ को भी देखो ॥

जिस समय वे निस्तारपर्व्व का मेम्ना भीतर ला रहे थे उस समय शिष्यों ने प्रभु के उस वचन पर ध्यान किया होगा जो उस ने उन से कहा था कि तुम मेरे राज्य में मेरे मंच पर मेरे संग भोजन खाने और दाखमधु पीने पाओगे। फिर जब वे निस्तारपर्व्व का भोजन करने लगे तब प्रभु ने उन से कहा "मैं ने यह निस्तारपर्व्व का भोजन दुख भोगने के पहिले तुम्हारे संग खाने की बड़ी लालसा किई" इस से मालूम होता है कि जब जब वह निस्तारपर्व्व का भोजन खाता था तब तब वह इसी निस्तारपर्व्व के लिये तरसता था। क्योंकि वह पुराने धर्मनियम का पिछला निस्तारपर्व्व था। अब वह निस्तारपर्व्व का मेम्ना चढ़ाया जावे जिस का दृष्टान्त और प्रतिरूप वह पुराना मेम्ना था। पहिले निस्तार पर्व्व के मेम्ने के लोहू के द्वारा इस्राएली सांसारिक दासत्व से छुड़ाये गये थे, पर अब वह मनुष्यरूपी मेम्ना चढ़ाया जावे जिस के लोहू के द्वारा सारे आदमवंशी जो मसीहरूपी मेम्ने पर सच्चा विश्वास करें पाप की

विपत्ति से छुड़ाये जाके परमेश्वर के निर्बन्ध और धन्य लोग हो जावेंगे। हां अब व्यवस्था के अनित्य धर्मकृत्य लोप किये जावें और जो लोग व्यवस्था के वश में पड़े हुए स्राप के नीचे हैं सो छुटकारा पावेंगे। अब नये युग के पहिले दिन का अरुणोदय दिखाई देने लगा। हां मसीहरूपी धर्म का सूरज चमकने और पापरूपी अंधियारे को भगाने लगा। अब इस अद्भुत सूरज की किरणे मनुष्यों के ऊपर पूरी रीति से चमकेंगी और उन के ठण्डे और अंधेरे हृदयों को गरम और प्रकाशित करेंगी क्योंकि जगतत्राता यीशू मसीह सारे मनुष्यों के पापों के दूर करने के लिये अपना प्राण देने पर था। प्रभु यीशू अपने सारे मन के साथ मनुष्यों से प्रेम रखता था इस लिये वह उस दिन की बाट जोहता और उस के लिये तरसता रहता था जिस दिन में वह अपने प्राण देने से मनुष्यों का उद्धार करे। प्रभु यीशू आगे से जानता था कि मेरा बलि सुफल होगा और मैं अपने ज्ञान के द्वारा बहुतों को धर्मी ठहराऊंगा और उन को अपने पिता के राज्य में पहुंचवाऊंगा। हां उस को मालूम था कि देश देश के लोग मेरे विषय का सुसमाचार सुनके अपने अपने पापों से पछता पछताकर मेरी शरण में आवेंगे। जब मसीह पर विश्वास रखनेहारों की संख्या पूरी होगी तब वे सब मसीह के संग महिमा में प्रगट किये जावेंगे और उस के पिता के राज्य में उस के संग मंच पर बैठेंगे। तब उन का आनन्द पूरा होगा। हां वे सारे क्लेशों दुःखों और पापों से छुटकारा पाये सदा लों सुख के स्थान में बेखटके रहेंगे॥

जो लोग यरूशलेम में प्रभु यीशू के संग पिछले निस्तारपर्व्व का मेम्ना खाते थे उन में से एक जन था जो स्वर्गीय भोजन को खाने न पावेगा। प्रभु ने यह जानके कहा कि "देखो मेरे पकड़वानेहारे का हाथ मेरे संग भोजनमंच पर है"। हां वही हाथ उधर हाजिर था जिस ने मसीह के वैरियों से तीस रुपैये ग्रहण किये थे। उस को देखके प्रभु यीशू आत्मा में व्याकुल हुआ। वह शारीरिक और मानसिक अत्यन्त बड़ा दुख और कष्ट सहने पर तो था। हां वह निर्दोष होकर संसार के सारे पापों का भार उठाने और स्रापित होने पर था। हां वह नरक की सी पीड़ा सहने पर था। पर क्या वह इसी कारण से व्याकुल था। नहीं, यह उस के शोक का कारण नहीं था। उस की व्याकुलता का हेतु यह था कि जिन लोगों को उस ने अत्यन्त प्रेम दिखा दिखाके चुन लिया और बरसों से उन से दया का व्यवहार करता आया था उन में से एक

था जिस ने अपने को शैतान के बश कर दिया है। उस ने इस अभागें शिष्य को एक और अवसर देके सभों से कहा "मैं तुम से सच सच कहता हूं कि तुम में से एक मुझे पकडवाएगा" उस ने यहूदा से यह नहीं कहा कि तू मुझे पकडवाएगा बल्कि कहा "तुम में से एक"। वह यहूदा पर दयादृष्टि करके प्रेम के बन्धनों से उसे अपनी ओर खींचने चाहता है। वह अपने प्रेम के कारण सभों को डराके अभागे यहूदा को पश्चात्ताप करने का एक और अवसर देता है। इस बचन से कि तुम में से एक मुझे पकड़वाएगा यहूदा का मन कुछ न कुछ छिदगया होगा और क्या जाने उस ने अपने को शैतान के बश से छुडाने की कुछ चेष्टा किई होगी। यहूदा ने अपने नेत्रों को वन्द किया होगा पर दूसरे शिष्य एक दूसरे पर देखने और पूछने लगे कि क्या मैं वही हूं। एक एक ने पूछा कि हे प्रभु क्या मैं वही दुरभागी मनुष्य हूं जो यह दुष्ट काम करेगा। उन के प्रश्न से प्रगट होता है कि वे मन ही मन प्रभु से प्रेम रखते थे। वे इस बुरे काम से घिन करते पर वे अपनी निर्बलता से जानकार होके डरते थे। अपने मन पर और अपनी सिधाई पर भरोसा रखने की अपेक्षा वे प्रभु पर अधिक भरोसा रखते थे। वे भली भांति जानते थे कि यह बुरा सोच हमारे मन में नही आया है तौभी वे अपनी निर्बलता के कारण डरके घबरा गये। ईश्वर करे कि हम उन के से मन रखें। धर्मपुस्तक में लिखा है कि बहुत लोग ईश्वर के राज्य में प्रवेश करने चाहेंगे और न कर सकेंगे और पिछले दिन बहुत मनुष्य प्रभु से कहेंगे कि "हे प्रभु हे प्रभु" पर वह उन से कहेगा "मै ने तुम को कभी नही जाना," यह भी लिखा है कि "अधर्म के बढ़ जाने के कारण बहुतों का प्रेम ठण्डा हो जायगा"। चाहिये कि हम जागते रहें और चौकसी करें और प्रभु के साम्हने अपने अपने मन को परखके यह प्रार्थना किया करें कि "हे ईश्वर मेरे मन की बात परखके जान मुझे जांचके मेरी चिन्ताओं को जान ले। और देख मुझ में कोई सताप करनेहारी चाल तो नही है और सनातन मार्ग में मेरी अगुवाई कर" (स्तोत्र १३९ : २३, २४)॥

प्रभु ने यहूदा पर तर्स खाके थरथराते हुए शिष्यों को उत्तर दिया। संसार के लोग छल से प्रीति रखते पर छली से बैर रखते हैं। प्रभु यीशु इस के विपरीत करता है। वह छल से घिन करते हुए छली को बचाने की चेष्टा करता है। जैसे उस ने दाऊद के इस बचन का अर्थ अपनी ओर लगाया था कि "मेरा परम मित्र जिस पर मैं भरोसा रखता था और

वह मेरी रोटी में से खाता था उस ने भी मेरे विरुद्ध लात उठाई है" जैसे वह अब भी कहता है कि धर्मपुस्तक का यह वचन मुझ पर पूरा होता है अर्थात् यह कि "जिस ने मेरे साथ थाली में हाथ डाला वही मुझे पकडवा देगा"। इस वचन से मालूम होता है कि यहूदा प्रभु के समीप बैठा था और दोनों ने एक ही समय अपना २ हाथ थाली में डाला था। अनुमान होता है कि न पितर ने न दूसरे शिष्यों ने देखा था कि यहूदा ने अपना हाथ यीशू के पास धरी हुई थाली में डाला था सो प्रभु का उत्तर सुन पितर चुप नहीं रह सका। वह तन मन के साथ प्रभु से प्रेम रखता था इस लिये यह सोचके कि प्रभु मेरे प्रेम में दुबधा करता है वह बडा उदास हुआ और उस शिष्य से जो यीशु की छाती पर उठंग रहा था कहा कि "बता वह कौन है जिस के विषय वह बोलता है"। उस ने अनुमान किया कि प्रभु ने इस भेद को उस पर प्रगट किया होगा जिस से वह अधिक प्रेम रखता है। पर प्रभु ने इस से भी कुछ नहीं कहा था। पितर के वचन से मालूम होता है कि योहन न केवल यीशू के समीप मच पर बैठा था बल्कि यह भी कि योहन प्रभु का अति प्रिय मित्र था। सचमुच प्रभु अपने सब शिष्यों से प्रेम रखता था पर दूसरे शिष्यों की अपेक्षा योहन ने प्रभु का प्रम अधिक अपनाया था। वह प्रभु की संगति करते करते उस के प्रेम से व्याप्त हुआ। मरियम के समान वह प्रभु के चरणों पर बैठने अथवा उस की छाती पर उठंगने का बडा इच्छुक था जिस्ते वह दैव्य ज्ञान सीखके अपने गुरु के प्रेम से परिपूर्ण हो जावे। मसीह की छाती पर उठगते हुए वह उस ईश्वरीय ज्ञान को सीखता रहा जो उस के विरचित सुसमाचार में पाय जाता है॥

हे भाइयो यदि तुम मसीह के समीप आना चाहो तो उसे योहन विरचित सुसमाचार में प्रार्थना के साथ ढूंढा करो। जो तुम ऐसे करो तो तुम होते होते निश्चय जानोगे कि यीशू नासरी जो है सो परमेश्वर का एकलौता पुत्र और हमारा प्रभु और त्राणकर्त्ता है और तुम कह सकोगे कि "वह अनुग्रह और सचाई से परिपूर्ण है"। हां "हम ने उस की महिमा पिता के एकलौते की सी महिमा देखी"॥

निदान प्रभु ने योहन से चुपके कहा "जिस को मैं रोटी का टुकडा डुबोके देऊंगा वही है"। उस ने डुबाया हुआ टुकड़ा यहूदा को देकर

ऊंचे शब्द से कहा कि "मनुष्य का पुत्र तो जैसा उस के विषय में लिखा है तैसा जाता है परन्तु हाय उस मनुष्य पर जिस से मनुष्य का पुत्र पकड़वाया जाता है यदि उस मनुष्य का जन्म न होता तो उस के लिये भला होता"। प्रभु ने मानो यों कहा कि मुझ पर हाय नहीं है। तुम मेरे लिये मत रोओ और न बिलाप करो। जो मार्ग मेरे बाप ने मेरे लिये ठहराया है उस में मैं आनन्द से चलता हूं। मैं अपार दुःख और संकट सहे हुए महिमा में प्रवेश करूंगा। मृत्यु मेरे पास नहीं आती है परन्तु मैं उस के पास जाता हूं जिस्तें मैं अपने बाप की इच्छा पूरी करूं। परन्तु उसी पर हाय जो मुझ मनुष्य के पुत्र को पकड़वाता है। इस बचन के द्वारा प्रभु यीशू ने बडी स्पष्टता से बताया है कि जो लोग यहूदा के तुल्य प्रभु का प्रेममय शब्द सुनके अपने पापों से न पछतावें न उस की ओर फिरके उस पर विश्वास करें बल्कि कठोर बनते जाते हैं उन की अत्यन्त बुरी दशा होगी। हां उन की दशा इतनी बुरी होगी कि यदि उन का जन्म न होता तो अच्छा होता। उन का इस लोक में जीना वृथा होगा। हां जो लोग यीशू मसीह पर सच्चा बिश्वास करने से उस के चेले न हुए वे परमसुख को कभी प्राप्त नहीं करेंगे। और जो लोग यहूदा के समान उस के चेले बनके पतित हुए और अन्त लों बिश्वास की अच्छी लड़ाई लड़ते न रहे हों उन के लिये केवल सनातन दुःख और बिलाप बाकी है॥

यहूदा शैतान की सेवा करते करते यहां लों ढीठ हो गया था कि उस ने निर्दोषी जन का भेष धर प्रभु से पूछा "क्या मैं वही हूं"। प्रभु ने उस का कपट जान अति उदास होके उस से कहा "जैसा तू ने कहा"। अब से यहूदा पूरी रीति से शैतान का हो गया। उस की इच्छा शैतान की इच्छा के बिलकुल अधीन हुई कि शैतान उस पर पूरा अधिकार रखके उसे अपनी इच्छानुसार चला सका। प्रभु ने यहूदा की ओर से अपना मुंह फेरके उस से कहा "जो तू करता है सो शीघ्र कर"। हे दुरभागी यहूदा अब तुझ को शैतान की इच्छा पूरी करके सनातन दण्ड भुगतना पड़ेगा। टुकडा लेके यहूदा बाहर गया। बाहर रात का अंधेरा था और उस के हृदय और बुद्धि पर अथाहकुण्ड का अन्धकार छा गया और उस के साम्हने सनातन घोर अन्धियारे को छोड कुछ और नहीं था। उस के लिये अनुग्रह का दिन अभेद्य अन्धकार में डूब गया था। अरे अभागे यहूदा यदि तू चाहता तो बच सकता पर तू ने शुभ काल को

खो दिया है। वे लोग क्या ही दुरभागी हैं जो निश्चिन्त होके मुक्ति के दिन को खो देते हैं। वे एक दिन पछतावेंगे। पर तब उन का पछताना वृथा होगा। चाहिये कि कोई अपना मन कठोर न करे बल्कि आज प्रभु यीशू की ओर फिरे कि उस पर दया किई जावे। आमेन॥

पवित्र बियारी।

जब वे खा रहे थे तब यीशू ने रोटी लिई और धन्यवाद करके तोड़ी और शिष्यों को देके कहा लेओ खाओ यह मेरी देह है जो तुम्हारे लिये दिई जाती है मेरे स्मरण के लिये यह किया करो। इसी रीति से उस ने बियारी के पीछे कटोरा भी लेके और धन्यवाद करके शिष्यों को दिया और कहा लेओ तुम सब इस में से पीओ। यह कटोरा मेरे लोहू के द्वारा जो तुम्हारे और बहुतों के लिये पापमोचन के निमित्त बहाया जाता है नया नियम है। जब जब तुम इस में से पीओ तब तब यह मेरे स्मरण के लिये किया करो। मत्ती २६ : २६-२८। मार्क १४ : २२-२४। लूक २२ १९, २०। १ करिन्थियों को ११ : २३-२५॥

जिस रात में प्रभु यीशू मसीह पकड़वाया गया उसी में उस ने पवित्र बियारी को स्थापन किया। जब अन्धकार के अधिकारी मसीह के नाश करने का बन्दोबस्त कर रहे थे तब उस ने अपने को तेजोमय प्रभु प्रगट करके अपने विश्वासी चेलों के लिये उस पवित्र धर्म्मकृत्य को स्थापन किया जिस के मानने से उन का विश्वास दृढ़ किया जावे और वे अपने प्रिय त्राणकर्त्ता की अधिक समीपता प्राप्त करें और सपूर्ण रीति से निश्चय जानें कि हमारे पाप क्षमा किये गये हैं और प्रभु की महिमा हमारे द्वारा प्रगट किई जायगी। प्रभु यीशू ने उसी रात में कहा कि "अब मनुष्य के पुत्र की महिमा प्रगट होती है"। उस ने अपने आज्ञापालन के द्वारा अपनी मनुष्यताई के लिये परमेश्वरत्व की महिमा को प्राप्त किया था। मनुष्य का पुत्र अब "सिद्ध बनके उन सभों के लिये जो उस के आज्ञाकारी होते हैं अनन्त त्राण का कर्त्ता हुआ"। वह अभी दुःख उठाने से महिमा में प्रवेश करने को जाता है जिस्तें परमेश्वर पिता की महिमा पृथिवी के सारे लोगों के बीच प्रगट किई जावे॥

जो कुछ प्रभु यीशू ने कमाके प्राप्त किया उसे उस ने हमारे लिये कमाके प्राप्त किया है क्योंकि वह हमारे लिये मनुष्य बना कि हम उस की महिमा के संगी अधिकारी हो जावें।" अब मनुष्य के पुत्र की महिमा

प्रगट होती है।" प्रभु यीशू इस की बड़ी लालसा करता था कि जिन लोगों से मैं प्रेम रखता हूं उन्हें मैं पापमोचन जीवन और मुक्ति देने पाऊं। उस ने उन से न केवल यह कहा जब कि मैं ने अपने ऊपर तुम्हारे पापों को ले लेके दूर किया है तो यदि तुम मुझ पर विश्वास करो तो तुम्हारे पाप क्षमा किये जायेंगे बल्कि उस ने यह भी कहा कि मैं ने मनुष्य का स्वभाव ज्यों का त्यों करके उसे परमेश्वर की महिमा का भागी कर दिया है। सो तुम जो मुझ पर विश्वास रखते हो परमेश्वर के स्वभाव के भागी और महिमा के सगी अधिकारी होओगे। पर उन से ऐसी प्रतिज्ञा करनी उस की समझ में बस नहीं है बल्कि वह अपने आप को उन्हें देने से उन को अनन्त जीवन देता और अपने से मिलाता है। वह मनुष्य बनके उन का मित्र भाई और जामिन हुआ पर उस ने समझा कि यह बस नहीं है। मैं अपने आप को उन्हें देऊंगा कि वे मेरे जीवन और महिमा के भागी हो जावें। जैसे रोटी और दाखमधु पचौनी में पचके लोहू में मिल जाता है और मनुष्य के शारीरिक जीवन को सम्भालता है तैसे प्रभु यीशू अपने विश्वासियों से मिलने और उन के आत्मिक जीवन को बढ़ाने और सम्भालने चाहता है। और इसी कारण से उस ने पवित्र बियारी को स्थापन किया॥

जब वे निस्तारपर्व्व के मेम्ने को खा रहे थे तब "प्रभु ने रोटी लिई और धन्यवाद करके तोड़ी और शिष्यों को देके कहा लेओ और खाओ यह मेरी देह है जो तुम्हारे लिये दिई जाती है"। प्रभु ने धन्यवाद किया। जैसे इस्राएलवंशी निस्तारपर्व्व के मेम्ने को खाते हुए परमेश्वर के उपकारों को स्मरण करके उस का धन्यवाद करते थे तैसे प्रभु यीशू ने इस लिये परमेश्वर का धन्यवाद किया कि परमेश्वर ने अधम पापी मनुष्यों पर कृपादृष्टि करके उन का पाप से उद्धार कराया था। हे पढ़नेहारे उस ने मुझ पर और तुझ पर सोचके परमेश्वर का धन्यवाद किया क्योंकि अब हम घिनौने और दण्ड के योग्य ठहराये हुए अनर्थकारियों का छुटकारा हो गया। उस ने अपना काम पूरा हुआ आगे से देखा जैसा उस ने उसी रात को अपने पिता से कहा कि "जो काम तू ने मुझे करने को दिया सो मैं ने पूरा किया" हमें धन्यवाद करना चाहिये था पर उस ने दया से परिपूर्ण होके हमारी घटी को भर दिया। उस ने न केवल परमेश्वर का धन्य माना बल्कि रोटी और कटोरे को भी आशीर्वाद दिया। उसने आशीर्वाद देने के द्वारा इन दोनों वस्तुओं को पवित्र कर अपने अनुग्रह

और दया के वसीले ठहराया। उसने इन दृश्य वस्तुओं के ऊपर इसी लिये धन्यवाद किया कि जो मनुष्य पश्चात्तापी और धर्म के भूखे और प्यासे हैं सो उन को खाके पापमोचन पावें और तृप्त हो जावें और आशाहीन लोग आशावान हो जावें। प्रभु के इस आशीर्वाद के अनगिनित उत्तम फल उत्पन्न भये और उत्पन्न होते जाते हैं। जब से उस ने यरूशलेम नगर में यह आशीर्वाद दिया तब से इन उन्नीस सौ बरसों में लाखों करोड़ों मनुष्य प्रभुभोज करके अचिन्त्य आशीषों के भागी हुए हैं। चूर्ण मनवाले चंगे हो गये हैं। थके और श्रमी लोगों को विश्राम मिला है। जो मन की घबराहट के कारण अस्थिर होने और डगमगाने लगे थे सो विश्वास में स्थिर बनके शान्त हुए हैं। जिन को मृत्यु से छाए हुए खड्ड में चलना हुआ उन को प्रभु की वियारी की आशीषों के भागी होके उजियाला सामर्थ्य और शान्ति प्राप्त हुई है। हां वे मृत्यु पर जयवन्त होके आनन्द के साथ यहां से सिधारे हैं॥

धन्यवाद करने के पीछे प्रभु ने रोटी को तोड़ा और कहा "यह मेरी देह है जो पापमोचन के निमित्त तुम्हारे लिये तोड़ी जाती है"। रोटी को तोड़के उस ने माना दृष्टान्त से बताया कि जिस रीति से यह रोटी तोड़ी जाती है उसी रीति से मेरी देह तोड़ी जायगी कि वह प्रायश्चित्तवाला बलि और जीवन की रोटी बन जावे। रोटी तोड़ने से वह वर्णन करता है कि मैं अत्यन्त दु ख उठाके माना टुकड़े टुकड़े कर दिया जाके मरूंगा। उस ने शान्तमन होके अपने दु खों और पीड़ाओं का बखान किया क्योंकि वह शिष्यों से प्रेम रखता और जानता था कि परमेश्वर की इच्छा है कि मैं अपना प्राण संसार की मुक्ति के निमित्त देऊं। उसने आनन्द से तोड़ी हुई रोटी लेके शिष्यों को दिई क्योंकि वह दान करना और प्रेम दिखाना चाहता था। मनुष्यों पर दया करनी उस को भावती थी। जैसा वह उस समय था तैसा वह अब है। वह अपने वचन और साक्रमेंटों में हाजिर होके अपने तईं उन सभों को देता है जो उस के पाने के अभिलाषी हों। हम उस को कुछ नहीं दे सकते हैं। वह केवल हमारा मन जो अनुग्रह और भलाई से रहित है हम से मांगता है जिस्तें वह उसे अपने अनुग्रह के दानों से भरने पावे। हम केवल उस के अनुग्रह के वसीले हैं जिन के द्वारा वह अपने वरदान मनुष्यों को दिया करता है। वह आप देनेवाला ठहरता है। वह दानी होके बड़ी उदारता और अधिकाई से अनुग्रहमय दानों को बांटता है। उस ने अपने तईं

हमारे लिये दु खभरी मृत्यु के वश में दिया सो हम निश्चय जान सकते हैं कि जो कुछ हमारे आत्मिक जीवन के बढ़ाने सम्भालने और उस की रक्षा करने के लिये अवश्य हो उसे वह अधिकाई से देगा ॥

कटोरे के ऊपर धन्यबाद करके उस ने उसे शिष्यों को देकर कहा "तुम सब इस में से पीओ यह मेरा लोहू है"। उस ने पहिले कहा था कि रोटी मेरी देह है। प्रभुभोज में रोटी और दाखमधु देने का अर्थ यह है कि समूचा मसीह दिया जाता है अर्थात् मसीह अपने तईं उन सभों को सम्पूर्ण रीति से देता है जो बिश्वासरूपी हाथ से उसे ग्रहण करें। जैसे उस ने जगत के त्राण के निमित्त अपना प्राण दिया तैसे वह प्रभु-भोज में अपना जीव देता है कि बिश्वासियों का आत्मिक जीवन पाला जावे। हां वह अपने जीव के देने से सब कुछ देता है जो उस ने हमारे लिये प्राप्त किया है। उस का जीव पापमोचन के निमित्त दिया गया और उस के दानों में से पापमोचन बड़ा है। सो जो मनुष्य निश्चय नहीं जानता है कि मेरे पाप क्षमा किये गये हैं वह प्रभुभोज का भागी होके पापमोचन को ग्रहण करे ॥

उस ने पानी नहीं बलिक दाखमधु को अपने लोहू का चिन्ह होने के लिये चुन लिया। इस से उस ने हमें सिखाने चाहा कि मैं मसीह जो हूं सो सच्ची दाखलता हूं। जैसे डालियां केवल दाखलता में लगी हुईं और उस के रस से पाली हुईं जीवती रहती हैं और बढ़के फल फलती हैं तैसे अवश्य है कि तुम जो मेरे चेले हो मुझ में रहो और मेरे जीव की शक्ति से ब्यापे जाओ। जैसी डाली दाखलता से अलग होके सूख जाती है तैसे तुम यदि मुझ में न रहो और मेरे जीव से पाले न जाओ तो मरोगे। फिर दाखमधु का अर्थ वे बड़े दु ख और संकट हैं जिन के द्वारा मसीह मनुष्यों का त्राणकर्त्ता और बिचवैया होने को तैयार किया गया। दाखमधु उस आत्मिक आनन्द और स्वर्गीय सुख का दृष्टान्त भी है जिसे प्रभु यीशू अपने बिश्वासी चेलों को अधिकाई से देता है ॥

प्रभु ने शिष्यों से कहा "यह मेरे स्मरण के लिये किया करो"। जब जब हम प्रभुभोज करते हैं तब तब हमें स्मरण करना चाहिये कि प्रभु यीशू ने अपने बड़े प्रेम के कारण हमारे हित के लिये क्या क्या किया है। वह जो धनी था हमारे लिये अत्यन्त दरिद्र हुआ कि हम उस की दरिद्रता के द्वारा धनी हो जावें हां अविनाशी धन प्राप्त करें और ईश्वर के राज्य के अधिकारी बन जावें। वह अपनी ईश्वरीय महिमा को त्यागके

सेवकों का सेवक बन गया जिस्तें हम ईश्वर के महिमा की अधिकारी हो जावें। वह दिन दिन मनुष्यों को ईश्वर का ज्ञान सिखाता और उन पर ईश्वर की इच्छा प्रगट करता रहा कि उन की अज्ञानता मिट जावे और वे एक ही सत्य ईश्वर को जानना सीखें। पर जब जब हम प्रभु-भोज करते हैं तब तब विशेष करके इस बात को स्मरण रखना हमें चाहिये कि प्रभु यीशू ने अपने दु खभोग और मरण के द्वारा शैतान के कामों को लोप कर पापों के लिये प्रायश्चित्त किया और सनातन धर्म को प्रगट किया है। एक एक जन को स्मरण रखना चाहिये कि प्रभु यीशू ने मेरे पापों को अपने ऊपर ले लेके दूर किया कि मैं उन से छुटकारा पाऊं और परमेश्वर का ग्रहणयोग्य उपासक और सतान बन जाऊं और सत्य प्रेम में और निर्दोपता से अपना जीवन बिताऊं। हमें स्मरण रखना चाहिये कि प्रभु यीशू जो पाप से अनजान था सो हमारे लिये पापबलि बन गया कि हम उस के द्वारा ईश्वर के धर्म बनें। जब जब विश्वासी लोग योग्य रीति से प्रभुभोज करते हैं तब तब वे प्रभु की मृत्यु को प्रचारा करते हैं। वे बताया करते हैं कि प्रभु यीशू की मृत्यु के द्वारा अपराध का होना बन्द हुआ औ पापों का अन्त और अधर्म का प्रायश्चित्त किया गया और युगानयुग की धार्मिकता प्रगट हुई है॥

पुराने धर्मनियम का निस्तारपर्व्व केवल मिस्र देश के दासत्व से छुड़ाये हुए इस्राएलवंशियों के लिये स्थापित हुआ था और परमेश्वर ने मूसा के द्वारा लोगों को यह आज्ञा सुनवाई थी कि "कोई खतनारहित पुरुष उस के" (अर्थात् निस्तारपर्व के) "बलि में से न खाने पावे"। प्रभु की बियारी भी केवल पाप के दासत्व से छुडाये हुए मसीह के सच्चे चेलों के लिये स्थापित हुई है। जो लोग मन के खतनारहित हैं अर्थात् जो लोग नये सिरे से उत्पन्न न हुए और मसीही जीवन की नई चाल न चलते हैं उन के लिये प्रभु की बियारी नही है। यदि वे उस के भागी होवें ता दण्ड के सिवाय उन को कुछ और न मिलेगा। आमेन॥

तुम सब इसी रात मेरे कारण ठोकर खाओगे॥

यीशु ने शिष्यों से कहा हे बच्चो मैं थोड़ी बेर और तुम्हारे संग हूं। तुम मुझे ढूंढोगे और जैसा मैंने यहूदियों से कहा कि जहां मैं जाता हूं वहां तुम नहीं आ सकते वैसा मैं अब तुम से भी कहता हूं। मैं तुम्हें

एक नई आज्ञा देता हूं कि तुम एक दूसरे को प्यार करो कि जैसा मैं ने तुम्हें प्यार किया है तुम भी एक दूसरे को प्यार करो। यदि तुम एक दूसरे को प्यार करो तो इस से सब जानेंगे कि तुम मेरे शिष्य हो॥

शिमोन पितर ने उस से कहा हे प्रभु तू कहां जाता है। यीशू ने उत्तर दिया जहां मैं जाता हूं वहां तू अब मेरे पीछे नही आ सकता पर इस के पश्चात तू मेरे पीछे आवेगा। पितर ने उस से कहा हे प्रभु मैं तेरे पीछे अब क्यों नही आ सकता। मैं तेरे लिये अपना प्राण देऊंगा। यीशू ने उत्तर दिया क्या तू मेरे लिये अपना प्राण देगा। हे शिमोन हे शिमोन देख शैतान ने तुम्हें मांगा है कि गेहूं की नाईं तुम को फटके परन्तु मैं ने तेरे लिये प्रार्थना किई है कि तेरा विश्वास जाता न रहे और जब तू आप फिरा तो अपने भाइयों को स्थिर कर। (और उस ने सभों से कहा) तुम सब इसी रात मेरे कारण ठोकर खाओगे क्योंकि लिखा है कि मैं गड़ेरिये को मारूंगा और झुण्ड की भेड़ें तितर बितर हो जायेंगी। पर मैं अपने जी उठने के पीछे तुम्हारे आगे गालील को जाऊंगा। पितर ने उत्तर देके उस से कहा यदि सब तेरे कारण ठोकर खावें तौभी मैं कभी ठोकर न खाऊंगा। यीशू ने उस से कहा मैं तुझ से सच कहता हूं कि इसी रात कुक्कुट के बोलने के पहिले तू तीन बार मुझ को मुकरेगा। पितर ने उस से कहा यदि तेरे संग मुझे मरना भी हो तौभी मैं तुझ को न मुकरूंगा। और सब शिष्यों ने वैसा ही कहा॥

उस ने उन से कहा जब मैं ने तुम्हें बिन थैली और बिन झोली और बिना जूते भेजा तब क्या तुम को किसी वस्तु की घटी हुई। वे बोले किसी की नहीं। उस ने उन से कहा परन्तु अब जिस के पास थैली हो सो उसे ले ले और वैसे ही झोली भी और जिस के पास न होवे सो अपना वस्त्र बेचके खड्ग मोल लेवे। क्योंकि मैं तुम से कहता हूं अवश्य है कि जो लिखा है कि वह अपराधियों के संग गिना गया सो मुझ पर पूरा होवे क्योंकि जो बातें मेरे विषय में हैं सो पूरी होंगी। वे बोले हे प्रभु देख यहां दो खड्ग हैं। उस ने उन से कहा बहुत है। योहन १३. ३३-३८। मत्ती २६ ३०-३५। मार्क १४ : २६-३१। लूक २२ ३१-३६॥

निस्तारपर्व्व का भोजन खा और प्रथा के अनुसार भजन गा गाकर वे बाहर गये। जो जो भजन इस भोजन की समाप्ति पर गाये जाते थे सो स्तोत्र ११३-११८ तक थे। शिष्यों ने प्रभु के कटोरे में से पीके अब धर्मपुस्तक के वचन से सुना कि उन का गुरु उद्धाररूपी कटोरा उठाके

यहोवा से उन के लिये और और लोगों के लिये प्रार्थना करने पर था। जो उद्धाररूपी कटोरा प्रभु यीशु उठाने पर था सो दु:ख और कष्टरूपी दाखमधु से भरा हुआ था तौभी वह मन ही मन उस के पीने की लालसा करता था क्योंकि वह जानता था कि यदि मैं इस दु:खरूपी कटोरे से पीके उसे खाली न करूं तो किसी मनुष्य का पाप से उद्धार नही हो सकेगा। इस कटोरे से पीने के पहिले उस ने उस मनोहर और शान्तिमय उपदेश को जो योहन के १४-१६वें पर्ब्बों में लिखा है सुनाया। इस उपदेश को सुनाके उस ने अपने स्वर्गीय पिता की ओर मन लगाके अपने शिष्यों के लिये और उन सभों के लिये जो शिष्यों के बचन के द्वारा उस पर विश्वास करें प्रार्थना किई। जब प्रार्थना कर चुका और वे मच पर से उठने लगे तब उस ने शिष्यों से कहा "हे बच्चो मैं थोड़ी बेर और तुम्हारे संग हूं"। उस ने पहिले उन को शान्ति देके उन से कहा था कि मैं अपने बचन और सक्रामेंटों के द्वारा अदृश्य होके तुम्हारे सग रहूंगा परन्तु वह भली भांति जानता था कि वे विश्वास में निर्बल होके मेरे उन से विदा होने के कारण व्याकुल और निराश हो जावेंगे इस लिये उस ने आगे से उन को जता जताके उन से कहा कि मैं अब थोड़ी बेर तक तुम्हारे संग रहूंगा। तुम तो अब मेरे संग नहीं चल सकोगे। मैं जाके लौटूंगा और तभी तुम मेरे पीछे आके सनातन और सुखमय निवासों में प्रवेश करने पाओगे। उसने दो बेर अविश्वासी यहूदियों से कहा था कि "जहां मैं जाता हूं वहां तुम नहीं आ सकते"। मसीह के बैरी अपने पापों में मरेंगे और इस लिये वे उस महिमा को देखने न पावेंगे जिस में मसीह ने दु:ख उठाके प्रवेश किया। शिष्य लोग प्रभु यीशु से प्रेम रखते पर यह नही समझते थे कि वह दुःख उठावे इस लिये वे उस के क्रूश के कारण ठोकर खाके उस मार्ग को अब नहीं पा सके जिस में मसीह ने चलकर महिमा में प्रवेश किया। तौभी उन्हों ने प्रेमवश होके मसीह के दु:खभरे मार्ग को ढूंढते २ पाया। हां यद्यपि वे अपनी शारीरिक आंखों से मसीह को नही देख सकते तौभी वे निश्चय जानते और दिन दिन मालूम करते थे कि महिमा में प्रविष्ट हुआ जगत्राता हमारे सग २ रहता है। वे उस के सच्चे शिष्य होके एक दूसरे से प्रम रखते थे जैसा उस ने उन को आज्ञा दिई थी तैसा आपस में के प्रेम की नई आज्ञा के पूरे होने से प्रगट होता था कि प्रभु यीशु अदृश्य होके उन के संग संग रहता था। योहन प्रेरित ने लिखा है कि "जो हम एक दूसरे से प्यार करें तो

ईश्वर हम में रहता है"। मसीह की नई आज्ञा नई वाचा से मिली हुई है और जहां मसीही लोग दिल ओ जान से इस आज्ञा को पालते हैं वहां मसीह उन के बीच में रहता है। पर जिधर मसीहियों में अनमेल होता है उधर मसीह नहीं रह सकता है क्योंकि जो लोग अपने भाईबन्धुओं से अनमेल और वैर रखते वे अन्धकार में हैं और प्रेमस्वरूप और ज्योतिस्वरूप जगत्राता अर्थात् मसीह के सच्चे चेले नहीं हैं॥

पुरानी धर्मवाचा की आज्ञा यह थी कि हर एक मनुष्य अपने भाई-बन्धु से अपने समान प्रेम रखे। यह आज्ञा नई धर्मवाचा में कुछ बदल गई क्योंकि मसीह ने शिष्यों से यों कहा कि "जैसे मैं ने तुम से प्रेम रखा है तैसे तुम एक दूसरे से प्रेम रखो"। प्रभु यीशू को छोड़के किसी ने अपने समान अपने भाईबन्धु से प्रेम नहीं रखा है। हर एक मसीही पर फर्ज है कि वह मसीह के तुल्य होने का यत्न करे। जब तक वह मसीह के समान अपने सारे मन और शक्ति के साथ अपने भाईबन्धुओं से प्रेम न रखता हो तब तक वह प्रेम की चेष्टा करता जावे। जो लोग तन मन से एक दूसरे से प्रेम रखते हैं वे परमेश्वर की व्यवस्था को पूरा करते हैं। भ्रात्रीय प्रेम की आज्ञा इस लिये नई कहावती है कि वह उन के लिये साक्षी है और उन का चिन्ह है जो इस आज्ञा के पूरे करने में प्रसन्न होते हैं। जिन लोगों से मसीह प्रेम रखता है उन से प्रीति रखनी मसीह के चेलों को भावती है॥

पितर प्रभु के इस वचन को सुनके कि तुम मेरे साथ नहीं जा सकते हो सोचने लगा कि मैं तो तेरे साथ जा सकता हूं क्योंकि मैं अपने प्रिय प्रभु के लिये अपना प्राण देने को तैयार हूं। उस ने पूछा कि हे प्रभु तू कहां जाता है कि मैं तेरे संग न चल सकूं"। पितर अपनी निर्बलता से अनजान था। अब तक वह मसीहरूपी चटान पर परमेश्वर के अनुग्रह से सम्पूर्ण स्थिर नहीं किया गया था। सो यीशू ने उस से कहा हे शिमोन क्यों तू मेरे लिये अपना प्राण देगा। यह नहीं हो सकता परन्तु मैं ही तेरे लिये अपना प्राण देऊंगा। न तू और न तेरे संगी शिष्य मेरे कारण दुःख उठाने और मर जाने को तैयार हैं। उन को दीन करने और उन्हें बचाने के लिये उस ने उन को बताया कि वे थोड़ी देर के पीछे परीक्षा में पड़के उसका त्याग करें। यदि वह हाथ बढ़ाके उन्हें न बचाता तो वे निस्सन्देह नष्ट होते क्योंकि शैतान यहूदा का सत्यानाश कराके सन्तुष्ट नहीं हुआ बल्कि उस ने उन सभों को मांगा था जिस्तें वह अपनी इच्छानु-

सार उन्हें भ्रष्ट करे। शैतान ने चाहा कि मैं उन्हें गेहूं के समान फटकूंगा इस मतलब से नही कि जैसे गेहूं के फटकने से भूसा दाने से अलग हो जाता है बल्कि उस ने इस मतलब से उन्हें फटकने चाहा कि वे सब मसीह से अलग होके उस के अधीन हो जावें। यदि प्रभु यीशू उन को न संभालता तो वे नष्ट होते। पितर अपने पुण्यरूपी भूसे पर भरोसा रखता हुआ सोचता था कि मैं न गिरने का। सो यदि प्रभु यीशू पितर के इनकार करने के पीछे उस पर दयादृष्टि न करता और उस के चेताने का उपाय न करता तो उस का अन्त यहूदा का सा होता। प्रभु यीशू ने पितर और इस के संगी शिष्यों के लिये बिनती किई थी कि उन का बिश्वास जाता न रहे। उस ने उन के लिये यों बिनती किई थी कि "हे पिता मैं यह प्रार्थना नही करता हूं कि उन्हें जगत में से ले जा परन्तु यह कि तू उन्हें उस दुष्ट से बचा रखा"। इस प्रार्थना के हेतु उन की रक्षा हुई। फटकते समय पुण्यरूपी भूसा जिस पर शिष्य लोग भरोसा रखते थे उड़ाया गया और अनुग्रहरूपी और दीनताईरूपी सुन्दर दाने उन के चूर्ण मनों में बोये गये। कभी कभी परमेश्वर की आज्ञा से मसीह का मण्डलीरूपी अन्न झरने में झाड़ा तो जाता है पर उस में का एक भी पुष्ट दाना तो भूमि पर गिरने नहीं पाता है (आमोस ६ : ६) क्योंकि प्रभु अपने लोगों की रक्षा करनी जानता है॥

फिर प्रभु ने पितर से कहा "जब तू आप फिरा तो अपने भाइयों को स्थिर करना"। पितर प्रभु की इस आज्ञा को न भूला। उस ने मसीहियों को यह उपदेश दिया कि "सचेत रहो जागते रहो और बिश्वास में दृढ़ होके शैतान का साम्हना करो"। वह स्मरण रखता था कि हम अपने निज सामर्थ्य से शैतान का साम्हना कर नही सकते हैं इस लिये उस ने मसीहियों को लिखकर कहा कि "अनुग्रह का ईश्वर आप ही तुम्हें सुधारे और स्थिर करे और बल देवे और नेव पर दृढ़ करे"। हे पढ़नेहारो हम और तुम यह बात कभी न भूलें कि यदि प्रभु यीशू हमें संभाले न होता तो हम कई वार पाप करके अथाहकुण्ड में गिर पड़ते। केवल ईश्वर के सामर्थ्य से बिश्वास मसीह की ओर फिरना ईश्वर के अनुग्रह का काम है बल्कि बिश्वास में उस की रक्षा होनी भी ईश्वर के अनुग्रह के कारण से होती है। मसीह ने अपने लोहू के द्वारा हम को मोल लेके बचाया है और उस के लोहू अर्थात् उस के जीव के हेतु से आण के द्वारा हमारी रक्षा हो सकती है। जब कि हाल यह है तो अपनी

बड़ाई करनी हम को नहीं चाहिये। मसीहरूपी मेम्ना जो सिंहासन पर विराजता है केवल वही बड़ाई और आदर के योग्य है। उसी की विश्वस्तता और बड़े प्रेम के कारण हम पाप से बचके स्वर्गलोक में प्रवेश करने पावेंगे। परमेश्वर के लोग क्लेशरूपी झरने में इस कारण से झाड़े जाते हैं कि जैसे भूसा गेहूं के फटकने से उडाया जाता है तैसे उन की छिपी हुई पवित्रमन्यता और अभिमान दूर किया जावे। वे लोग क्याही धन्य हैं जो परीक्षा में पड़के स्थिर रहते हैं क्योंकि जिस दिन प्रभु अपना गेहूं भूसे से अलग करेगा उसी दिन वे सनातन और सुख के निवासों में प्रवेश करने पावेंगे॥

फिर प्रभु ने शिष्यों से कहा "तुम सब इसी रात मेरे कारण ठोकर खाओगे क्योंकि लिखा है कि मैं गड़ेरिये को मारूंगा और झुण्ड की भेड़ें तितर बितर हो जाएंगी। केवल एक शिष्य ने मसीह को छल से पकड़वाया पर सब दूसरे शिष्यों ने उस के कारण ठोकर खाई। उन के ठोकर खाने का कारण यह था कि वे विश्वास में सामर्थी नहीं थे। वे क्लेश और दु ख को आते देखकर घबराने और डरने लगे। अब तक वे अपने गुरु के संग संग चलते २ उस के सामर्थ्य के कर्मों को देख रहे थे। वे समझने लगे थे कि हमारा गुरु जो कुछ चाहे उसे कर सकता है। वह अपने वचनमात्र से सब वैरियों को दूर करेगा। वे सोचते थे कि दु'ख उठाना और निरादर पाना हमारे गुरु के योग्य नहीं है इस लिये जब वह निर्बल मनुष्य के तुल्य पकड़ा गया तब वे उस के कारण ठोकर खाने लगे। जब उन्हों ने देखा कि लोग कुकर्मी के समान उस से व्यवहार करने लगे तब यह सोच उन के मन में उत्पन्न हुआ कि यदि वह परमेश्वर का पुत्र होता तो लोग उस से ऐसा व्यवहार न कर सकते। प्रभु ने उन के शंकाओं को दूर करने को बताया कि धर्मपुस्तक के अनुसार अवश्य है कि जगत्राता निन्दित और दुःखित होके मनुष्यों का उद्धार करेगा। परमेश्वर ने जकर्याह नबी के द्वारा यों कहा था कि "मुझ सेनाओं के यहोवा की यह वाणी है कि हे तलवार उभरके मेरे ठहराये हुए चरवाहे के विरुद्ध अर्थात् जो पुरुष मेरा सजाति है उस के विरुद्ध चल तू चरवाहे को काट और भेड़बकरियां तो छिन्न भिन्न हो जावेंगी पर बच्चों पर मैं अपने हाथ की छाया रखूंगा"। (जकर्याह १३ . ७)। चरवाहा वही है जिस का वर्णन जकर्याह के ११वें पर्व्व में किया जाता है। यह चरवाहा परमेश्वर का सजाति है अर्थात् वह परमेश्वरताई का भागी होके सब बातों-

में परमेश्वर के बराबर है। वह परमेश्वर का एकलौता और प्रिय पुत्र है परमेश्वर ने उस को न रख छोड़ा बलिक दुःख उठाने और मर जाने के लिये उसे मनुष्यावतार लेने को जगत में भेजा कि मनुष्य उस के द्वारा पाप की विपत्ति से बच जावें। जब चरवाहा मर गया तब भेड़बकरियां तितर बितर हो गईं अर्थात् तब इस्राएलवंशी जिन की चरवाही करने को वह आया था तितर बितर हो गये। तौभी परमेश्वर सदा क्रोध करते हुए दण्ड देता न रहेगा। वह कृपानिधान है इस लिये उस ने बच्चों पर अपने हाथ की छाया रखी अर्थात् उस ने उन लोगों पर दयादृष्टि किई जो अपनी कुदशा से जानकार होके सच्चे धर्म के भूखे और प्यासे हैं। ये लोग मसीहरूपी चरवाहे की मृत्यु के सुन्दर फलों के भागी होकर मुक्ति पावेंगे। शिष्य लोग मसीह में दुबधा करके तितर बितर हो गये पर उन को जल्दी मालूम हुआ कि प्रभु ने हमको नहीं छोड दिया है क्योंकि उस ने अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार अपने जी उठने के पीछे उन को एकट्ठा कर शान्ति दिई। प्रभु कितना बडा दयालु है।-उस का कोध पल भर का है पर उस की दया सनातन लों रहती है। वह अपने चेलों को शोकित करके तुरन्त शान्ति देता है। वह उन को श्रमित होने देता पर झट उन के जी में नया जी ले आता है। वह उन को नया बल देता है कि वे सच्चाई के मार्ग में दौड़ते दौड़ते श्रमित न होवें॥

पितर ने प्रभु की बात सुनके कहा "हे प्रभु यदि सब तेरे कारण ठोकर खावें तौभी मैं कभी ठोकर न खाऊंगा"। वह जानता था कि मैं पितर जो हूं सो प्रभु से दिल ओ जान से प्रेम रखता हूं। उस ने एक दिन मान लिया था कि प्रभु यीशू को छोड़के जगत भर में कोई नहीं है जिस की शरण मैं ले सकूं तो यह कैसे संभव है कि मैं उस की ओर पीठ फेरूं। पर जैसा चाहिये तैसा वह अपने चंचल मन से जानकार नहीं था। प्रभु पितर को भली भांति जानता था और उस ने अपने प्रेम के कारण उस से दया का व्यवहार कर एक उपाय किया जिस से वह चिताया जाके अपनी भूल से पछतावे। कुक्कुट उस के लिये पश्चात्ताप का उपदेशक ठहरा॥

फिर प्रभु ने शिष्यों से कहा "अवश्य है कि जो लिखा है कि वह अपराधियों के संग गिना गया सो मुझ पर पूरा होवे"। जो नबी ने आगे से कहा था सो अब मसीह पर पूरा हुआ। नबियों ने न केवल कहा था कि मसीह दुःख उठावेगा बलिक उन्होंने यह भी बताया था कि वह

दुःख भोगकर महिमा पावेगा । उस का दुःख भोगना और मर जाना सुसमाचार का सार है। हां यह धर्मपुस्तक की बड़ी बात है क्योंकि मसीह की प्रायश्चित्तवाली मृत्यु पर मनुष्यों की मुक्ति निर्भर है। जैसी आंख देह को ज्योति देने में काम आती है तैसे मसीह का क्रूश धर्मपुस्तक का अर्थ प्रगट करने में काम आता है मसीह का क्रूश मानो वह चमकनेहारा तारा है जो संसार के आत्मिक और पापरूपी घोर अंधकार को दूर करता और बताता है कि जो कुछ परमेश्वर ने आगे से ठहराया था सो पूरा हुआ अर्थात् मसीह के दुःख उठाने और मर जाने से पापों के लिये प्रायश्चित्त किया गया है कि जो कोई चाहे सो आवे और अपने पापों की क्षमा सनातन और निष्कलंक धर्म और अनन्त जीवन को सेंतमेंत ले लेवे । आमेन ॥

गत्समनी नाम बारी में मसीह का दुःख भोगना ॥

तब यीशु उन के संग एक स्थान में जिस का नाम गत्समनी था आया और अपने शिष्यों से कहा जब लों मैं वहां जाके प्रार्थना करूं तुम यहां बैठो। और वह पितर को और जबदी के दोनों पुत्रों को अपने साथ ले आया और शोक करने और व्याकुल होने लगा। तब उस ने उन से कहा मेरा जीव अत्यन्त शोकित है यहां लों कि मैं मरने पर हूं तुम यहां ठहरो और मेरे संग जागते रहो। और थोडा आगे बढ़के वह मुंह के बल गिरा और यह कहके प्रार्थना किई हे मेरे पिता यदि हो सके तो यह कटोरा मुझ से टल जावे तौभी जो मैं चाहता हूं सो नहीं पर जो तू चाहता है। और वह अपने शिष्यों के पास आया और उन्हें सोते पाया और पितर से कहा क्या तुम मेरे साथ एक घड़ी न जाग सके। जागते रहो और प्रार्थना करो कि तुम परीक्षा में न पड़ो आत्मा तो तैयार है पर शरीर दुर्बल है। फिर उस ने दूसरी बार जाके और यह कहके प्रार्थना किई हे मेरे पिता यदि मेरे पीने बिना यह नहीं टल सकता है तो तेरी इच्छा पूरी होय। और उस ने आके फिर उन्हें सोते पाया क्योंकि उन की आंखें भारी थीं। और वह उन्हें फिर छोड़के चला गया और वही बात फिर कहके तीसरी बार प्रार्थना किई। तब शिष्यों के पास आके उन से कहा अब सोते रहो और बिश्राम करो देखो घडी आ पहुंची है और मनुष्य का पुत्र पापियों के हाथ में पकड़वाया जाता है। उठो चलो जो मुझे पकड़वाता है सो निकट आया है। मत्ती २६ : ३६–४६ और

मार्क १४ : ३२-४२ और लूक २२ : ३९-४२ और योहन १८ : १, २ को भी देखो ॥

प्रभु यीशू ने अपने शिष्यों को संग गत्समनी नाम स्थान को पहुंचकर वहां को बारी में प्रवेश कर और थोड़ी दूर आगे बढ़के तीन शिष्यों से कहा "यहां ठहरो और जागते रहो"। इस बारी में प्रभु यीशू को जो महासंकट और मानसिक महादुःख हुए उन पर हम अब ध्यान करें। हां हम इन बातों को विचारें कि प्रभु का जीव क्यों अत्यन्त शोकित भया वह क्यों भयमान हुआ और क्यों उस का संकट और दुःख इतना बड़ा था कि उस का शरीर थरथराने और कांपने लगा। उस का संकट क्यों यहां लों बढ़ गया कि उस का पसीना ऐसा हुआ जैसे लोहू के थक्के जो भूमि पर गिरें। हां उस ने क्यो दृढ़ता से यह प्रार्थना किई कि "हे पिता यदि तू चाहे तो इस कटोरे को मेरे पास से टाल दे"। जब हम इन भारी बातों को बिचारें तो अति अवश्य है कि हम जागते रहें और अपना २ सारा मन लगाये रहें और कृपानिधान से यह बिनती करें कि दया करके मसीह के दुःखों और पीड़ाओं का सच्चा ज्ञान हमें देकर प्रकाशित कर कि हम समझें और जानें कि वह हमारे अधर्म के कर्मों के कारण दुःखित और क्लेशित भया जिस्तें हम पाप से छुटकारा पाके सुखी हो जावें। उस का प्रेम हमारी ओर इतना बड़ा था कि उस ने हमारे हित के लिये अपने को अत्यन्त दीन कर दिया। हां वह हमारे कारण यहां लों घिनित हुआ कि उस ने पुकारा कि "मैं तो कीड़ा हूं मनुष्य नहीं"। उस का प्रेम अकथनीय था। हम उसे न बूझ सकते पर हम उस के प्रेम को ग्रहण कर सकते और उस के कारण जी सकते हैं। यदि वह अपार और अथाह प्यार दिखा दिखाके हम से प्रेम न रखता तो हमारा पाप से उद्धार होना असंभव होता। सो हे भाइयो आओ हम अपने प्रिय और परमधन्य त्राणकर्त्ता के आगे औंधे मुंह गिरके उस की उपासना और उस का धन्यवाद करें कि उस ने अपने महासंकट और अत्यन्त बड़े दुःख और क्लेश से भरी हुई मृत्यु के द्वारा शैतान के कामों को लोप करके हमारा उद्धार किया है"। उस ने जिन दुःखों को भोगा उन से आज्ञा माननी सीखी "अर्थात् उस ने दुःख के समय अपनी इच्छा को परमेश्वर की इच्छा के सपूर्ण रीति से अधीन किया ऐसा कि वह परमेश्वर से कह सका कि "जो मैं चाहता हूं सो नहीं पर जो तू चाहता है" सो होवे। वह दुःखो के द्वारा मनुष्यों का उद्धारक और

सहायक भया जैसा लिखा है कि "वह सिद्ध बनके उन सभों के लिये जो उस के आज्ञाकारी होते हैं अनन्त त्राण का कर्त्ता हुआ" ॥

प्रभु यीशू महायाजकीय प्रार्थना कर चुका था। प्रार्थना करते समय उस की दृष्टि उस महिमा पर लगी थी जो जगत के होने के आगे उसे पिता के संग थी। वह अपने स्वर्गीय बाप से बातें करते हुए अपने अगले सुख का अनुभव करता रहा। वह निश्चय जानता था कि परमेश्वर की इच्छा मेरे द्वारा पूरी होवेगी ऐसा कि जो लोग मेरे द्वारा परमेश्वर के पास आवें उन का त्राण मैं अत्यन्त लों करूंगा। वह मानो परमेश्वर के सामर्थ्यरूपी वस्त्र पहिन और हियाव बांध बांधके अंधकार के अधिकारों से लड़ने और उन्हें जीतने को चला गया। उस को मालूम था कि जिन जिन भयानक दुःखों और निन्दाओं के बखान धर्मपुस्तक में मसीह के विषय लिखे हुए हैं उन्हें मैं सहने को जाता हूं। शिष्य लोग नहीं जानते थे कि इसी रात हमारा गुरु महासंकट और दुःख में पड़ेगा। वे उस की मनोहर प्रार्थना सुनके शान्तमन भये। वे बिना दुबधा किये उस के संग किद्रोन नाले के पार गये। श्रीमान राजा दाऊद बड़े संकट में पड़े हुए अपने अनुचरों के संग उस नाले के पार गया था। जैतून पहाड़ के नीचे गत्समनी नाम गांव था और उस के निकट एक सुन्दर बारी थी जिस में प्रभु यीशू अपने शिष्यों के संग विश्राम करने को आया करता था। पर इसी रात यह बारी विश्राम स्थान नहीं बलिक रणभूमि ठहरी। प्रभु ने बारी में संसार का पापरूपी भार लिये हुए और शैतान की दुष्ट सेना से घेरे हुए प्रवेश किया कि वह शैतानरूपी पुराने सांप से लड़के उस का सिर कुचल डाले। शैतान के सिर के कुचल डालने में उस को इतना श्रम और संकट हुआ कि उस की सारी व्यक्ति थरथराने लगी और वह अत्यन्त शोकित और व्याकुल हुआ। शैतान ने यह देखके सोचा होगा कि मैं जीतूंगा और संसार के लोग मेरे हाथ से न छूटने पावेंगे। पर प्रभु यीशू परमेश्वर पर अटल भरोसा रखता था और पूरी रीति से उस की इच्छा के अधीन बना रहा और इसी लिये वह विजयी ठहरा और साहस से अपने पकड़नेवालों से मिलने गया ॥

प्रभु ने आठ शिष्यों को बारी के फाटक के निकट छोड़ा और तीन शिष्यों को संग लेके और थोड़ी दूर चलकर ठहरा और इन तीनों से कहा "तुम यहीं ठहरो और जागते रहो"। यह कहके वह और थोड़ी दूर आगे बढ़के "शोक करने और व्याकुल होने लगा"। उस के थर-

थराने और भय खाने से विदित होता था कि उस का पवित्र जीव महासंकट में डूब गया है। उस को ऐसा सूझ पडा जैसा कि ' मैं जल की नाईं बहाया गया और मेरी सब हड्डियों के जोड़ उखड गये "। मृत्यु का भय उस की चारों ओर छा गया। हां उस को ऐसा अकथनीय महासकट और दु ख था जैसा उन लोगों को होगा जो पिछले दिन दण्ड के योग्य ठहराये जायेंगे। उस का जीव चारों ओर भय से घेरा हुआ था इस लिये उस ने पुकारा कि " मेरा जीव अत्यन्त शोकित है यहां लों कि मैं मरने पर हूं "। उस ने चाहा कि जिन शिष्यों ने विशेष करके मेरी महिमा देखी थी और मेरा प्रेम दूसरों की अपेक्षा अधिक अपनाया हो वे मेरे संग इस भयानक रात में जागें। वे उस की प्रार्थना में शरीक नहीं हो सके क्योंकि मसीह अकेला होके संसार का बडा भार अपने कंधों पर उठावे। कोई उस का सहायक न हो सका। परमेश्वर ने जो पाप-रूपी भार उस पर लादा था सो इतना भारी बोझ था कि वह उस के नीचे दबते दबते चकनाचूर होने पर था। केवल वही यह बोझ उठाके दूर कर सका। दु.ख और क्लेश के सहने में प्रभु यीशू के बहुतसे अनु-गामी तो हैं पर उस की बराबरी करनी किसी से नहीं बनती है॥

धर्मपुस्तक में लिखा है कि "धर्मी को मृत्यु के समय भी शरण मिलती है"। और "धर्मी लोग जवान सिंहों के समान निडर रहते हैं"। यह वचन बहुत बार सत्र ठहरा है क्योंकि धर्मी मनुष्यों की भीड की भीड़ ने हियाव बांध बांधके बड़े आनन्द के साथ मसीह के कारण महासंकट और दुःख सहते हुए अपना अपना प्राण दिया है। उन के आनन्द और धीर का कारण यह था कि प्रभु यीशू अपने वचन के अनुसार उन के सग २ होता हुआ उन्हें संभालता रहा। उन को मालूम हुआ करता था कि जो कोई प्रभु यीशू की शरण लेवे सो कभी लज्जित न होगा और न धोखा खावेगा॥

पर गत्समनी बारी में हम परमेश्वर के धर्मी सेवक को जो पाप से अनजान था व्याकुल और शोकित होते देखते हैं। वह अपने स्वर्गीय पिता के साम्हने मृत्यु के भय के मारे पीड़ित होके कीडे के समान धूल में पैंठता है। यह वह वड़ा भेद है जो भक्ति का भेद कहावता है अर्थात् यह कि परमेश्वर का पुत्र मनुष्य देह धारण करे और अकथनीय दुःख सहने और भयानक मृत्यु के द्वारा मनुष्यों को परमेश्वर से मिलावे। देखो ईश्वर का निर्दोष मनुष्यरूपी मेम्ना जो जगत के पाप को उठा ले

जाता है। धर्मी जन की मृत्यु ने मसीह को नहीं डराया वल्कि वह पापी की मृत्यु का साम्हना करके शोकित भया। परमेश्वर ने कहा था कि "पाप की मजूरी मृत्यु है" इस लिये चाहिये था कि परमेश्वर अपना धर्म अर्थात् न्याय प्रगट करे कि विदित होवे कि पाप का यथार्थ दण्ड क्या है अर्थात् हर पापी कैसे २ दण्ड के योग्य है और जो लोग परमेश्वर के ठहराये हुए उपाय को तुच्छ जानके उस के द्वारा मुक्ति नहीं प्राप्त करें उन को क्या दण्ड मिलेगा। मनुष्यों ने पाप किया था इस लिये अवश्य था कि एक मनुष्य जो निष्पाप और सामर्थी हो ईश्वर और मनुष्य भी था पापों के दूर करने का साधन करे। जब कि मसीह पूर्ण पवित्र और निर्दोष था तो वह पाप से घिन करता था। पापरूपी घिनौने बोझ के उठाने से उस का शुद्ध मन ठिठक गया। यह उस के शोक और व्याकुलता का कारण था। पाप उस की दृष्टि में अति बुरा था क्योंकि वह मनुष्य को परमेश्वर से अलगाता है। पाप मसीह से कभी नहीं हुआ। उस के मन में कभी कोई बुरी अभिलाषा वा चिन्ता प्रविष्ट नहीं हुई तौभी वह पाप के शरीर की समानता में होके पापवलि बनाया गया जैसा लिखा है कि "जो पाप से अनजान था उस ने उसे हमारे लिये पाप अर्थात् पापवलि बनाया कि उस में हम ईश्वर के धर्म बनें" अर्थात् कि हम ऐसा धर्म प्राप्त करें जिस से परमेश्वर प्रसन्न होता है। मसीह परमधन्य था पर पापों का बोझ अपने ऊपर उठाके वह स्रापित बना जिस्तें वह हमें स्राप से छुडावे। उस ने मनुष्यों का धर्मी जामिन होके अधर्मियों के लिये पापके कारण दुःख उठाया जिस्तें वह मनुष्यों को ईश्वर के पास पहुचावे। मृत्यु के डंक अर्थात् पाप ने उस को मारके दबाया। हम यह बात नहीं समझ सकते हैं पर धर्मपुस्तक के अनुसार मसीह के महासंकट और दुःख भोगने और मृत्यु के द्वारा मनुष्य परमेश्वर से मिलाये गये हैं कि जो कोई प्रभु यीशू का शरणागत होके उस पर बिश्वास करे उस के सारे पाप क्षमा किये जावेंगे और वह निर्दोष ठहराया जायगा और मसीह की सी पवित्र चाल चलने का सामर्थ्य उस को मिलेगा। मसीह ने अपने अपार प्रेम के कारण आनन्द से उस सकट और पीडा को सहा जो परमेश्वर के न्याय के अनुसार हमें सहना था कि हम ईश्वर से मिलाये जावें और क्लेशरहित हो जावें उस ने अपने बडे प्रेम के कारण अपने निज हाथ से उसी को तोडके दूर किया जो हमें परमेश्वर के पास आने से रोकता है अर्थात् उस ने पाप

रूपी भीत को तोडके दूर किया और परमेश्वर के पास पहुंचने का मार्ग खोल दिया। इस भारी काम के करने में उस को इतना महासंकट और बड़ा श्रम हुआ कि उस का पसीना लोहू बनके बूंद बूंद भूमि पर गिरने लगा। पर जानना चाहिये कि उस ने यह सब किया और सहा कि हमें बड़ी शान्ति मिले और हम गा सकें कि "हे मृत्यु तेरा डक कहां है हे अधोलोक तेरी जय कहां है" ॥

जैसा चाहिये हम वर्णन नहीं कर सकते हैं कि प्रभु यीश को गत्स. मनी वारी में क्या-क्या मालूम होता था। मृत्यु उस के पवित्र और शुद्ध स्वभाव से कुछ सम्बन्ध नहीं रखती थी। जिस को मृत्यु का सामर्थ्य था उस ने मसीह में कुछ नहीं पाया। मसीह आप जीवनस्वरूप होके मृत्यु पर प्रभुता रखता था। उस की आज्ञा से मृत्यु के बश में पड़े हुए लोग मृत्युंजय होके जी उठते थे। इस से हम कुछ समझ सकते हैं कि जब मसीह आप परमेश्वर के मत के अनुसार और उस के अनुग्रह से मृत्यु के वश में आ जावे तो उस को यह बात बडी भयानक और शोक. जनक मालूम पड़ी होगी। जब मृत्यु पापी मनुष्य पर आ पड़ती है तो वह कभी कभी भय खाने और व्याकुल होने लगता है। पर जानना चाहिये कि हमारे विनाशी शरीर और पापी जीव में यह चेतना रहती है कि जिस से हम को मालूम होता है कि हम मृत्यु से कुछ सम्बन्ध रखते हैं। किसी ने कहा है कि जिस दम हम जीने लगते उसी दम हम मरने भी लगते हैं। जीवनस्वरूप और पूर्ण पवित्र मसीह मृत्यु से कुछ सम्बन्ध नहीं रखता था। उस ने अपनी इच्छा से अपने बड़े प्रेम के कारण मृत्यु का स्वाद चखा कि हम सनातन मृत्यु से बचके उस के द्वारा सदा जीवें ॥

मसीह का संकट बढ़ता गया और उस को मालूम होने लगा कि मैं मृत्यु की रस्सियों से चारों ओर घिर गया और अधोलोक की रस्सियां मेरी चारों ओर हैं और मै मृत्य के फंदों से घिर गया हूं। मेरा सहायक कोई नहीं है। उस पर यह वचन पूरा हुआ जो बाईसवें स्तोत्र में लिखा है कि "हे मेरे ईश्वर मुझ से दूर न हो क्योंकि संकट निकट है और कोई सहायक नहीं। मेरा हृदय मोम सा गल गया वह मेरी देह के भीतर पिघलके वह गया। मेरी जीभ मेरे तालू में चिपक गई और तू मुझे (मारके) मिट्टी में मिला देता है"। शैतान ने प्रभु के अत्यन्त बड़े शोक और महासकट को देखके उस की आशा

तोड़ने की चेष्टा किई होगी । उस ने उस से कहा होगा कि यह काम तुझ से नहीं हो सकता । तू भी अपने भाइयों को किसी भांति छुड़ा नहीं सकता न परमेश्वर को उन की सच्ची प्रायश्चित्त में कुछ दे सकता है । इसी लिये इस काम से हाथ धो और मनुष्यों को मेरे वश में रहने दे । परीक्षक की बातें सुन प्रभु शिष्यों को छोड़कर थोड़ी दूर आगे गया और औंधे मुंह गिरके प्रार्थना करने लगा कि "हे मेरे पिता यदि हो सके तो यह कटोरा मुझसे टल जावे तौभी जो मैं चाहता हूं सो नहीं पर जो तू चाहता है"। हम प्रभु की इस प्रार्थना के कारण ठोकर न खावें बल्कि हमें यह सोचना उचित है कि प्रभु यीशू आज्ञाकारी होते हुए परमेश्वर की इच्छा पूरी करनी चाहता था क्योंकि परमेश्वर की इच्छा पूरी करनी उस की समझ में खाने पीने के समान थी पर अब वह पाप और अन्धकार के अधिकार से घिरा था इस लिये वह शोकसागर में डूबा जाता था। उस में डूबते डूबते वह पुकारता है कि हे पिता तू सर्वबुद्धिमान है क्या तुझ को दूसरा उपाय मालूम नहीं है जिस के द्वारा मनुष्य पाप से और शैतान के अधिकार से बच सकें। पर हे पिता यदि तेरी समझ में कोई दूसरा उपाय न हो तो मैं तेरी महिमा प्रगट करने और मनुष्यों को बचाने के लिये इस दुःख भरे मार्ग में आनन्द से चलूंगा। मैं पूरी रीति से तेरी इच्छा के अधीन हूं। मैं मनुष्यों के पापों के दूर करने का बलि होने को तैयार हूं। मसीह सच्चा मनुष्य होके अपने स्वर्गीय पिता का आसरा रखता था। इस भयानक रात में उस की बड़ी परीक्षा तो हुई पर उस के मुंह से कोई अनुचित बात न निकली। वह परमेश्वर की आज्ञा में बना रहा। वह शोकित और व्याकुल तो था और सकट के मारे शान्तिदायक की बाट जोहता रहा पर देर तक कोई दिखाई नहीं दिया जैसा लिखा है कि "मैं तरस खानेहारों की बाट जोहता तो रहा पर कोई नहीं आया और शान्ति देनेहारे को ढूंढता तो रहा पर कोई न मिला"। निदान उस की प्रार्थना सुनी गई । स्वर्ग से एक दूत ने आके उस को सामर्थ्य दिया। वह शान्तमन होके शिष्यों के पास फिर गया पर उन को शोक के मारे सोते पाया। उन का आत्मा मसीह के संग चलने को तैयार तो था पर शरीर की निर्बलता के कारण वे इस भयानक रात में उस के संग जाग न सके। उस ने उन को घुड़की न दिई न धमकाया। उस ने केवल उन से पूछा कि तुम क्यों सोते हो। उस के संग जागना और प्रार्थना करनी उन पर फर्ज था पर निर्बलता के कारण वे अचेत होके

उस समय सो गये जब वैरी आने चाहते थे। हम शिष्यों पर दोष न लगावें बल्कि अपने को परखें तो हम को मालूम होगा कि जब २ हमें जागना और प्रार्थना में लगे रहना चाहिये था तब २ हम सोते वा निश्चिन्त रहते थे। हम प्रभु से यह विनती करें कि हे प्रभु तू जो कभी न ऊंघता और न सो जाता है कृपा करके हमारी निद्रा और आलस को दूर कर और हम को जागने और वैरियों का साम्हना करने का सामर्थ्य दे। आमेन॥

मसीह का पकड़ा जाना।

वह बोलता ही था कि देखो यहूदा जो बारहों में से एक था आ पहुंचा और महायाजकों और लोगों के प्राचीनों की ओर से एक बड़ी भीड तलवारें और लाठियां लिये हुए उस के साथ थी। उस के पकड़वानेहारे ने उन्हें यह कहके पता दिया था कि जिसे मैं चूमूं वही है उसे पकड लेना। और उस ने तुरन्त यीशू के पास आके कहा हे गुरु प्रणाम और उस को चूमा। यीशू ने उससे कहा हे मित्र जिस काम को तू आया है सो कर। तब उन्हों ने आके यीशू पर हाथ डाले और उसे पकड़ लिया। और देखो यीशू के साथियों में से एक ने हाथ बढ़ाके अपनी तलवार खींची और प्रधानयाजक के दास पर चलाके उस का कान उडा दिया। तब यीशू ने उस से कहा अपनी तलवार फिर काठी में रख क्योंकि सब जो तलवार खींचते हैं तलवार से नष्ट किये जायेंगे। क्या तू समझता है कि मैं अपने पिता से विनती नहीं कर सकता और वह अभी स्वर्गदूतों की बारह सेनाओं से अधिक मेरे पास न पहुंचा देगा। तब जो शास्त्रों में लिखा है कि ऐसा होना आवश्य है सो क्योंकर पूरा होगा। उसी घडी यीशू ने भीड से कहा क्या तुम मुझे डाकू की नाईं पकड़ने को तलवारें और लाठियां लिये हुए निकले हो। मैं तो प्रतिदिन मन्दिर में बैठके शिक्षा देता था और तुम ने मुझे नहीं पकडा। पर यह सब इस लिये हुआ कि जो नबियों ने लिखा सो पूरा होवे। तब सब शिष्य उसे छोड़कर भाग गये॥

मत्ती २६ : ४७-५६ और मार्क १४ : ४३-५२, लूक २२ : ४७-५३ और योहन १८ : ३-१२ को भी देखो॥

प्रभु यीशू बारी में अत्यन्त मानसिक दुःख और संकट को सह चुका था। उस ने अपने शिष्यों को जगाके उन से कहा "उठो चलो देखो जो मुझे पकड़वाता है सो निकट आया है"। यह कहके वह हियाव बान्धके अपने निर्दयी और क्रूर बैरियों से भेंट करने को चला गया कि वे परमेश्वर के ठहराये हुए मत के अनुसार उसे दुःखाके मार डालने पावें। वह जानता था कि मैं अब अपने पिता की आज्ञा पूरी करने जाता हूं इस लिये वह शान्तमन था। यदि परमेश्वर न ठहराता कि मसीह दुःख उठाने और मर जाने से मनुष्यों को पाप से बचावे तो अधर्मी यहूदी कुछ नहीं कर सकते जैसा मसीह ने एक दिन कहा कि "कोई मेरे जीव को मुझ से नहीं लेता परन्तु मैं आप से उसे देता हूं। उसे देने का मुझे अधिकार है। यह आज्ञा मैं ने अपने पिता से पाई"। जो प्रेम मसीह पापी मनुष्यों से रखता था उस ने उसे वश कर लिया था इस लिये मनुष्यों के हित के लिये दुःखभरी मृत्यु भोगने को तैयार था॥

जो भीड बारी में आई थी उस के आगे २ यहूदा चलता रहा। वह रात भर जागता रहा। सुसमाचारों के रचक बताते हैं कि "वह बारह शिष्यों में से एक था" जिस्तें हम यह कभी न भूल जावें कि मसीह का जो चेला विश्वासयोग्य नहीं रहता बल्कि निश्चिन्त होके अपनी बुरी अभिलाषाओं को नहीं दबाता सो होते २ कैसा भ्रष्ट बन सकता है। जिस शैतान ने यहूदा को भरमाया था सो अब तक मसीह की मण्डलियों में छिपके फिरा करता है कि वह असावधान मसीही जनों को अपने जाल में फंसावे। मसीह ने यहूदा को इस लिये अपना चेला बनाया था कि वह मनुष्यों को मसीह का ज्ञान सिखाके मसीह के पास लावे पर इस के पलटे वह उन लोगों का अगुवा हुआ जो प्रभु को पकडने आये थे। उस ने जानबूझके अपने गुरु का कठोर बैरी हो गया तैसे इस समय में भी होता है कि जो लोग सच्चाई से पतित होके मसीह के पीछे हो लेना छोड़ते हैं वे सब से कट्टर और कठोर बैरी बन जाते हैं। हां जो लोग मसीह का साम्हना करके उस के राज्य को उलटाने चाहते हैं उन के अगुवे और उभारनेहारे वे कभी २ हो जाते हैं। हे भाइयो जब २ हमारे बीच ऐसे लोग उठते हैं जो विश्वास से पतित होके टेढी बातें कहते और शिष्यों को अपनी ओर खींच लेते हैं तब २ हम अचंभा न करें बल्कि सोचें कि हम मनुष्य हैं और पापी मनुष्यों के बीच रहते हैं। हमारी मण्डली नूह के घराने से अच्छी नहीं है। उस का घराना ...

जनों का था। इन आठों में से एक जन अधार्मिक ठहरा। इब्राहीम जो सच्चे विश्वासियों का पिता कहावता है उस के घर में एक ऐसा बेटा था जो घर से निकाले जाने के योग्य ठहरा। ईश्वरभक्त याकूब के बारह बेटों में से एक अपने बाप के खाट को अशुद्ध करके निकृष्ट ठहरा। फिर उस छोटे समाज को देखो जिसे प्रभु यीशू ने चुना और तीन एक बरस लों शिक्षा देता और अच्छा नमूना और प्रीति दिखाता था। इस समाज के बारह जनों में से एक चोर और छलिया ठहरा। हां यहूदा जो बारहों में से एक था पाप करते करते बड़ा ढीठ कपटी हो गया। वह उन बैरियों के आगे आगे चलता था जिन्हों ने प्रभु यीशू को घेरके पकड़ा। जिन मनुष्यरूपी कुत्तों ने इस रात में प्रभु यीशू को घेरा उन का चलानेवाला यहूदा था। वह आप शैतान से चलाया जाके दुष्टों को उभारता था। जब संसार के बुरे लोग विश्वासियों को दु खाने चाहते तो वे बहुधा विश्वास से पतित मनुष्यों के द्वारा उन को दुःखाते हैं। "दुष्ट लोग तो जब कोई पीछा नहीं करता तब भी भागते हैं"। "महायाजक और फरीसियों की यह दशा थी। उन्हों ने सोचा कि यीशू हमारे भेजे हुए लोगों का साम्हना करके उन से लड़ेगा इस लिये उन्हों ने अपने नौकरों और रोमी सिपाहियों में हथियार लगवाके उन्हें यीशू के पकड़ने को भेजा। फिर उन्हों ने सोचा होगा शायद वह बारी के घने झाडों के नीचे अपने को छिपावेगा सो उन्हों ने नौकरों को मशालें और बत्तियां भी दिईं। जो आप ही ज्योतिस्वरूप है और सभों को उजियाला देता है उसे वे मशालें और बत्तियां लेके ढूंढने चाहते थे।

यहूदा ने पकडवानेहारों से कहा था कि जिसे मैं चूमूं वही है। उस ने सोचा होगा कि मुझे उस को चूमते देखकर सिपाही निडर हो जावेंगे। फिर उस ने सोचा होगा कि मैं प्रभु का चूमा लेके उस से अपना छल छिपाऊंगा। उस ने प्रभु को चूमके मानो यह कहा कि हे प्रभु देखिये ये लोग आप को पकडने आये हैं। मैं आप की सहायता करनी चाहता तो सही पर दुष्टों के क्रोध को ठण्डा करना मुझ से नहीं बनता है। यहूदा का चूमा विष और पित्त से मिला हुआ था। उस चूमे से प्रभु को हृदयवेधक अत्यन्त दुःख हुआ। पर उस ने विना धमकी दिये उस को सह लिया। वह पल भर में यहूदा को नष्ट कर सका पर उस ने अपने पवित्र होंठों की भस्म करनेहारी आग को रोक रखा और कहा "हे यहूदा क्या तू मनुष्य के पुत्र को चूमा लेके पकड़वाता है" यदि

नौकर अपने स्वामी को अथवा चेला अपने गुरु को छल करके वैरियों के हाथ करे तो वह बहुत बुरा काम करता है परन्तु जो मित्र का भेष धारण करके मनुष्य के पुत्र को जो मनुष्यों का उद्धार करने को स्वर्ग से पृथिवी पर उतर आया है वैरियों के हाथ में मारे जाने के लिये सौम्प देवे वह शैतानी काम करता है । शैतान ने यहूदा के कपट को देखके प्रभु से ठट्ठा कर मानो उससे कहा देख तो कि यहूदा जो तेरे प्रिय शिष्यों में से एक है सो कैसे मेरे अधीन हुआ है ।

हे भाइयो तुम ने मसीह के नाम पर बपतिस्मा पाया है । अपने २ मन को परखके देख लेओ कि उस का हाल कैसा है । शायद तुम्हारी दशा ऐसी है जैसी उन लोगों की थी जिन के विषय परमेश्वर ने नबी से कहा कि "ये लोग जब मेरे समीप आते हैं तब मुंह की बातों से मेरा आदर करते हैं पर अपना मन मुझ से दूर रखते हैं और ये जो मेरा भय मानते है सो मनुष्यों की आज्ञा सुन सुनके मानते हैं" । जो लोग ऐसा करते है उन का मन यहूदा का सा है । जो लोग मण्डली के साथ गाया करते हैं कि "यीशू मैं तुझ से करता प्यार सभों से जियादा मेरा तू यार" पर मन ही मन में वे मसीह के क्रूश के वैरी हैं । क्या उन का गीत गाना यहूदा के समान प्रभु को प्रणाम करना नहीं है । हे पढ़नेहारो जब जब तुम बिना पश्चात्ताप और सच्चे धर्म की भूख और प्यास के बिना प्रभुभोज के भागी होते हो तो क्या तुम यहूदा के सदृश प्रभु का चूमा नहीं लेते हो । जो लोग अपने कल्पित धर्म के कार्यों पर भरोसा रखते हुए सोचते हैं कि मुक्ति प्राप्त करने के लिये हम बहुत कुछ कर सकते हैं जो हमारी करनी में कमती हो उसे प्रभु भरेगा वे भी यहूदा के समान प्रभु यीशू को चूमते हैं । बहुत अधार्मिक लोग प्रभु यीशू की परमेश्वरताई से मुकरके कहते हैं कि वह निश्चय करके बड़ा धर्मोपदेशक था हां वह स्वर्गीय गुरु अरु और मनुष्यों से अधिक श्रेष्ठ भी था पर ईश्वर नहीं था । ये लोग भी यहूदा के समान प्रभु को प्रणाम करते हैं । जब जब हम प्रगट में प्रभु के निकट आते है तब तब वह हम से पूछता है कि तुम कहां से और काहेको आते हो । यदि हम मन ही मन प्रभु से प्रेम नहीं रखते हैं तो डर यह है कि हम यहूदा के समान उसे चूमने को आते हैं ॥

हथियारबन्ध भीड़ ने यहूदा के बताये हुए चिन्ह को नहीं देखा इस लिये वे पीछे हट गये । सो जब कि यीशू ने जाना कि मेरी घड़ी आ

पहुंची है तो वह आगे चढ़ा। वह जानता था कि मुझ को तीव्र वेदना होगी और मेरा शरीर अति दुखित होगा तौभी वह अपने दुखदायकों के पास गया। वह अपने पिता की इच्छा पूरी करने का अभिलाषी था जैसा उस ने नबी के द्वारा कहा था कि " हे मेरे परमेश्वर मैं तेरी इच्छा पूरी करने से प्रसन्न हूं "। उस ने अपने आज्ञापालन के द्वारा हमें पवित्र किया। पर उस ने प्रगट किया है कि मेरी इच्छा के बिना न कोई मुझे बान्ध सकता न मार डालने पावेगा। मैं आप अपना जीव देता हूं इस लिये उस ने वैरियों से पूछा कि " तुम किस को ढूंढ़ते हो "। उन्हों ने उत्तर दिया कि " यीशू नासरी को "। यीशू ने कहा " मैं हूं "। उस के इस वचन के द्वारा अगम्य ज्योति की एक किरण उन को ऐसी लगी कि वे पीछे हटके भूमि पर गिर पड़े। यीशू ने ज्योतिमय और समर्थ वचन से उन को इस लिये नहीं गिराया कि वह अपने को बचावे वलिक उस का मतलब था कि मनुष्य उस का पराक्रम देखकर दीन हो जावें और मान लेवें कि विना अनुमति पाये हम प्रभु यीशू पर अधिकार चला नहीं सकते हैं। जब कि मसीह ने कहा "मैं हूं" तो हमें विचार करना चाहिये कि उस ने अपने को कौन ठहराया जब प्रधान याजक ने उस से पूछा क्या तू परमधन्य का पुत्र मसीह है " तब यीशू ने कहा " मैं हूं "। यह कहके उस ने मान लिया कि मैं यीशू नासरी जो हूं सो अनादि और अनन्त सर्वसामर्थी परमेश्वर का एक ही जनित पुत्र हूं जो पृथिवी पर इस मतलब से उतर आया हूं कि मैं अपने दुःखभोग मृत्यु और मुर्दों में से जी उठने के द्वारा मनुष्यों को उन के पापों से बचाऊं। कोई मेरा जीव मुझ से ले नहीं सकता है पर मैं स्वेच्छा से और आनन्द के साथ अपने को परमेश्वर का वह मेम्ना बना लेता हूं जो जगत के पाप को उठा ले जावेगा। मैं वही हूं जो मारा कुचला जाऊंगा कि मनुष्य मेरे कोड़े खाने से आत्मिक चंगापन पावें। जब कि प्रभु यीशू ने उस समय जब वह निर्बल अपराधी के समान होके इतना बड़ा सामर्थ्य दिखाया कि लोग उस के वचन को सुनके भूमि पर गिर पड़े तो उस समय वह कैसा बड़ा सामर्थ्य दिखावेगा जब वह विचारासन पर विराजते हुए मनुष्यों का न्याय करेगा। तब सब मनुष्य उस के साम्हने अपने घुटने टेकेंगे। उन में से कोई २ यहूदा के साथियों के समान पीछे हटेंगे और डरके मारे अपना सिर उठा न सकेंगे। पर और लोग उस के चरणों पर गिरके उस की स्तुति और धन्यवाद करेंगे कि जिस ने अपने वैरियों के

साम्हने अच्छा स्वीकार करके कहा "मैं हूं" उस ने हम को पाप से बचाके निर्दोष और धर्मी ठहराया है इसी लिये हम निर्भय होके उस के साम्ने खड़े रह सकते हैं। जब से प्रभु यीशू मृत्युंजय होके मुर्दों में से जी उठकर स्वर्ग पर चढ़ गया तब से वह प्रभुता करता आया है। यह वचन तब से पूरा होता आया है कि "वह जाति जाति में न्याय चुकावेगा वह दूर दूर के देशों में प्रधान को मार मारके चूर करेगा"। और "वह कंगालों का न्याय धर्म से चुकावेगा और पृथिवी के नम्र लोगों के हित के लिये निष्कपट होके डांटा करेगा और वह पृथिवी को अपने वचनरूपी सोंटे से मारेगा और अपने फूंक के झोंके से दुष्ट को उड़ाके मार डालेगा"। वे लोग कैसे अभागे हैं जो उस का यह वचन कि "मैं हूं" सुनके उस के अधीन नहीं होते हैं पर वे क्या ही धन्य हैं जो शावल के समान यीशू को यह कहते सुनके कि "मैं हूं" उस के साम्हने औंधे मुंह गिरके पूछें हे प्रभु तू क्या चाहता है कि हम करें। प्रभु यीशु न केवल डराने के लिये कहता है कि 'मैं हूं' वलिक अपने चेलों का हियाव वन्धाने के लिये भी कहता है कि "मैं हूं"। जैसा उस ने एक दिन अपने बारह शिष्यों से कहा कि "ढाढ़स बान्धो मैं हूं डरो मत"। फिर अपने जी उठने के पीछे उस ने अपने भयभीत शिष्यों पर प्रगट होकर उन से कहा कि "तुम क्यों घवराते हो मैं आप ही हूं"॥

फिर प्रभु यीशू ने एक और अद्भुत कर्म दिखाया अर्थात् उस ने अपने को बान्धे जाने के लिये वैरियों के हाथ सौंपा और अपने शिष्यों को उन के हाथ से छुड़ाया। उस ने भीड़ से दूसरी बार पूछा कि तुम किस को ढूढते हो। डर के मारे उन्हों ने कहा कि यीशू नासरी को। उस ने अद्भुत रीति से उन पर प्रभाव करके उन से कहा "मैं हू जो तुम मुझे ढूंढते हो तो इन को जाने दो"। वैरी इस मतलब से आये थे कि वे सभों को पकड़के नष्ट करें। पर प्रभु के समर्थ वचन के द्वारा वे रुक गये और प्रभु का यह वचन पूरा हुआ जो उसने प्रार्थना करते हुए पिता से कहा कि "हे पिता मैं ने उन को रक्षा किई जिन्हें तू ने मुझे दिया है और उन में से कोई नष्ट नहीं हुआ"। इस से हम सीख सकते हैं कि जिन की रक्षा करनी प्रभु ने अपने ऊपर लिई है जब तक वह न अनुमति देवे तब तक कोई उन को नही छू सकता है। प्रभु विश्वास योग्य है। हम उस की शरण लिये बेखटके रह सकते। वह अच्छा गडेरिया है जो अपनी भेड़ों के बचाने के लिये अपना जीव देता है। वह परस्वार्थी होके अपना

लाभ नहीं ढूंढ़ता है। वह घायल और दु:खित होके मरा कि हम छुटकारा पाके जीने पावें। वह सभों के लिये मरा कि हम उस के लिये सनातन लों जीवें। "इन को जाने दो"। यों ही प्रभु ने कहा है और इस वचन के हेतु से मैं मृत्युरूपी और शैतानरूपी वैरियों से कहूं कि मुझे जाने दो क्योंकि तुम ने प्रभु यीशू को ढूंढा और उस ने मेरे छुडाने के लिये अपने आप को दे दिया। उस ने पापरूपी जाल को फाड़के मुझे छुडाया। मैं मृत्यु के योग्य तो था पर मृत्यु के बन्धनों से छूट गया क्योंकि मनुष्य का पुत्र जो ईश्वर और मनुष्य भी है मेरे लिये बांधा गया॥

जब वैरियों ने आ यीशू पर हाथ डालके उसे बांधा तब पितर ने अपनी तलवार को खींचके महायाजक के सेवक का कान उडा दिया। उस ने सोचा होगा कि यदि कोई दूसरा हमारे प्रिय गुरु की रक्षा न करे तो मैं करूंगा। बहुत लोग अभिमानी होके सोचते हैं कि हम ही सच्चे धर्म की रक्षा करेंगे। प्रभु किसी मनुष्य की सहायता का प्रयोजन नहीं रखता है इस लिये उस ने पितर को रोकके आज्ञा दिई कि अपनी तलवार को काठी में रख। यह कहकर उस ने सेवक के कान को चंगा किया और पितर को पकडे जाने से बचाया। इसी रीति से प्रभु यीशू मृदुता और कृपा दिखा दिखाके उसी को सुधारता है जिस को हम ने हडबड़ाकर और अविचार से बिगाड़ा है। प्रभु यीशू ने पितर को रोकके कहा "जो कटोरा पिता ने मुझ को दिया है क्या मैं उसे न पीऊं"। यदि मैं इस दु:खरूपी कटोरे को न पीऊं तो जो धर्मपुस्तक में लिखा है कि ऐसा होना अवश्य है सो क्योंकर पूरा होगा। मुक्ति का जो भेद आदि से और पीढी पीढ़ी गुप्त रहा सो अब प्रगट हुआ। मसीह चुपचाप होके और बिना साम्हना किये बांधा जाता है। अब नबी का यह वचन पूरा हुआ कि "जब उस पर अंधेर किया गया तब वह सहता रहा और अपना मुंह न खोला जैसे भेड वा बकरी बध होने के लिये जाने के समय चुपचाप रहती है उसी भांति उस ने भी अपना मुंह न खोला"। उन्हों ने उस को बांधा पर हे भाइयो हम तुम बांधे जाने के योग्य हैं। वह अपने प्रेम के कारण बांधा गया पर उस के बन्धनों के द्वारा हमारे पापरूपी बन्धन खुल गये। जब पवित्र जान हुस्स सुसमाचार के सुनाने के कारण प्राणदण्ड के योग्य ठहराया जाके मार डाला जावे तब बधक ने लोहे की जंजीर उस के गले में बांधी। हुस्स साहिब ने तब ही पुकारा कि हे प्रभु यीशू तू मेरा उद्धारक है

और तू भी भारी जंजीरों से बांधा गया मुझ लाचार पापी को सम्भाल कि मैं सुसमाचार के कारण आनन्द से इस जजीर को सह सकूं ॥

फिर प्रभु ने भीड़ से कहा "क्या तुम जैसे डाकू पर तलवार और लाठियां लेके निकले हो यह तुम्हारी घड़ी और अंधियारे का अधिकार है। जब तक परमेश्वर की ठहराई हुई घड़ी न आ पहुंची तब तक कोई उस पर हाथ डाल न सका। जैसे शैतान के सेवकों के योग्य है तैसे वे रात के अंधियारे में मसीह को पकडने के लिये निकले थे। वे भली भांति जानते थे कि हम अधकार के अधिकार के काम में लगे हैं। पर यह अंधियारा मानो केवल घड़ी भर का था धर्म का सूरज जो पापरूपी बादलों के कारण थोड़ी देर अदृश्य था सो फिर चमकने लगा। मसीह की मण्डली पर और उस के अलग २ शरीकों पर कभी २ क्लेशरूपी और विपत्तिरूपी बड़े बादल छा जाते हैं पर वे केवल घड़ी भर रहते हैं। परमेश्वर के लोग आज कल भी नबी के समान कह सकते हैं कि "रे मेरी बैरिन मुझ पर आनन्द मत कर क्योंकि ज्यों मैं गिरूं त्यों ही उठूंगा भी और ज्यों मैं अंधकार में पड़ूं त्योंही यहोवा मेरे लिये ज्योति का काम देगा"। (मीका ७ ८)। जहां कहीं संसार के लोग शारीरिक तलवार लिये मसीह का साम्हना करते हैं वहां वे हार जाते हैं। प्रभु यीशू अपने बिरुद्ध चलाई हुई तलवार के लगने से नहीं रोकता है पर हाय उस को जो प्रभु यीशू के बिरुद्ध तलवार चलाता है। यह सब प्रभु यीशू पर बीता कि धर्मपुस्तक की बातें पूरी होवें जैसे यह कि "वह अपराधियों के संग तो गिना गया" ॥

प्रभु ने शिष्यों से कहा था कि इसी रात तुम सब मेरे कारण ठोकर खाओगे सो जब शिष्यों ने देखा कि हमारा गुरु कुकर्मी के समान पकड़ा गया और उस ने अपनी रक्षा के लिये कुछ नही किया है तब वे उस के कारण ठोकर खाके भाग गये। उन के ठोकर खाने और भागने का कारण यह था कि मन्दमति होने के हेतु से उन्हो ने नहीं समझा कि अवश्य है कि मसीह दु:ख उठाके मर जावे। यद्यपि उन्हों ने प्रभु को छोडा तौभी उस ने उन को नही त्यागा बल्कि अपने जी उठने के पीछे उन को ढूंढ़के उन के मन में बिश्वास और भरोसा उत्पन्न कर उन की ढाढ़स बन्धाई ऐसा कि वे अन्त तक विश्वास में दृढ़ बने रहे। आमेन ॥

हन्नास और कयाफा महायाजकों के आगे यीशू का बिचार होना ।

योद्धाओं की जथा ने और सहस्रपति ने और यहूदियों के प्यादों ने यीशू को पकड़के बांधा और पहिले हन्नास के पास ले गये क्योंकि वह कयाफा का ससुर था जो उस बरस का प्रधान याजक था। यही कयाफा था जिस ने यहूदियों को परामर्श दिया कि लोगों के लिये एक मनुष्य का मरना अच्छा है। योहन १८ १२-१४ ॥

तब प्रधानयाजक ने यीशू से उस के शिष्यों और उस की शिक्षा के विषय में पूछा। यीशू ने उस को उत्तर दिया कि मैं ने संसार से खोलके बातें किईं मैं ने सभा में और मन्दिर में जहां सब यहूदी एकट्ठे होते हैं सदा उपदेश किया और गुप्त में कुछ नहीं कहा। तू मुझ से क्यों पूछता है जिन्हों ने सुना उन से पूछ ले कि मै ने उन से क्या कहा देख वे जानते हैं कि मैं ने क्या बातें कहीं। जब यीशू ने यह कहा तब प्यादों में से एक ने जो पास खड़ा था उस को थपेडा मारके कहा क्या तू प्रधानयाजक को ऐसा उत्तर देता है। यीशू ने उसे उत्तर दिया यदि मैं ने बुरा कहा तो उस बुराई की साक्षी दे परन्तु यदि भला कहा तो मुझे क्यों मारता है। तब हन्नास ने उस को बंधे हुए कयाफा प्रधानयाजक के पास भेज दिया। योहन १८ : १९-२४ ॥

और जो मनुष्य यीशु को पकड़े हुए थे वे उस से ठट्ठा करने और उसे मारने लगे। और उस की आंखे ढांपके उस से पूछा किस ने तुझे मारा सो नबूवत से बता। और उन्हों ने बहुतसी और निन्दा की बातें उस के विरुद्ध में कहीं ॥

ज्योंही दिन निकला त्योंही लोगों के प्राचीनों का समाज अर्थात् महायाजक और शास्त्री लोग एकट्ठे हुए और उसे अपने महासभा में लाये और बोले जो तू मसीह है तो हम से कह। उस ने उन से कहा यदि मैं तुम से कहूं तो तुम प्रतीति नहीं करोगे और यदि मैं तुम से कुछ पूछूं तो तुम उत्तर नहीं देओगे। परन्तु अब से मनुष्य का पुत्र सर्व्व-शक्तिमान ईश्वर के दहिने हाथ बैठेगा। सभों ने कहा तो क्या तू ईश्वर का पुत्र है। उस ने उन से कहा तुम कहते हो कि मैं हूं। तब उन्हों ने कहा अब हमें साक्षी का और क्या प्रयोजन है क्योंकि हम ने आप ही उस के मुख से सुना। लूक २२ : ६३-७१ ॥

महायाजक ने सभा से कहा ईश्वर की यह निन्दा तुम ने सुनी है तुम्हें क्या समझ पड़ता है । सभों ने उस को बध के योग्य ठहराया । और कितने उस पर थूकने लगे और उस का मुंह ढांपके उसे घूसे मारके उस से कहने लगे कि नबूवत से बता और प्यादों ने उसे लेके थपेड़े मारे । मार्क १४ ६४-६५ ॥

ऊपर के पदों में जगत्राता अर्थात् प्रभु यीशू मसीह परमेश्वर के निर्दोष और निष्खोट मेम्ने के तुल्य प्रगट होता है । फिर वह हमारे लिये पवित्र सूधा और निर्मल और पापियों से अलग हुआ महायाजक दिखाई देता है । कोई उस को दोषी ठहराके उस पर दण्डाज्ञा सुना न सका । उस ने अपने निज अपराधों के कारण सो नहीं परन्तु हमारे अपराधों और पापों के कारण दुःख भोगा । वह मनुष्यरूपी पापबलि का मेम्ना होके निन्दित और अपमानित भया । हमारे घमण्ड के कारण मनुष्यों ने उस से ठट्ठा करके उस की नामधराई किई । यह बात धर्मपुस्तक में कई एक जगहों में लिखी हुई है जैसे कि "मैं ने उस की आज्ञा पालने में मारनेहारों की ओर अपनी पीठ और गलमोछ नोचनेहारों की ओर अपने गाल किये मैं ने अपमानित होने और थूके जाने से मुंह न मोड़ा" । यशायाह ५० ६ । "वह तुच्छ जाना जाता था और महापुरुष उस का कुछ लेखा न करते थे । वह हमारे ही रोगों के कारण रोगी और हमारे ही दुःखों के हेतु दुःखी था" यशायाह ५३ । प्रभु यीशू ने आप अपने शिष्यों से कहा था कि "मनुष्य का पुत्र अन्यदेशियों के हाथ सौंपा जायगा और उस से ठट्ठा और अपमान किया जायगा और वे उस पर थूकेंगे और उसे कोड़े मारके घात करेंगे" । वह परमेश्वर का धीरजवान और चुपका मेम्ना होके निन्दित भया पर निन्दा के बदले उस ने निन्दा न किई और दुःख उठाके धमकी न दिई । उस ने हमारे लिये दुःख भोगा और हमारे लिये नमूना छोड़ गया कि हम उस की लीक पर हो लेवें । यह मनुष्यरूपी मृदुभाव और धीरजवान और निर्दोष मेम्ना जो था सो एक ही सच परमेश्वर का एकलौता पुत्र है । उस पर महायाजकों के साम्हने दोष लगाया गया और उन्हों ने उस को कुकर्मी और ईश्वरनिन्दक समझके प्राणदण्ड के योग्य ठहराया । हां जो बिल्कुल निर्दोष था सो दोषी ठहराया गया जिस्तें हम जो दोषी हैं निर्दोष किये जावें । महिमा उस की है और वह आदर प्रशंसा और बड़ाई के योग्य है पर वह अपमानित और निन्दित भया । हमें अपमानित और लज्जित

होना चाहिये क्योंकि हम पापी और अनर्थकारी हैं पर हम आदर और महिमा के अधिकारी बनाये जाते हैं। परमेश्वर के पुत्र ने कोडे खाये। लोगों ने उस के गाल पर थपेड़े मारे और उस पर थूके पर वह धीरज धरके चुपचाप रहा। हम अधम कीडे सरीखे मनुष्य क्रोध करने और बदला लेने में शीघ्र करते हैं पर जैसे हम मसीह के अनुसार बदलते जाते तैसे हम धीरज धरने अन्याय और निन्दा सहने का अनुग्रह पाते हैं॥

जिन लोगों ने प्रभु यीशु को पकड़ा था वे उसे पहिले हन्नास के पास लाये हन्नास महायाजक हुआ था पर वह उस समय यहूदियों की बड़ी न्यायसभा का सभाध्यक्ष था। उस ने यह चाहा कि जब तक सभासद एकट्ठे न हुए हों तब तक मैं यीशु नासरी के मामले की पूछपाछ करूंगा। हन्नास अपने दमाद कयाफा का सा मन रखता था। जैसे इस ने कहा था कि "अच्छा है कि लोगों के लिये एक मनुष्य मरे और संपूर्ण जाति नाश न होवे" तैसे हन्नास भी सोचता था इस लिये जहां तक उस से बना तहां तक उस ने यत्न किया कि प्रभु यीशु मारा जावे। विना जाने वह परमेश्वर के सनातन और प्रेममय मत को अनजाम देने में सहायक ठहरा। परमेश्वर का ठहराया हुआ मत जो था सो न केवल यह था कि मसीह इस्रायेलवंशियों के लिये मरके उन का उद्धार करे बल्कि यह भी था कि वह सारे आदमवंशियों के लिये अपना प्राण देके उन के पापों के लिये प्रायश्चित्त करके और ईश्वर के सन्तानों को जो तितर बितर हुए हैं एकट्ठा करके एक करदे॥

हन्नास ने प्रभु से उस के शिष्यों और उस के उपदेश के विषय पूछा क्योंकि उस की इच्छा यह थी कि मैं उस पर झूठे उपदेश और बलवे का दोष लगाऊं। प्रभु यीशु ने गुप्त में कुछ नहीं सिखाया था पर सब लोग उस के उपदेश को भली भांति जानते थे। अपने उपदेश का सार उस ने तब महासभा पर प्रगट किया जब महायाजक ने उस से पूछा "क्या तू परमधन्य का पुत्र मसीह है"। प्रभु यीशु ने उत्तर देके कहा "मैं हूं"। हां उस ने मान लिया कि मैं परमेश्वर का पुत्र मसीह हूं। मैं जीवन हूं। मैं जगत की ज्योति हूं। मैं सत्यता हूं। मैं खोए हुए और दण्ड के योग्य ठहराए हुए मनुष्यों के ढूंढने और बचाने को जगत में आया हूं। जो मुझ पर दिल ओ जान से विश्वास न करे सो अपने पापों में मरेगा। प्रभु ने हन्नास से यह भी कहा। "कि जिन्हों ने

सुना उन से पूछ ले कि मैं ने उन से क्या कहा ''। यह उत्तर सुनके वैरियों का कोप भडका और उन में से एक ने प्रभु के गाल पर थपेड़ा मारा। अनुमान होता है कि जिस नीच दास ने प्रभु को मारा उस ने सोचा होगा कि मैं अपने काम से प्रगट करूगा कि मैं यीशू नासरी का अनुगामी नहीं हूं। यह देखकर हाकिम लोग मुझ पर कृपादृष्टि करेंगे और मेरा भला होगा। वर्त्तमान समय में बहुत से ऐसे नीच लोग हैं जो मसीह के सामर्थी वैरियों की चापलूसी करके उन की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिये मसीह के चेलों की नामधराई और अपनिन्दा किया करते हैं। जो कोई बचन और कर्म से मसीह को मान लेता है उस की निन्दा किई जाती है। परन्तु सब सच्चे विश्वासियों को मालूम होवे कि जो थपेड़ा प्रभु यीशू को सहना पडा उस के द्वारा वे ठट्ठा रूपी थपेड़े सहने-योग्य किये जाते जो उन को अबिश्वासियों की ओर से सहने पड़ते हैं। जैसे मसीह ने अपने मरण के द्वारा सब विश्वासियों के लिये मृत्यु का डंक तोड़ा तैसे उस ने दुःख उठाने और निन्दित होने से अपने अनुगामियों के उस के कारण सहे हुए दुःखों और निन्दाओं को सहनेयोग्य किया है। जब यारोबाम नाम राजा ने परमेश्वर के एक जन के विरुद्ध अपना हाथ बढ़ाया तब उस का बढ़ाया हुआ हाथ झट सूख गया पर महायाजक के दास ने प्रभु यीशू को थपेडा मारा तौभी उस का हाथ न सूख गया न वह प्रभु के पवित्र मुख की चमक से भूमि पर गिराया गया जैसे प्रभु के पकड़नेहारे प्रभु का यह वचन सुनके कि "मैं हू" भूमि पर गिर गये। इस का कारण यह है कि परमेश्वर का पुत्र जगत के लोगों को दण्ड देने नहीं बल्कि बचाने आया था। उस ने धीरज और प्रेम दिखाके इस अधम पुरुष को भी पाप से परमेश्वर की ओर फेरने चाहा और इस लिये उस ने केवल इतना कहा कि "यदि मैं ने बुरा कहा तो उस बुराई की साक्षी दे परन्तु यदि भला कहा तो मुझे क्यों मारता है"। हे प्रभु जब मैं तेरी अद्भुत सहन-शीलता पर सोचता तो विस्मित होता हूं। तू सबजगत का स्वामी और राजा है और अन्त के दिन तू बड़े विभव और ऐश्वर्य्य को प्रगट कर महिमा के सिंहासन पर विराजमान होके मनुष्यों का न्याय करेगा तौभी तू ने धीर दिखाके बिना उलहना दिये एक नीच दास के हाथ से मार खाई। हे प्रभु तेरे वचन सच्चाई और धर्म के हां अनन्तजीवन के हैं कृपा करके मुझे और अपने सब अनुगामियों को सिखा कि हम सब तेरे समान सहनशील और धीरजवान हो जावें॥

हे पढनेहारे तू जो अपने वचनों और चालों से प्रभु यीशू को थपेड़ा मारा करता है जैसे प्रभु ने उस दास से कहा तैसे वह तुझ से भी कहता है कि यदि मैं ने भला कहा तो तू क्यों अपने अविश्वास और बुरी चाल से मुझ को थपेडा मारता है। मैं ने तुझ को बहुत भले काम दिखाये हैं और तेरी भलाई और अनन्त सुख के लिये जो कुछ करना अवश्य था सो किया है तो तू क्यों मुझे तुच्छ जानके दण्ड के योग्य ठहराने चाहता है। मेरे सब कर्म खरे हैं और मेरी सारी गति न्याय ही न्याय है। हां मैं सत्यवादी ईश्वर होके धर्मी और सीधा हूं तो तू धर्म और सच्चाई सीखने को मेरी ओर क्यों फिरने नहीं चाहता है॥

हम लोग जो परमेश्वर की दया के कारण मसीह के चेले हैं सो अपने गुरु और मोक्ता के अद्भुत धीर और सहनशीलता पर सोचके बदला लेना छोड देवें। मसीह की सहनशीलता पर सोचने से हमारा क्रोध ठण्डा हो जावेगा और हम मसीह के समान बिना धमकी दिये और बिना क्रोध किये उस के नाम के कारण अन्याय और निन्दा सह सकेंगे॥

हन्नास ने प्रभु को कयाफा महायाजक के पास भेजा। कयाफा के भवन में महासभा के इतने सभासद एकट्ठे हुए जितने यीशू नासरी के मरवा डालने के लिये तडके अपना विश्राम छोड सके। उन्हों ने आगे से ठहराया तो था कि हम यीशू नासरी को मरवा डालेंगे परन्तु इस मतलब से कि उन की दण्डाज्ञा न्याय के अनुसार दिखाई देवे उन्हों ने पहिले से किये हुए साक्षियों को बुलवाया। यद्यपि बहुतसे झूठे साक्षियों ने प्रभु के विरुद्ध साक्षी दिई तौभी उन्हों ने उस में कोई दोष नहीं पाया। "उन की साक्षी एक समान नहीं थी"। जो एक ने साक्षी देके कहा उसे दूसरे ने खण्डन किया। सच्चाई एक ही है पर झूठ नाना प्रकार का है। वर्त्तमान समय में भी झूठे उपदेशकों और भरमानेहारों का उपदेश एकसमान नहीं होता है बल्कि वे अपने झूठे उपदेश के द्वारा अपने को दण्ड के योग्य ठहराते हैं। स्तोत्ररचक का यह वचन हर समय पूरा होता है कि "हे प्रभु मेरे बैरियों को भस्म कर और उन की भाषा में गड़बड डाल"। प्रभु यीशू की निर्दोषता सम्पूर्ण थी और उस के बैरी उस में बुराई का लेस पा नहीं सके। वह अपने जीवन भर सच्चाई और सिधाई से रत्ती भर भी नहीं फिरा था॥

निदान दो झूठे साक्षियों ने आके कहा कि हम ने उसे कहते सुना कि "इस मन्दिर को ढा दो और मैं उसे तीन दिन में उठाऊंगा"। प्रभु ने इस वचन को उस समय कहा जब उस ने मन्दिर को शुद्ध किया। यहूदियों ने तब ही उस से एक ऐसा चिन्ह मांगा कि जिस से मालूम होवे कि उस को मन्दिर के शुद्ध करने का अधिकार है। उस ने योना नबी का चिन्ह उन को दिया। उस ने मानो उन से यों कहा कि तुम इस पवित्र स्थान को अशुद्ध करते जाओ और मन्दिर को ढा देते जाओ। मैं थोड़े दिन में उस को फिर उठाऊंगा। यह चिन्ह तुम्हारे लिये बस है। परन्तु योहन प्रेरित के वचन के अनुसार प्रभु ने इन बातों को अपने देहरूपी मन्दिर के विषय कहा क्योंकि पृथिवी पर का मन्दिर जो था सो सनातन भलाई का दृष्टान्त था। परमेश्वर का अपने लोगों के बीच बास करना तब सम्पूर्ण रीति से होने लगा जब परमेश्वर का पुत्र मनुष्य देह धारण कर आदमबंशियों के बीच डेरा करने लगा। जब मसीह की पवित्र देह क्रूश पर मानो टूट गई तब मन्दिर का परमपवित्रस्थान भी टूट गया। जो घर थोड़े दिन तक खड़ा रहा वह सुनसान था। परमेश्वर ने फिर अपनी महिमा उस में प्रगट नहीं किई। मसीह ने मरकर और तीन दिन के पीछे मुर्दों में से जी उठके अपने मण्डलीरूपी मन्दिर को स्थापन किया। इस मन्दिर को वह कभी नहीं छोड़ेगा बल्कि जगत के अन्त लों उस में बास करेगा॥

जब कि यह पिछली साक्षी प्रभु को दण्ड के योग्य ठहराने के लिये बस नहीं थी तो महायाजक ने अधीर होके प्रभु से पूछा "क्या तू कुछ उत्तर नहीं देता है ये लोग तेरे बिरुद्ध क्या साक्षी देते हैं। वह चुप रहा और कुछ उत्तर न दिया"। प्रभु बोल तो सका हां वह अपने मुंह के आत्मा से अपने सब अधर्मी बिरोधियों को भूमि पर गिरा सका पर उस ने यह न चाहा बल्कि वह मौन धरा रहा और ऐसे मनुष्य के सदृश था जो कुछ नहीं सुनता और जिस के मुंह से बिवाद की कोई बात नहीं निकलती। हां "जब उस पर अंधेर किया गया तब वह सहता रहा और अपना मुंह न खोला"। किसी ने कहा है कि जब यीशू ने बिरोधियों को उत्तर न दिया तब वह भेड़ी के समान चुप रहा पर जब जब उत्तर दिया तब तब गड़ेरिये की नाईं उपदेश देता था। मसीह जो जगत का न्याय करेगा सो जगत के बचाने के लिये बिना उत्तर दिये दण्ड के योग्य ठहराया गया पर विचारदिवस में वह चुप न रहेगा। जब उस पर झूठा

दोष लगाया गया तब वह मौन रहा जिस्ते हम को परमेश्वर के विचारासन के साम्हने लाज के मारे चुप होना न पड़ेगा ॥

प्रभु ने चुप रहने से अपने विरोधियों को दण्ड के योग्य ठहराया। जो लोग उस के विरुद्ध झूठी साक्षी ढूढते हैं उन को मालूम होता है कि प्रभु यीशू चुप रहके हम को उत्तर नहीं देता है। वह पवित्र और सत्यवादी होके कपटियों से बातें नहीं करता है। उस को उन से घिन आता है। उस मनुष्य पर हाय जिस से प्रभु यीशू उपदेश चितौनी और शान्ति देते हुए बातें नहीं करता है क्योंकि वह एक दिन ऊंचे शब्द से उस से कहेगा कि हे स्रापित जन मुझ से दूर होके अपना दण्ड भुगतने को चला जा। चाहिये कि मसीह के अनुगामी बात करने चुप रहने और चाल चलने में मसीह को मान लेवें ॥

मसीह का चुप रहना महायाजक को दुःखदाई मालूम पड़ा इस लिये उस ने मसीह को किरिया धराके कहा "मैं तुझे जीवते ईश्वर की किरिया देता हूं हम से कह क्या तू ईश्वर का पुत्र मसीह है"। यहूदी लोग सोचते थे कि हम को एक ऐसा मसीह चाहिये जो हमें रोमियों के हाथ से छुडाके निर्बन्ध करेगा। यदि प्रभु यीशू एक ऐसा मसीह होने का दावा करता तो वे उस को ईश्वरनिन्दक नहीं ठहराते। परन्तु प्रभु यीशू ने अपने उपदेशों में बताया था कि मैं यीशू नासरी जो हूं सो अनादि अनन्त परमेश्वर का एकलौता पुत्र हूं। मैं और परमेश्वर पिता एक हैं। उस ने उन को बताया था कि जो मनुष्य मुक्ति को प्राप्त करने चाहे सो केवल मेरे द्वारा उसे प्राप्त कर सकता है क्योंकि मैं मार्ग और जीवन और सत्यता हूं। जो मेरे पीछे हो लेता सो जीवन की ज्योति पावेगा अरु और सब लोग अन्धेरे में अपना जीवन बिताते हैं। इन बातों के कारण यहूदी उससे अत्यन्त बड़ा बैर रखते थे। सो महायाजक ने सोचा कि मैं उसे किरिया धराके उस से पूछूंगा क्या तू सचमुच परमधन्य का पुत्र मसीह है। प्रभु यीशू इस प्रश्न को सुनके चुप नहीं रहा। उस ने उस की हामी भरके स्वीकार किया कि "मैं हूं"। हां मैं किरिया खाके मान लेता कि मैं जीवते ईश्वर का पुत्र मसीह हूं। प्रभु यीशू का यह अच्छा स्वीकार उन सभों का मुंह बन्द कर देता है जो उस की परमेश्वरताई से मुकरते हैं। हे प्रभु हम तेरा धन्य मानते हैं कि तू ने यह अच्छा स्वीकार किया और मान लिया कि मैं जीवते ईश्वर का पुत्र मसीह हूं। तेरे इस स्वीकार से तेरे चेलों का बिश्वास दृढ़ किया जाता है ॥

यहूदियों ने सोचा कि वह झूठ बोलता है इस लिये उन्हों ने उस को प्राणदण्ड के योग्य ठहराया पर सच पूछो तो प्रभु यीशू इस लिये क्रूश पर चढाया गया कि वह ईश्वर का पुत्र मसीह था। वह इस लिये मनुष्य बना कि वह दु ख उठाके मनुष्यों को बचावे। वह मनुष्यों के लिये मरा। और कि ऐसा न हो कि हम इस में दुबधा करें कि वह सभों के लिये मरा उस ने फिरके कहा "यदि मैं तुम से कहूं कि मैं ईश्वर का पुत्र हूं तो तुम प्रतीति न करोगे परन्तु अब से मनुष्य का पुत्र सर्बशक्तिमान ईश्वर के दहिने हाथ बैठेगा"। "अब से" न केवल पिछले दिन में मसीह महिमा के सिंहासन पर बिराजमान होके अपने बैरियों पर प्रगट करेगा कि मै योशू नासरी जो हू सो जगत का सर्बसामर्थी न्यायकर्त्ता हूं। जो उस ने तब कहा उसे उस ने पूरा किया। उस ने मुर्दों में से जी उठके अपने पराक्रम का राजदण्ड बढाया और अपने शत्रुओं के मध्य में शासन करने लगा। मसीह के प्रेरितों के उपदेश के द्वारा मसीही मण्डली स्थापित हुई और सारी पृथिवी पर फैल गई। आरभ ही से मण्डली के बैरी उस को रोकते चले आये हैं पर उन का सारा परिश्रम व्यर्थ ही व्यर्थ हुआ। मसीह का कोप यरूशलेम के निवासियों पर भडका और वे उस के हाथ से अपने पापों का यथार्थ दण्ड भुगतने पाये। मसीह के दूसरे आगमन के चिन्ह आरम्भ से दिखाते चले आये हैं। "देखो वह मेघों पर आता है" इस बचन से सताई हुई और क्लेशित मण्डली का हियाव हर समय बन्धाया गया है। अब से हमारा प्रभु बादलों पर आवेगा और जिन लोगों ने उस को छेदा और तुच्छ जाना है वे उस को आते देखकर भय खावेंगे। पर जो लोग प्रभु यीशू पर बिश्वास रखते है वे उन्हा के आने के कारण आनन्द करेंगे। वे लोग क्या ही धन्य हैं जिन की मनरूपी आंखें पवित्रात्मा से प्रकाशित भई कि वे स्तिफान के समान स्वर्ग को खुले हुए और मनुष्य के पुत्र को ईश्वर की दहिनी ओर खड़े हुए देखते हैं। भक्तिहीन और अविश्वासी लोग मसीह की प्रभुता को अस्वीकार करते तौभी वह गुप्त रीति से प्रभुता करता हुआ जगत को अपनी इच्छा के अनुसार चलाता है। जो लोग उस का साम्हना करते वे उस के पावों की पीढी बनाये जावेंगे। वे उस से ठट्ठा करके कहते है कि यीशू नासरी हम पर प्रभुता करने न पावेगा पर एक दिन उन को मालूम होगा कि मनुष्य बिना दण्ड पाये उस का ठट्ठा मार नही सकता है क्योंकि वह हर एक जन को उस के कर्मों के अनुसार बदला देवेगा॥

प्रभु यीशू के अच्छे स्वीकार को सुनकर वैरियों ने उस को ईश्वर-निन्दक ठहराया। लोग उस पर थूकने और उसे मारने लगे। वह बिन कुडकुड़ाये और बिना धमकी दिये इस बुरे व्यवहार को सहता रहा। उस को मालूम था कि मेरे पिता की इच्छा है कि मैं दुःख और अपनिन्दा को सहके महिमा में प्रवेश करूं। इन बातों पर ध्यान करते करते हम को कुछ मालूम होता है कि उस ने हमारे लिये क्या किया और क्या सहा है। जो आदमवंशियों में सब से सुन्दर है उस के सौम्य चिहरे पर उन्हों ने थूका और थपेडे मारे। उस ने यह सब इस लिये सहा कि वह हमारे चिहरों को सब पापरूपी कलंकों से शुद्ध करके अपने चिहरे के समान सुन्दर और चमकनेवाले बनावे। आमेन॥

पितर का प्रभु यीशू से मुकर जाना।

और जिन्हों ने यीशू को पकडा था वे उस को कयाफा नाम प्रधान याजक के पास ले गये जहां शास्त्री और प्राचीन एकट्ठे हुए थे। पर पितर दूर से उस के पीछे पीछे प्रधानयाजक के भवन लों चला गया और भीतर जाके अन्त देखने को पियादों के संग बैठ गया। पितर बाहर आंगन में बैठा था और एक दासी ने उस के पास आके कहा तू भी यीशू गालीली के संग था। उस ने सभों के साम्हने मुकरके कहा मैं नहीं जानता कि क्या कहती है। और जब डेवढ़ी में आया तो दूसरी ने उसे देखा और उन से जो वहां थे कहा कि यह भी यीशू नासरी के संग था। और वह किरिया खाके फिर मुकर गया कि मैं उस मनुष्य को नहीं जानता हूं। थोडी बेर पीछे जो वहां खड़े थे उन्हों ने आके पितर से कहा सचमुच तू भी उन में से है क्योंकि तेरी बोली तुझे प्रगट करती है। तब वह धिक्कारने और किरिया खाने लगा कि मैं उस मनुष्य को नहीं जानता। और तुरन्त कुक्कुट बोला। और पितर ने यीशू का बचन जो उस ने उस से कहा था कि कुक्कुट के बोलने के आगे तू तीन बार मुझ को मुकरेगा स्मरण किया। और वह बाहर जाके बिलक बिलक रोया। मत्ती २६ : ५७, ५८ और ६९–७५। फिर मार्क १४ : ५४ और ६६–७२ लूक २२ : ५४–६२ और योहन १८ : १५–१८ और २५–२७ को भी देखो॥

ध्यान करके मसीह के दुःखभोग की कथा के पढ़ने से मालूम होता

है कि पितर हन्ना और कयाफा के दरबारों में मसीह से मुकर गया। जिस शिष्य ने प्रभु से कहा था कि मैं तेरे संग मरने को तैयार हूं जब उस का गुरु अपनिन्दित होने लगा और लोग उस से ठट्ठा करने और उसे घूसे मारने लगे तब वह तुरन्त उस से मुकर गया और सभों पर प्रगट किया कि मैं यीशू नासरी का चेला होने नहीं चाहता हूं ॥

पितर का प्रभु यीशू से मुकर जाना इस रीति से हुआ। पितर प्रभु के संग महायाजक के भवन में आया था। योहन के वृत्तान्त से जान पड़ता है कि हन्ना और इस का ससुर कयाफा एक ही भवन में रहते थे इस लिये पितर प्रभु के मुकद्दमे के आरंभ से लेके उस के अन्त तक उसी आंगन में रहा जिस में उन्हों ने कोयले की आग सुलगाई थी। जब प्रभु यीशू हन्ना के साम्हने खड़ा था तब पितर पहिली बेर उस से मुकर गया। फिर जब प्रभु बान्धा हुआ कयाफा के पास पहुंचाया जा रहा था और उस को भोर तक नीचे आंगन में खड़ा होना पड़ा तब पितर प्रभु के निकट खड़ा हुआ दूसरी बेर उस से मुकर गया और घड़ी भर पीछे उस ने तीसरी बेर प्रभु का इनकार किया। उस समय लोग प्रभु से ठट्ठा कर रहे थे पर प्रभु ने फिरके पितर पर दयादृष्टि कर उसे चिताया। प्रभु के कृपामय चिहरे को देखकर वह चेत गया और बाहर जाके बिलक २ रोने लगा ॥

लिखा हुआ है कि पितर दूर से प्रभु यीशू के पीछे २ प्रधानयाजक के भवन लों चला गया। वह भी उन में से एक था जो बारी में से भाग गये थे। उस ने अपनी इस करनी से लज्जित होके सोचा होगा कि मैं प्रभु के पीछे चलके दिखाऊंगा कि मैं ऐसा भयमान और दुर्बल जन नहीं हूं जैसा उस ने मेरे विषय कहा था। चाहिये था कि वह एकान्त में जाके अपने घुटने टेककर प्रभु से बिनती करता कि हे प्रभु मुझे परीक्षा से बचा। उस को सोचना था कि जो वचन प्रभु ने मेरे भाग जाने के विषय कहा सो पूरा हुआ सो उस से मुकरना भी मुझ से होगा। पर उस ने अपनी निज शक्ति पर भरोसा किया। उस का प्रेम जो वह मसीह से रखता था सो इस अशुद्ध मनसा से कलंकी था कि उस ने चाहा कि मैं प्रभु पर प्रगट करूंगा कि मैं पितर जो हूं सो उस का साहसी और निर्भय शिष्य हूं। प्रभु ने मेरा नाम पितर अर्थात् चटान रखा सो मैं अपने को चटान सरीखा दृढ़ और अचल चेला दिखाऊंगा। पर सच पूछो तो उस का मन शान्त नहीं था। वह प्रभु के पीछे दूर से हो लेता था

पर वह अपने भय के दवाने की चेष्टा करके सोचता था कि अभी भय-मान होना अत्यन्त बुरा है। उस के समान हम भी भूल करते हैं जब हम अपने अच्छे इरादों और सुकर्मों पर भरोसा रखते हुए सोचते हैं कि हम भाग्यमान होवंगे। चाहिये था कि पितर प्रभु के इस वचन का विश्वास करके कि "अब तू मेरे पीछे नही आ सकता" उसे मानता तो उस का भला होता। पर इस वचन पर चलने के बदले वह अपने मनमता पर चला और यह उस के गिरने का कारण हुआ। "यदि कोई रात को चले तो ठोकर खाता है क्योंकि उजियाला उस में नही है"। यह पितर की दशा थी क्योंकि उस ने मसीह के वचन में दुवधा करके अपने को ईश्वरीय ज्योति से अलग किया। उस ने ईश्वर के वचन को अपने पांव धरने के लिये दीपक और अपनी डगर के लिये उजियाला ठहरने नहीं दिया॥

एक दूसरा शिष्य भी प्रभु के पीछे प्रधानयाजक के भवन लों चला वह शिष्य योहन था। वह महायाजक का जान पहिचान था और आंगन के भीतर गया। अनुमान होता है कि योहन मछी पकड़के याज-कीय भवन में वेचा करता था और वहां के सेवक उस से महायाजक की अपेक्षा अधिक जान पहिचान रखते थे। उन सभों को मालूम तो था कि योहन भी यीशु नासरी का चेला है तौभी किसी ने उस से कुछ नहीं कहा। वह उसी जगह में हाज़िर था जिधर वैरी लोगों ने उस के सगी चेले को छोड़के परीक्षा में गिराया। इस का कारण यह था कि योहन का मन पितर का सा न था। उस ने दीन होके और प्रभु पर भरोसा करकर भवन में प्रवेश किया था परन्तु पितर ने अपनी निज शक्ति पर भरोसा करके सोचा कि मैं अपने को वड़ा साहसी दिखाऊंगा। डर का अनुमान विना किये योहन द्वारपालिन से पितर के विषय वात करके उसे भीतर ले आया। शैतान इस से प्रसन्न हुआ होगा। यदि हमारी चाल ईश्वर के वचन के अनुसार न होवे तो हमारे सब से प्रिय मित्र हमारे लिये जाल ठहरेंगे। अब पितर आंगन में आया पर जैसे जब नूह जहाज पर चढ़ा तैसे परमेश्वर ने नहीं वल्कि शैतान ने उस के पीछे द्वार को वन्द किया। थोडी देर के पीछे वह उन सेवकों के पास गया जो कोयले की आग के आसपास वैठे थे। आग तापना पितर को अवश्य न था क्योंकि मछवा होके उस ने ठंड को सहना सीखा था। किसी अध्यापक ने कहा है। कि "वह आग तापता था क्योंकि उस का

बिश्वास ठंडा होने लगा"। किसी दूसरे ने कहा है कि "गत्समनी की बारी में सोते समय उस के मन को ठंड लगी"।

अनुमान होता है कि पितर ने नौकरों से सुनने चाहा कि प्रभु के मुकद्दमे का कैसा अन्त होगा। प्रभु ने कहा था कि "मैं दुःख उठाके मार डाला जाऊंगा" पर पितर ने इस बचन का बिश्वास नहीं किया बल्कि सोचा कि यह कभी नहीं होने का। पर जब वह देखने लगा कि प्रभु का बचन पूरा होने पर है तब वह ठोकर खाने लगा। बिश्वासी लोग अचांचक बड़े पापों में नही गिरते हैं परन्तु वे निश्चिन्त होने और परमेश्वर के बचन में दुवधा करने लगते और होते २ पाप में फंस जाते हैं। पितर का यही हाल हुआ था॥

निदान द्वारपालिन ने पितर पर दृष्टि लगाकर उस से कहा "क्य तू भी इस मनुष्य के शिष्यों में से एक है"। ईश्वर के लोग एक दूसरे को पहिचानते तो हैं पर संसार के लोग भी उन्हें जानते हैं सो वे छिप नहीं सकते। पितर चुप रहा पर यदि वह बाहर चला जाता तो अच्छा करता। फिर उसी स्त्री ने दृढ़ता से उस से कहा कि यह भी यीशू नासरी के संग था और वह निकट खड़े हुए लोगों से कहने लगी यह उन में से एक है। ऐसा जान पड़ता है जैसे दासी ने पितर को जोखिम में डालने नहीं चाहा बलिक पितर को देखके उस के मन में उस पर दया आई और वह मानो यह कहती है कि हे पितर मुझको बहुत बुरा लगता है कि तू और तेरा भाईबन्धु योहन तुम दोनों उस तुच्छ और निकम्मे यीशू नासरी के संगी हो गये हो। परन्तु पितर स्त्री का बचन सुनके डर गया और मुकरने और कहने लगा "मैं नही हूं"। हां उस ने अचंभित होके और न समझने का बहाना करके कहा "मैं नही जानता और नहीं समझता हू कि तू क्या कहती है।" जब वह यह बचन बोल चुका था तब उस का मन मानो बर्छी से छिद गया। नौकरों के बीच में बैठना उस को असहनयोग्य जान पड़ा इस लिये वह उन को छोड़के फाटक की ओर चला गया। उधर पहुंचते ही उस ने कुक्कुट की बोल सुनी। उस ने इस का अर्थ समझा पर उसी क्षण में शैतान ने दूसरी दासी के द्वारा उसे गिराया। इस दासी ने कहा "यह भी यीशू नासरी के संग था"। फिर थोड़ी देर पीछे किसी सेवक ने उस से कहा "तू भी उन में से एक है"। तब पितर समझने लगा कि मैं नष्ट भया नष्ट। यह सोचकर वह आग के पास लौटके तापने लगा। पर अब सब नौकरों ने मिलके उस से

कहा "तू सचमुच उन में से है क्योंकि तू गालीली है"। "वह उन को सुनके धिक्कार करने और किरिया खाने लगा कि मैं उस मनुष्य को नहीं जानता हूं।" उस ने पहिले मसीह का आदर कर कहा था "तू जीवते ईश्वर का पुत्र मसीह है"। वह अब अपने सत्यानाश की ओर दौड़ता चला जाता है। जब वह नौकरों के बीच बैठा रहा यदि वह तब ही प्रभु की ओर देखके उस से बिनती करता तो क्या ही अच्छा होता क्योंकि तब ही प्रभु उस के पांव पापरूपी जाल से निकालता। पर शैतान ने उसे अंधा कर पश्चात्ताप करने से रोका। अनुमान होता है कि पितर ने सोचा कि मैं झूठ बोलने से अपने को इन दुष्ट लोगों के हाथ से छुडाऊंगा। मेरे स्वीकार करने से प्रभु को लाभ नहीं पहुंचेगा बल्कि मैं केवल अपने को क्लेश और दुःख में डालूंगा। इस लिये उस ने कपट का भेष धारण कर प्रभु की ऐसी चर्चा किई जैसे कि उस ने उस के विषय कभी नहीं सुना होगा। उस ने मानो कहा कि मैं इस नीच भरमानेहारे को नहीं जानता हूं। पर प्रभु यीशु निकट खड़ा था और पितर ने देखा कि वह मार खाता और ठट्ठों में उड़ाया जाता है तौभी वह उदास नहीं भया। परन्तु बैरियों ने उस को न छोड़ा बल्कि किसी ने उस से कहा "तू सचमुच उन में से है क्योंकि तू गालीली है। हां तेरी बोली तुझे प्रगट करती है। एक दूसरे जन ने जो उस मनुष्य के कुटुम्ब का था जिस का कान पितर ने काट डाला था कहा क्या मैं ने तुझे बारी में उस के संग नहीं देखा"। उस समय प्रभु ने पितर को और दूसरे शिष्यों को अपनी शक्ति के बचन के द्वारा बचाया था। पर प्रभु के इस उपकार को बिसरा के पितर ने फिर किरिया खाके कहा मैं इस जन को नहीं जानता हूं। मैं इस यीशू मसीह नाम राजा की प्रजा नहीं हुआ चाहता हूं। हाय पहिले यहूदा फिर गया पीछे वह शिष्य शैतान के जाल में फस गया जो मसीह के मान लेने में सभों से दिलेर था। इस से प्रभु की बड़ी अपनिन्दा हुई। प्रभु ने कहा था कि "जो कोई मनुष्यों के आगे मुझ से मुकरे उस से मैं भी अपने पिता के आगे जो स्वर्ग में है मुकरूंगा"। इस बचन के अनुसार पितर नरक के दण्ड के योग्य ठहरा॥

पितर के इस अत्यन्त बड़े पाप में गिरने का कारण जो था सो घमंड था। वह घमंडी होके अपनी निज शक्ति और भक्ति पर भरोसा करने लगा। उस ने तीन एक बरस के पहिले मान लिया था कि मैं इतना बड़ा पापी हूं कि मैं प्रभु के समीप रहने के योग्य नहीं हूं। तौभी वह

जैसा चाहिये तैसा अपनी स्वाभाविक भ्रष्टता से जानकार नहीं था वल्कि सोचता था कि मुझ में कुछ भला तो है। मैं स्थिर बना रहूंगा॥

पितर के पाप में गिरने से हमें सीखना चाहिये कि हमारे शरीर में कुछ भला नहीं है परन्तु यदि प्रभु हमारी रक्षा न करे और हमें दीन न बनावे तो हम पितर के समान बडे पाप में गिरेंगे। पितर अपने निज बल से शैतान का साम्हना नहीं कर सका तो हम कैसे कर सकेंगे। जब २ यह सोच हमारे मन में उत्पन्न होता है कि हम कुछ कर सकते हैं तब २ हमें डरना चाहिये क्योंकि तब ही हम किसी बड़े पाप में गिरने पर हैं। जब २ हम सोचने लगते हैं कि हम बलवन्त हैं और अपने भाइयों की अपेक्षा पवित्रता में अधिक बढ़ गये हैं तब २ हमें पितर के पाप में गिरने को स्मरण रखके डरना चाहिये। जब २ हम दहिनी वा बाएं मुड़के ऐसे पथों पर चलने लगें जिन पर परमेश्वर का वचन हमारे पांव धरने के लिये दीपक ठहर न सके तब २ डरके बुरे मार्ग को झट छोड़ना चाहिये अवश्य है कि हम दीन होवें और अपनी २ कमर सच्चाई से कसकर सचेत रहें ऐसा न हो कि हम पाप में गिरके नष्ट होवें। हां जब २ हम वचन वा कर्म करके प्रभु से मुकर गये हों तब २ चाहिये कि हम तुरन्त घुटने टेकके और गिड़गिड़ाकर प्रभु से क्षमा मांगें। जैसे शैतान ने पितर के नष्ट करने की चेष्टा किई तैसे वह यत्न किया करता है कि किसी न किसी रीति से हर एक बिश्वासी को बिगाडके नाश करे। यदि हम मसीह से और उस के वचन से थोडा सा भी लज्जित होवें तो हमारा प्रेम ठंडा होने लगेगा और थोड़ी देर में हम मसीह से मुकरेंगे। जो बिश्वासी जान बूझकर कोई पाप करे वह मसीह से मुकर जाता है। हां पाप करने से वह मानो कहता है कि मैं मसीह को नहीं जानता हूं॥

"वह कह ही रहा था कि इतने में कुक्कुट बोला"। कुक्कट का बोल सुनके पितर चुप हो गया। वह कौन है "जो रात में गीत करवाता है" क्या तुम उस को पहिचानते हो। पितर ने उस का बोल पहिचाना और वह अपनी पापरूपी भारी नींद से जाग उठके बिलक २ रोने लगा। उस के जागने का विशेष कारण यह था कि "प्रभु ने फिरके पितर पर दृष्टि किई। यदि प्रभु उस पर दयादृष्टि न करता तो वह सोच सकता कि मुर्गा भोर भोर तो बोलता है। उस के बोल का कुछ अर्थ नहीं है। प्रभु की प्रेममय दृष्टि के साम्हने पितर का कठोर मन फट चला। जो दृष्टि

उस पर लगी सो महिमा के प्रभु की दृष्टि थी । उस का पूर्ण पवित्र चिहरा लाज और निन्दा से ढका था । उस ने पितर से अति बड़ा प्रेम रखके और उस पर दयादृष्टि कर उसे शैतान के हाथ से बचाया । प्रभु ने उस पर दृष्टि कर माने। उस से कहा हे प्रिय पितर जो लोग मुझ को नहीं जानते वे मुझे घूसे मारते हैं पर तू जो मेरा मित्र है यह कहके कि मैं उसे नहीं जानता हूं मेरे मन में बडी दुःखदाई चोट लगाता है । तू मुझे शोक से भर देता है । तेरी दुर्दशा को देखके मेरा मन भर आता है । हां मैं तुझ पर दया करने के लिये तरसता हूं । जब प्रभु की आंख का तेज पितर के मन को लगा तब वह प्रभु के इस वचन पर सोचने लगा कि "मैं तुझ से सच कहता हूं कि इसी रात कुक्कुट के बोलने के पहिले तू तीन बार मुझ से मुकरेगा । वह बाहर जाके और अपना मुंह ढांककर बिलक २ रोने लगा । पितररूपी चटान जिस में प्रभु की प्रेममय दृष्टि लगी थी अब पानी बहाने लगी । उस ने बहाना करके अपने पाप को छिपाने नही चाहा बल्कि उस ने आंसू बहा बहाके मान लिया कि मैं नरक के दण्ड के योग्य हूं । उस ने दयासागर प्रभु यीशू के अपार प्रेम पर सोचते हुए आंसू बहाये । वह इस कारण से रोया कि उस ने उसी को उदास किया था जिस ने उस को अत्यन्त बडा प्रेम दिखाया था । पितर का शोक जो था सो ईश्वर के मन के अनुसार था और इसी लिये वह यहूदा के समान दुबधासागर में नही डूब गया बल्कि उस ने प्रभु की ओर फिरके शान्ति पाई । अपने जी उठने के पीछे प्रभु ने सब से पहिले पितर से कहलाया कि मैं जी उठा हूं । एक पुरानी कथा है कि जिस रात से पितर प्रभु से मुकर गया उसी रात से वह अपने शेष जीवन को रात-रात तीसरे पहर से जागता रहा और उस की आंख में एक आंसू सदा चमक रहा था । परन्तु इस से बढ़कर धर्मपुस्तक वर्णन करती है कि जब पितर दीन हो गया तब उस पर यह बड़ा अनुग्रह हुआ कि वह प्रेरितों में से सब से पहिले लोगों को क्रूश पर मारे हुए और जी उठे हुए मसीह की कथा सुनाने पाया । वह मसीह के कारण दुःख उठाने और मार खाने के योग्य गिना गया । उस ने अपने को बड़ा और बलवन्त समझके महायाजक के भवन के आंगन में प्रवेश किया पर वह अपनी समझ में अति छोटा और दुर्बल वहां से निकला । उस की पत्री से प्रगट होता है कि जब से प्रभु ने उस को इस बडे पाप से शुद्ध किया तब से वह प्रभु से अति तप्त प्रेम रखता था । उसी दिन से वह केवल

प्रभु यीशू को अपने सुख का मूल जानता और प्रभु के धीरज और सहनशीलता को अपने त्राण का कारण समझता था।

किसी ने कहा है कि जो कोई मन ही मन मसीह से प्रेम रखता है उस के मन में मसीह का रूप बना रहता है। जब मैं मसीह से विनती करता तब उस को ऐसा सोचता हूं जैसा वह दिखाता था जब वह यह वा वह काम करता रहा। मैं उस को तब ही देखता हूं जब उस ने कनानी स्त्री के विश्वास के कारण आनन्द किया जब छोटे बालकों को गोद में लेके प्यार किया जब वह यरूशलेम के ऊपर रोया जब उस ने पश्चात्तापी चोर से कहा "आज तू मेरे संग स्वर्ग लोक में होगा"। हां मैं उसे ऐसा देखता हूं जैसा वह उस समय दिखाई दिया जब उस ने फिरके पितर पर दृष्टि किई॥

हे पापी और नि पश्चात्तापी मनुष्य क्या तू प्रभु की कृपामय दृष्टि को सहके अधिक कठोर बनता जाता है। आज प्रभु तेरी ओर हाथ फैलाके तुझ पर दयादृष्टि करता है। यदि व्यवस्था तेरे कठोर मन को चूर्ण नहीं कर सके तो प्रेमस्वरूप और क्रूश पर चढ़ाये हुए मसीह को ध्यान से देख ले। मसीह की आंखों की दृष्टि ईश्वरीय उस आग से भरी है जो जलती २ नहीं बुझ जाती है। इस का विश्वास कर कि मेरे पापों के कारण दयासागर प्रभु यीशू उदास और दुःखी और क्लेशित था पर इस का विश्वास भी कर कि वह आज मुझ अधम और घिनौने पापी पर कृपादृष्टि करके मेरे सब पापों को क्षमा करने चाहता है तो तुझ को रोना और मन ही मन पाप से पछताना पड़ेगा। हे भाई मसीह को मन में आने और सच्चा बिश्वास उत्पन्न करने दे। पितर के प्रभु की ओर फिरने से यह सीखना चाहिये कि बिना बिश्वास किये सच्चा पश्चात्ताप करना अनहोना है और ईश्वर का अनुग्रह बिना पाये बिश्वास करना असम्भव है। यदि प्रभु यीशू पितर के लिये बिनती न करता कि उस का बिश्वास जाता न रहे तो वह नष्ट होता और यदि मसीह उस समय उस पर दयादृष्टि न करता जिस समय उस का बिश्वासरूपी दिया बुझने पर था तो वह रो रोके सच्चा पश्चात्ताप कभी न करता॥

परमेश्वर का धन्यबाद होवे कि जैसा उस ने पितर पर दृष्टि किई तैसा वह दिन प्रतिदिन हम पर देखा करता है जिस्तें हम उस की ओर फिरके मुक्ति प्राप्त करें। आमेन॥

यहूदा का अन्त ।

जब भोर हुआ तब सब महायाजकों और लोगों के प्राचीनों ने आपस में यीशू के विरुद्ध परामर्श किया कि उस को घात करावें और उन्हों ने उसे बांधा और ले जाके पिलात अध्यक्ष को सौंप दिया ॥

जब उस के पकडवानेहारे यहूदा ने देखा कि वह बधके योग्य ठहराया गया तब पछताके वे तीस रुपैये महायाजकों और प्राचीनों के पास फेर लाया और कहा मैं ने निर्दोष लोहू के पकडवाने में पाप किया। उन्हों ने कहा हमें क्या तू जान। और वह उन रुपैयों को मन्दिर में फेंककर चला गया और जाके अपने को फांसी दिई। पर महायाजकों ने उन रुपैयों को लेके कहा इन्हें मन्दिर के भडार में डालना उचित नहीं है क्योंकि यह लोहू का दाम है। तब उन्हों ने आपस में परामर्श करके उन से परदेशियों को गाडने के लिये कुम्हार का खेत मोल लिया। इस कारण वह खेत आज लों लोहू का खेत कहलाता है। तब जो वचन यिर्मयाह नबी के द्वारा कहा गया था सो पूरा हुआ कि उन्हों ने तीस रुपैयों को अर्थात् उस मुलाये हुए के मोल को जिसे इस्राएल के सन्तान में से कितनों ने मुलाया था ले लिया और जैसे प्रभु ने मुझे आज्ञा दिई थी उन को कुम्हार के खेत के लिये दिया। मत्ती २७ : १-१० (मार्क १५ : १ लूक २३ : १ योहन १८ : २८) ॥

जिस समय जगत्राता प्रभु यीशू मसीह दुःख उठाता रहा उस समय उस के शिष्यों में से पितर और यहूदा ने अपने विश्वासघात के कारण प्रभु को बहुत दुःखाया और क्लेशित किया। पितर पर प्रभु ने कृपादृष्टि करकर पापरूपी गढ़े से निकाला। प्रभु यहूदा को बचा न सका। बारी में जब यहूदा पकडनेवालों के आगे चलते चलते प्रभु के पास आया तब प्रभु ने उस पर भी कृपादृष्टि किई पर यहूदा बिलकुल कठोर और आत्मिक अंधा हो गया था कि वह न प्रभु की दृष्टि में इस के प्रेम को देख सका न प्रभु के इस वचन में कि "हे यहूदा क्या तू मनुष्य के पुत्र को चूमा लेके पकडवाता है" प्रेम की वाणी सुन सका। पितर का मन मसीह के कोमल नेत्र की दृष्टि से ऐसा छिद गया कि उस ने प्रभु की ओर फिरके मुक्ति पाई। मसीह के प्रेममय वचन से यहूदा को कुछ लाभ नहीं प्राप्त हुआ क्योंकि वह विश्वास कर नहीं सका। उस का पश्चात्ताप निष्फल

होके निराशता में बदल गया। पितर के मन में वह शोक कार्य्यकारी था जो ईश्वर की इच्छा के अनुसार है उस से उस के मन में वह पश्चात्ताप उत्पन्न हुआ जिस करके उस का त्राण हुआ पर यहूदा का शोक जो था सो संसार का था इस लिये उस से उस को मृत्यु उत्पन्न हुई। पितर बाहर जाके बिलक २ रोया पर यहूदा ने जाके अपने को फांसी दिई॥

चार एक बजे भोर को महायाजक और प्राचीन लोग इस मतलब से एकट्ठे हुए कि वे आपस में परामर्श करें कि हम लोग किस रीति से यीशू नासरी को वध करावेंगे। जब से यहूदी लोग रोमियों के अधीन हो गये तब से वे किसी मनुष्य को प्राणदण्ड दे नहीं सके। अवश्य था कि रोमी गवर्नर प्राणदण्ड की आज्ञा को मंजूर करे। उन्हों ने ठाना कि हम यीशू पर बलवे का दोष लगावेंगे। वे उसे बंधवाके गवर्नर के भवन लों ले गये और पोन्त्य पिलात नाम रोमी गवर्नर के हाथ में सौम्प दिया जिस्तें यह उसे प्राणदण्ड के योग्य ठहरावे। प्रभु ने पहिले शिष्यों से कहा था कि "मनुष्य का पुत्र अन्यदेशियों के हाथ सौम्पा जायगा"। प्रभु यीशू मसीह उस समय के सब लोगों से तुच्छ किया गया। "जगत ने उस को नहीं जाना"। हां "उस के निज लोगों ने उसे ग्रहण न किया"। उन्हों ने अभक्ति अरु और पापों में अत्यन्त लों बढ़के अपने राजा हां अपने ईश्वर और त्राणकर्त्ता को तुच्छ जानके त्याग दिया था तौभी वह उन से प्रेम रखता हुआ उन पर दया करने चाहता था। योहन उन की झूठी और कपटरूपी भक्ति का वर्णन करके कहता है कि मसीह के दोषदायक आप गवर्नर के भवन के भीतर न गये इस लिये कि अशुद्ध न होवें परन्तु निस्तारपर्व्व का भोजन खावें। उन्हों ने भक्ति का रूप धारण करके लोगों पर प्रगट किया कि हम बड़े धर्मात्मा हैं पर उन का मन कपट और अधर्म से भरा हुआ था। हे पढ़नेहारो क्या तुम जानते हो कि वर्त्तमान समय के लोगों में से कौन २ लोग इन कपटी फरीसियों का सा अशुद्ध मन रखते हैं। वे लोग उन के समान हैं जो उपवास करके पाप से बिना पछताये प्रभु की पवित्र बियारी के भागी हुआ करते हैं। ऐसे लोग न केवल रोमी कलीसिया में बल्कि प्रोटेस्टट कलीसियाओं में भी पाये जाते हैं॥

जब यहूदा ने देखा कि प्रभु यीशू प्राणदण्ड के योग्य ठहराया जाके अन्यदेशियों के हाथ सौम्पा गया तब उस का विवेक मानो नींद से जाग उठा और वह अत्यन्त लों भय खाने लगा। उस ने प्रभु को पकड़वाके

नाश कराने चाहा तो था क्योंकि वह उस से प्रेम नहीं रखता था। उस के मृदुभाव गुरु के प्रेम के कारण वह दु खित था इस लिये उस ने सोचा था कि मैं प्रभु को वैरियों के हाथ पकडवाके शान्तमन होऊंगा। उस को प्रभु के इस वचन का स्मरण अब आया कि ' हाय उस मनुष्य पर जिस से मनुष्य का पुत्र पकडवाया जाता है यदि उस मनुष्य का जन्म न होता तो उस के लिये भला होता "। इस बचन को स्मरण करके वह नरकवासियों के समान पीडित और क्लेशित भया। मृत्यु के भय ने उसे घेरा। "वह पछताया"। पर वह किस से पछताया। क्या वह इस कारण से पछताया कि मैं ने अपने परममित्र को अपने पांव के नीचे रौन्दके उस के प्रेम को तुच्छ जाना था क्या वह इस लिये शोकग्रस्त हुआ कि उस ने परमेश्वर का पाप किया था। नहीं। वह अपने भयानक और बडे पाप के कारण क्लेशित नही था परन्तु वह पाप के असहनयोग्य दण्ड से डरके पीडित था। उस को मालूम था कि मैं नरक से नहीं बचूंगा वल्कि मैं अपने घिनौने और अति वुरे कर्म का यथार्थ दण्ड भुगतने पाऊंगा। वह मसीह के पकडवाने से न पछताया वल्कि इस लिये शोकित था कि मैं इस करणी के कारण नरक की आग में डाला जाऊगा। उस ने पाप से नहीं वल्कि मन के क्लेश और सकट से छुटकारा पाने चाहा इस लिये वह प्रभु यीशू के पास क्षमा पाने को नही गया परन्तु महायाजकों के पास दौड़ता चला गया जिस्ते वह उन तीस रुपैयों को लौटा देवे। उस ने उन तीस रुपैयों को फेंक दिया पर अपने वुरे और शैतानी मन को न छोडा। उस ने मान तो लिया कि मैं ने निर्दोष लोहू को पकडवाया पर वह पाप में वना रहा क्योंकि उस ने अपने निर्दोष गुरु से प्रेम न रखा। यदि यहूदा महायाजकों के पास चले जाने के वदले प्रभु यीशू के पास चला जाता तो वह उस से न कहता कि मुझ को क्या तू जान क्योंकि जो अनुग्रह मसीह यीशू में है सो यहूदा के पाप से अत्यन्त वड़ा है। यदि यहूदा विश्वास से मसीह की ओर फिरता तो मसीह का निर्दोष लोहू उस को सब पाप से शुद्ध करता। महायाजकों की निन्दा के वदले उस को मसीह से पापों की क्षमा धर्म और पवित्रता मिलती। पर यहूदा निरुपाय था। वह जानबूझकर पवित्रात्मा का साम्हना करते करते कठोर हो गया था। वह सोचता था कि मैं प्रभु से प्रेम तो रख सकता क्योंकि वह मुझ से प्रेम रखता था पर इस सोच से वह अधिक क्लेशित हुआ क्योंकि वह जानता था कि अब ईश्वर का आत्मा मुझ से

अलग हो गया इस लिये मैं अब प्रभु से प्रेम नहीं रख सकता हूं। जब कि उस की ऐसी बुरी दशा हुई कि प्रभु के प्रेम से उस के मन में असर न हो सका तो वह पितर के समान अपने पापों के कारण बिलक बिलक रो न सका। वह अब केवल शैतान का शब्द सुन सका इस लिये उसने शैतान की आज्ञा सुनके अपने को फांसी दिई। यहूदा ने सोचा था कि प्रभु यीशू के पकड़वाने से मैं धनवान हो जाऊगा और सुख के साथ अपने शेष जीवन को बिताऊगा पर वह धोखा खाके अत्यन्त कंगाल हुआ क्योंकि वह ईश्वर रहित और सहायक और मित्र रहित था। उस के पास न कोई धन था न उस के लिये कोई विश्रामस्थान था जिधर उस का क्लेशित आत्मा विश्राम पावे। सारी पृथिवी और सारा स्वर्ग दोनों उस की समझ में सुनसान और भयानक दिखाई दिये। हां उस ने निराश होके अपने को फांसी दिई। जो मनुष्य मसीह से अलग हो गया सो कभी आनन्दित न हो सकता इसी लिये यहूदा निराश होके आत्मघाती हुआ। मरण के पीछे उस का शरीर बीच में फटकर दो टुकड़े हो गया। पर उस का अभागा आत्मा देह को छोड़के कहां चला। लिखा हुआ है कि वह अपने स्थान को चला गया अर्थात् उस स्थान को चला जिसे यहूदा ने पाप करने से अपने लिये कमाया था। उस के आत्मा को न पृथिवी पर और न स्वर्ग में आनन्द और सुख प्राप्त हो सका क्योंकि स्वर्ग यीशू मसीह के स्तुतिगान से गूंज रहा है और जो कुछ पृथिवी पर है सो अब यहूदा की समझ में निकम्मा है इसी लिये केवल नरक उस के आत्मा के लिये योग्य स्थान ठहरता है। यहूदा का सा अन्त उस का अन्त भी होगा जो मसीह की दरिद्रता और दीनता से ठोकर खाता है॥

हे मसीह के चेलो इस बात पर भली भांति सोच करो कि पितर प्रभु के अनुग्रह के कारण बच गया पर यहूदा पर प्रभु के अनुग्रह का कुछ प्रभाव न हुआ बल्कि वह अनुग्रह का साम्हना कर अपने स्थान को चला गया। प्रभु यीशू के संग दो चोर अपने २ क्रूश पर चढ़ाये गये। इन में से एक जन पाप से पछताके प्रभु की दया के कारण प्रभु के संग स्वर्गलोक को चला गया पर दूसरा अन्त तक कठोर बना रहा और नरक की पीड़ा में डाला गया। जो मनुष्य पितर के सुधर जाने से यह अनुमान करे कि जो चाहे सो मरण के आगे प्रभु की ओर फिरेगा वह यहूदा के अन्त को बिचारके थरथरावे। हे भाई यदि न [illegible]

फिरने में देरी करे तो जान कि अन्त में तू यहूदा के समान निराश होके इस लोक से कूच करने पावेगा। यदि तू जानबूझके और सोचविचार करके पाप करेगा तो होते होते ऐसा अधा हो जायगा कि तू यहूदा के समान देख न सकेगा कि प्रभु दया करने को तुझ पर दृष्टि करता है। जो मसीही पाप करता जाता है वह यहूदा के समान निराश होके नष्ट होगा "जब लों आज कहावता है प्रतिदिन एक दूसरे को समझाओ ऐसा न हो कि तुम में से कोई जन पाप के छल से कठोर हो जाय"। हे भाइयो पितर का शोक जो ईश्वर की इच्छा के अनुसार था और यहूदा का शोक जो संसार का था इन दोनों में जो भेद है उसे भली भांति बूझ लेओ। पितर पाप से घिनाता और इस कारण से शोकित था कि मैं पितर पापी हूं और अपने पाप के द्वारा से अपने प्रिय गुरु को क्लेशित किया है। यहूदा अपने पाप के बुरे फल के कारण क्लेशित था हां उसने इस बात पर सोचा होगा कि प्रभु यीशू से न प्रेम रखने के कारण मैं सदा दुःखी रहूंगा और इसी लिये वह शोक करता था सो उस के शोक से सनातन मृत्यु उत्पन्न हुई। पितर उस अनुग्रह का विश्वास करके जो प्रभु की दृष्टि में दिखाई दिया शोक करने लगा। जब कि विश्वास अनुग्रह का दान है अथवा अनुग्रह से उत्पन्न होता है तो क्यों यहूदा को विश्वास का दान न दिया गया। क्यों उस पर यह अनुग्रह न हुआ कि उस का शोक भी ईश्वर की इच्छा के अनुसार होवे। क्या प्रभु ने उस के लिये बिनती न किई थी कि शैतान उसे बिगाड़ने न पावे। निस्सन्देह प्रभु ने यहूदा के लिये वार वार बिनती किई थी और उस को दया भी दिखाई थी पर यहूदा जानबूझके उस पाप के करने में स्थिर बना रहा जो मृत्यु के लिये है। वह जानबूझके पाप करने में स्थिर रहा इस लिये प्रभु के प्रेम और दया से उस के मन में कुछ असर न हुआ। वह आप ही अपने नाश होने का कारण ठहरा। उस ने विश्वास करने न चाहा इस लिये वह अन्त में विश्वास कर नहीं सका॥

हे भाइयो इस अभागे चेले के विषय सुनकर क्या हम अचेत और निश्चिन्त रहते हुए पाप करने से न डरेंगे। यहूदा ईश्वर के अनुग्रह से रहित हुआ और वह हमारे लिये एक उदाहरण ठहरा है जिस्ते हम उस का अन्त स्मरण करके देख लेवें कि हम में से कोई ईश्वर के अनुग्रह से रहित न होवे। लिखा हुआ है कि हे भाइयो "हम जो सहकर्मी हैं उपदेश करते हैं कि ईश्वर के अनुग्रह को वृथा ग्रहण न करो। और

क्या तुम नहीं जानते हो कि अखाड़े में दौड़नेहारे सब ही दौड़ते हैं परन्तु जीतने का फल एक ही पाता है । तुम वैसे ही दौड़ो कि तुम प्राप्त करो " । जो विधि के अनुसार कुश्ती लड़ता है केवल उसी के सिर पर विजय का मुकुट बान्धा जायगा ॥

उन महायाजकों और अध्यापकों के व्यवहार से जिनके पास यहूदा चला गया प्रगट होता है कि मनुष्य का मन कहां तक कठोर हो पत्थर के समान कड़ा हो सकता है । हां वह इतना कठोर बन सकता है कि जब ईश्वर उस को डरावे तब कुछ भी नहीं थरथराता अथवा भय खाता है । यहूदा ने उन के साम्हने मान लिया कि मैं ने निर्दोष लोहू को पकड़वाके पाप किया पर इस से वे नहीं घबराते बल्कि कहते हैं कि "हम को क्या तू आप ही जान " । जैसे जकर्याह नबी ने आगे से कहा था तैसे यहूदा ने जाके रुपैयों को मन्दिर में फेंक दिया । इस भविष्यद्वचन के पूरा होने से वे मालूम कर सके कि परमेश्वर हमारे अपराधों का दण्ड हमें देवेगा । हां उन को मालूम हो सका कि जो वचन यिर्मयाह नबी ने कहा था सो भी पूरा होवे अर्थात् उस ने कहा कि " यहां के लोगों ने मुझ यहोवा को त्याग दिया और इस स्थान को पराया कर दिया अर्थात् उस में पराये देवताओं के लिये धूप जलाया और इस स्थान को निर्दोषों के लोहू से भर दिया है सो ऐसे दिन आते हैं कि यह स्थान तोपेत् वा हिन्नोमवंशीवाला खड्ड न कहावेगा सहार ही का खड्ड कहावेगा । और मैं इस नगर को ऐसा उजाड़ दूंगा कि लोग उसे देख हथोड़ी बजावेंगे । यह मिट्टी का बासन जो टूट गया सो फिर बनाया न जावेगा वैसे ही मैं इस जाति और इस नगर को मानो तोड़ डालूंगा और तोपेत् नाम खड्ड में इन लोगों की इतनी कबरें होवेंगी कि कबर के लिये और कुछ स्थान न रहेगा " । (यिर्मयाह के १९वे पर्ब्ब को देखो) । यह भविष्यद्वचन तब पूरा होने लगा जब नबुकदनेस्सर राजा ने यरूशलेम को नाश करके उस के निवासियों को बाबेल देश में पहुंचवाया । फिर यहूदियों ने मसीह को रद्द करने से अपने पापों का नाप मानो भर दिया इस लिये परमेश्वर ने रोमियों के द्वारा सम्पूर्ण रीति से उस वचन को पूरा किया जो उस ने यिर्मयाह के द्वारा कहा था ॥

महायाजकों ने परामर्श करके उन तीस रुपैयों को लेके हिन्नोमवंशी वाले खड्ड में परदेशियों को मिट्टी देने के लिये कुम्हार का एक खेत मोल लिया । उन के इस कर्म से उन्हों ने प्रगट किया कि जिस दण्ड का

प्रचार नवी ने इस स्थान में किया हम उस दण्ड के योग्य हैं। आत्मघाती यहूदा की लोथ को पहिले पहल इस स्थान में मिट्टी दिई गई। यहूदियों ने अपने राजा के मार डालने से आत्मघात किया। छली यहूदा का स्थान जो था सो उन का भी था। आमेन॥

यीशू नासरी राजा है।

तब पिलात उन के पास बाहर आया और कहा तुम इस मनुष्य पर क्या दोष लगाते हो। उन्हों ने उत्तर देके उस से कहा यदि यह कुकर्मी न होता तो हम उसे तेरे हाथ न सौम्पते। पिलात ने उन से कहा तुम उस को लेओ और अपनी व्यवस्था के अनुसार उस का विचार करो। यहूदियों ने उस से कहा किसी को वध करने का हमें अधिकार नहीं है। यह इस लिये हुआ कि यीशू का वचन जिस के कहने से उस ने पता दिया कि मैं कैसी मृत्यु से मरने पर हूं पूरा होवे॥

सो पिलात फिर अध्यक्षभवन के भीतर गया और यीशू को बुलाके उस से कहा क्या तू यहूदियों का राजा है। यीशू ने उत्तर दिया क्या तू आप यह बात कहता है अथवा औरों ने मेरे विषय तुझ से कही। पिलात ने उत्तर दिया क्या मैं यहूदी हूं। तेरे ही लोगों ने और महायाजकों ने तुझे मेरे हाथ में सौम्पा तू ने क्या किया। यीशू ने उत्तर दिया कि मेरा राज्य इस संसार का नहीं है जो मेरा राज्य इस संसार का होता तो मेरे सेवक लड़ते कि मैं यहूदियों के हाथ में न सौम्पा जाता परन्तु अब मेरा राज्य यहां का नहीं है। पिलात ने उस से कहा सो क्या तू राजा है। यीशू ने उत्तर दिया तू कहता है कि मैं राजा हूं। मैं ने इस लिये जन्म लिया है और इस लिये जगत में आया हूं कि सत्य पर साक्षी देऊं। जो कोई सत्य का है सो मेरा शब्द सुनता है। पिलात ने उस से कहा सत्य क्या है। और यह कहके वह फिर यहूदियों के पास बाहर गया और उन से कहा मैं उस में कोई दोष नहीं पाता हूं। योहन १८ २९–३८॥

परन्तु उन्हों ने अधिक दृढ़ता से कहा कि वह गालील से लेके यहां लों सारे यहूदिया में शिक्षा देके लोगों को उस्काता है। पिलात ने यह सुन के पूछा क्या यह मनुष्य गालीली है। और जब उस ने जाना कि वह हेरोदेस के अधिकार का है तब उस को हेरोदेस के पास भेजा कि वह भी उन दिनों में यरूशलेम में था॥

हेरोदेस यीशू को देखके अति आनन्दित हुआ क्योंकि वह बहुत दिन से उस को देखने चाहता था इस लिये कि उस ने उस के विषय सुना था और उस का कोई आश्चर्य्य कर्म देखने की उस को आशा थी। उस ने उस से बहुत बातें पूछीं परन्तु उस ने उस को कुछ उत्तर न दिया। और महायाजकों और शास्त्रियों ने खड़े होके बड़े तेहे से उस पर दोष लगाया। तब हेरोदेस ने अपने योद्धाओं के संग उसे तुच्छ जानके ठट्ठों में उड़ाया और भड़कीला वस्त्र पहिनाके उसे पिलात के पास फेर भेजा और उसी दिन हेरोदेस और पिलात आपस में मित्र हो गये कि आगे उन में शत्रुता थी। लूक २३ ५-१२। मत्ती २७ : ११-१४ और मार्क १५ : २-५ भी देखो॥

जिस समय यीशू मसीह दुःख उठाता रहा उस समय उस को नाना प्रकार से प्रगट हुआ कि मनुष्यों की अष्टता अत्यन्त बड़ी है। जैसे बूढ़े शिमियोन ने कहा था तैसे प्रभु यीशू के द्वारा बहुत मनुष्यों के हृदयों के बिचार प्रगट हुए। परमेश्वर का निर्दोष मनुष्यरूपी मेम्ना जगत के पाप उठाते हुए बहुत से भक्तिहीन और अति दुष्ट लोगों से घेरा हुआ था जिन के कर्मों से प्रगट हुआ कि मनुष्यजाति जब तक ईश्वर के अनुग्रह के द्वारा नई सृष्टि न बन जावें तब तक कैसी बुरी है। इन दुष्ट लोगों के अगुवे अर्थात् हन्ना और कयाफा जो थे उन के व्यवहार से प्रगट हुआ कि जो लोग अपनी पवित्रमन्यता पर अर्थात् इस बात पर भरोसा रखते हैं कि हम धर्मी हैं वे कैसे कठोर और आत्मिक अंधे होते हैं। वे अपने अभिमान के कारण परमेश्वर के एकलौते पुत्र की महिमा को देख नहीं सकते हैं। वे ऐसे बहिरे होते हैं कि वे अनुग्रह का और सत्यता का वचन सुन नहीं सकते हैं। फिर प्रभु यीशू के आसपास वे लोग खड़े थे जिन के बीच में वह फिरता हुआ उन के रोगियों और भूतग्रस्तों को चंगा किया करता था हां जिन पर वह नाना प्रकार से दया किया करता था परन्तु उन्हों ने भलाई के पलटे उस से बुराई किई। हां उन्हों ने पुकारा कि यीशू नासरी को क्रूश पर चढाओ चढ़ाओ। इन लोगों के व्यवहार से प्रगट होता है कि जिस मनुष्य का मन शारीरिक है सो परमेश्वर के उपकारों का सुख भोगने तो चाहता है पर परमेश्वर की प्रसन्नता योग्य चाल चलने नहीं चाहता है। फिर रोमी सिपाहियों ने प्रभु यीशू को घेर के उसे ठट्ठों में उड़ाया और कोड़े मारे। उस के बारह चुने हुए शिष्य भी उस के दुःख के समय उस से भाग गये। उन्हों ने और मनुष्यों की

अपेक्षा अधिक करके उस की दया और प्रेम का अनुभव किया था परन्तु उन में से एक ने अपने मृदुभाव और प्रेमवन्त गुरु को पकड़-वाके प्रगट किया कि जो मनुष्य प्रभु यीशू का चेला होने के पीछे लोभ में वा किसी और पाप में पड़के निश्चिन्त होता और जानबूझकर पाप करता जाता है उस मनुष्य का विश्वास मिट जाता और वह होते २ सनातन दण्ड के योग्य ठहरेगा। एक दूसरे चेले अर्थात् पितर ने अपने गुरु से मुकरके प्रगट किया कि जो लोग अभिमानी होके अपनी भली मनसाओं और अपनी निज शक्ति और भक्ति पर भरोसा करते हैं सो लज्जित होवेंगे। सब चेले अपने गुरु को क्लेशित और व्याकुल देखकर निराश हुए। उन्हों ने अपने अल्पविश्वास और भय से प्रगट किया कि जो लोग प्रभु यीशू से मन ही मन प्रेम रखते हैं उन में से बहुत लोग अपनी दुर्बलता के कारण दु ख और क्लेश से भय खाते हैं। प्रभु यीशू ऐसे पापियों से कैसा व्यवहार करता है। वह उन के बचाने के लिये तरसता है। वह उन को प्रेम और दया दिखाके अपनी ओर खींचता है जिस्तें वे विश्वास करें और मान लेवें कि यीशू नासरी जो है सो हमारा त्राणकर्त्ता और राजा है। उस की सेवा हम सुख और आनन्द के दिन हां क्लेश और संकट के दिन में भी विश्वस्तता के साथ करने चाहते हैं॥

जिन बड़े अपराधी मनुष्यों का वर्णन प्रभु यीशू मसीह के दुःखों के वृत्तान्त में किया जाता है उन में से एक है अर्थात् रोमी गवर्नर पोन्त्य पिलात जिस का नाम बहुत प्रसिद्ध हुआ। प्रभु यीशू इस जन को बचाने के लिये भी तरसता था। उस की इच्छा थी कि पोन्त्य पिलात मेरे पांव पड़के पुकारे कि हे यीशू नासरी तू ही मेरा त्राणकर्त्ता और मेरा राजा है। तू ही ने मेरे पापरूपी अन्धेरे को दूर करके मुझे प्रकाशित और सुखी किया है। जिस राजा का विचार पिलात करने पर था उस की महिमा का कुछ तेज उस को दिखाई दिया तौभी वह ठान न सका कि मैं यीशू नासरी के अधीन होऊं क्योंकि ईश्वर की प्रसन्नता की अपेक्षा मनुष्यों की प्रसन्नता उस की समझ में अधिक प्रिय थी इस लिये उस ने अन्त में ठाना कि मैं भी यीशू नासरी का विरोधी होऊंगा। प्रभु यीशू ने कहा था कि "जो मेरे संग नहीं है सो मेरे विरुद्ध है"। पिलात ने अपनी चंचलता के द्वारा प्रगट किया कि जो ईश्वर और संसार दोनों के मित्र हुआ चाहते और सच्चाई और झूठ में मेल करने चाहते हैं वे बड़ी मूर्ख-ताई प्रगट करते हैं क्योंकि इन दोनों में मेल कभी नहीं हो सकता है।

पिलात की समझ में संसार की मित्रता प्रभु यीशू की मित्रता से अधिक चाहनेयोग्य और लाभदायक है। इस बात पर सोचने से हम न केवल पिलात पर दोष लगावें बलिक डरते हुए अपने को जांचके प्रभु से पूछें कि क्या तू हम में यह दोष देखता है कि हम तुझ से अधिक ससार को प्रिय जानते हैं॥

पिलात छः बरस से यहूदिया नाम देश का गवर्नर रहा था सो वह तब यहूदियों पर प्रभुता रखता था जब प्रभु यीशू उन के देश के नगरों बस्तियों और गांवों में फिरता हुआ निवासियों पर नाना प्रकार से दया किया करता और सब प्रकार के भूले भटके मनुष्यों को ढूंढा करता था जिस्तें वह उन को सच्चे मार्ग पर फेरने पावे। थोड़े इस्राएलवंशी उस के शरणागत होके पाप की सेवा से छुडाये गये थे। अन्यदेशियों में से भी कई एक जन उस की शरण आके उस के चेले हो गये थे। परन्तु पिलात के भवन में जो लोग रहते थे सो नासरत के नबी को नहीं पूछते थे। पिलात ने यीशू नासरी के विषय सुना तो था क्योंकि उस की पत्नी जानती थी कि वह धर्मी जन है परन्तु पिलात इस ससार का आदर और प्रसन्नता का खोजी था इस लिये यीशू नासरी को पूछने का अवसर उसे न मिला। पर अब अवश्य पड़ा कि वह यीशू नासरी को पूछे और ठाने कि क्या मैं सचाई की ओर होऊं अथवा उस के विरुद्ध होऊं क्या मैं उस राजा की प्रजा होऊं जिस का राज्य इस ससार का नहीं है अथवा क्या मैं उस का वैरी होके नष्ट हो जाऊंगा॥

भोर को बडे तडके एक बन्धुवा पिलात के भवन लों पहुंचाया गया। यहूदियों की महासभा के सभासद अर्थात् महायाजक और अध्यापक अरु और बहुत बडे और छोटे लोग बन्धुवे के साथ आके और उस पर दोष लगाके पुकार रहे थे कि हे गवर्नर महाराज कृपा करके हमारा न्याय चुकाओ। पिलात ने यहूदियों को तुच्छ जानके और झुंझलाकर उन से पूछा कि "तुम इस मनुष्य पर क्या दोष लगाते हो"। यहूदियों ने जाना कि पिलात हमारी धर्मसम्बन्धी बातों को तुच्छ जानता है इस लिये उन्हों ने उत्तर दिया कि "यदि यह कुकर्मी न होता तो हम उसे तेरे हाथ न सौंपते"। जो लोग अशुद्ध भूतों से छुडाये गये थे और जो लंगडे लूले यीशू नासरी से चंगापन पाकर अच्छे हो गये थे उन से पूछो तो वे उत्तर दे सकेंगे हां शुद्ध किये हुए कोढियों से और जो लोग मुर्दों में से जिलाये गये थे उन से भी पूछो तो वे बता सकेंगे

कि यीशू नासरी कुकर्मी नहीं है। फिर उन से भी पूछो जिन्हें प्रभु यीशू ने मंगलसमाचार सुनाकर और उन के पापों को क्षमा करके उन्हें अनन्त जीवन के भागी किया था तो वे सब बतावेंगे कि यीशू नासरी निर्दोष है। उस में छल की बात है हां नहीं। पर वे सब लोग अब हाजिर नहीं थे। ऐसा जान पड़ता है जैसा उन्हों ने अपने उपकारक से ऐसा व्यवहार किया जैसा लिखा है कि "वे मुझ से भलाई के पलटे में बुराई करते हैं"। जो जन मुर्दों और जीते लोगों का न्याय करेगा हां जिस के बिचारासन के साम्हने सारे मनुष्य प्रगट किये जावेंगे सो पिलात के साम्हने खड़ा था। वह बांधा हुआ राजा होके वहां खड़ा था। पिलात ने उस के सौम्य और निष्कपट चिहरे पर दृष्टि डालकर तुरन्त मालूम किया कि "यह कुकर्मी नहीं है" और उस ने इस लिये यहूदियों से कहा "मैं उस में कोई दोष नहीं पाता हूं सो तुम उसे ले जाके अपनी व्यवस्था के अनुसार उस का विचार करो"। यह सुनके वे कहने लगे कि हम उस को प्राणदण्ड के योग्य ठहरा चुके पर किसी को प्राण से मारना हमें अधिकार नहीं है। इस से पिलात को मालूम हुआ कि ये लोग चाहते हैं कि प्राणदण्ड की आज्ञा इस जन पर सुनाई जावे और वह सोचने लगा कि मुझ को इस मामले की पूछपाछ करनी पड़ेगी। "यह इस लिये हुआ कि यीशू का वचन जिस के कहने से उस ने पता दिया कि मैं कैसी मृत्यु से मरने पर हूं पूरा होवे"। अवश्य था कि प्रभु यीशू स्राप की लकड़ी पर वध किया जाय। यहूदी लोग अपनी रीति के अनुसार उस को पत्थरवाह करके वध कर नहीं सके क्योंकि प्रभु परमेश्वर ने ठहराया था कि मसीह की पवित्र देह का कोई अंग न तोड़ा जावेगा। जो कुछ परमेश्वर ने ठहराया था उस से बढ़कर बैरी लोग कुछ कर न सके। इस से हमें सीखना चाहिये कि मसीह के बैरी उस के चेलों को केवल वह दुःख और क्लेश पहुंचा सकते हैं जिसे परमेश्वर उन्हें पहुंचाने देता है॥

पिलात ने फिर अध्यक्षभवन में प्रवेश करके प्रभु यीशू को अपने पास बुलवाया। यहूदियों ने उस पर दोष लगाके कहा था कि वह अपने को राजा बनाके लोगों को भरमाता है। यद्यपि प्रभु राजा के समान सोना और जवाहिर से विभूषित न था बल्कि उस के हाथ और पांव जंजीरों से बान्धे हुए थे तौभी पिलात ने उसे ठट्ठों में नहीं उड़ाया। इस के बदले उस ने उस से पूछा कि "क्या तू यहूदियों का राजा है"। इस प्रश्न के उत्तर में प्रभु यीशू हामी भर तो सका क्योंकि वह सचमुच यहूदियों का

राजा था पर योहन प्रेरित के वृत्तान्त के अनुसार उस ने यों कहा कि "क्या तू आप यह बात कहता है अथवा औरों ने मेरे विषय कही"। प्रभु ने यह उत्तर इस लिये दिया होगा कि उस ने पिलात से प्रेम रखकर उसे सच्चाई की ओर फेरने चाहा जिस्तें वह अपने पापों से बचके जीवन पावे। उस ने मानो उस से कहा क्या तू जानना चाहता है कि यीशू नासरी राजा है। यदि तू आप यह बात कहता तो क्या उत्तम होता क्योंकि तब ही मुझ को तुझ पर दया करने का अवसर मिलता। पर यदि तू केवल गवर्नर होने के कारण पूछता है जिस्तें मालूम होवे यदि मैं यहूदियों के कहने के अनुसार बलवा करनेहारा हूं कि नहीं तो तुझ पर हाय क्योंकि केवल वे लोग धन्य हैं जो अपने सारे मन से मुझ को पूछते हैं। पर घमंडी रोमी के समान पिलात ने उत्तर दिया कि क्या मैं यहूदी हूं। नहीं। मैं इस तुच्छ जाति का नहीं हू सो मैं तुझ को नहीं पूछता हू। "तेरे ही लोगों ने और महायाजकों ने तुझे मेरे हाथ में सौंपा तू ने क्या किया है"। प्रभु यीशू इस प्रश्न के उत्तर में बहुत सी बातें कह सका जैसे मैं अपने बड़े प्रेम के कारण स्वर्ग को छोड़के पृथिवी पर उतर आया जिस्तें मैं पाप से मनुष्यों का उद्धार करू। मैं जो अत्यन्त लो धनी था सो दरिद्र हुआ कि मैं सब मनुष्यों को प्रेम धार्मिकता पवित्रता विश्वास और सब प्रकार के सुकर्मों के धनी बनाके पवित्र लोगों के अधिकार के भागी करू। मैं ने यहूदियों के सब प्रकार के दुःखी और पीडित लोगों को चगा किया भूखों को खिलाया मुर्दों को जिलाया उन के शोकित और व्याकुल मनुष्यों को शान्ति दिई। इन सारे उपकारों के पलटे में यहूदी लोग मुझ से बैर रखते हैं। अफसोस की बात है कि बहुत से मसीही पिलात के समान मसीह के कर्मों से अनजान हैं। वे नहीं जानते हैं कि यीशू मसीह ने हमारे लिये कुछ किया है। पर जो लोग यीशू मसीह पर विश्वास करने से नये मनुष्य बन गये वे उस के उपकारों से जानकार हैं और बता भी सकते हैं कि उस ने हमारे लिये क्या क्या किया और क्या करता है॥

प्रभु ने उत्तर देके कहा कि मेरा राज्य इस संसार का नहीं है। "उस ने मानो यह कहने चाहा कि जो काम एक ऐसे राजा पर फर्ज हैं जिस को तू पूछता है उन कामों में से मैं ने एक काम को भी नहीं किया। मैं राजा तो हू पर मेरा राज्य जो है सो यहां का नहीं है। जो काम और कारोबार मैं अपने राज्य में करता और कराता हू उन का विचारकर्त्ता तू

नहीं हो सकता है। मेरे राज्य की व्युत्पत्ति नीचे से नहीं परन्तु ऊपर से है। मेरे राज्य के हथियार जो हैं सो तलवारें नहीं बल्कि परमेश्वर का वचन और पवित्रात्मा है। मेरे सिपाही अन्धेर करने और तलवार चलाने से बैरियों को नहीं जीतते हैं परन्तु वे दुःख उठाने और धीरज धरने और प्रेम दिखाने से जयवन्त ठहरते हैं। मेरी राजधानी कोई बड़ा नगर नहीं है बल्कि मैं दीन और पवित्र मनुष्यों के मन में विराजमान रहता हूं। सोना और रूपा मेरे राज्य की बहुमूल्य वस्तें नहीं हैं बल्कि पापों की क्षमा ईश्वर की शान्ति धार्मिकता और अनन्त जीवन। इस संसार का आदर और सन्मान मेरे राज्य की शोभा नहीं है बल्कि उस का आभूषण जो है सो दीनताई है॥

यद्यपि प्रभु यीशू का राज्य इस संसार का नहीं है तौभी उस के राज्य की प्रजा पर फर्ज़ है कि वे अपने राजा की सहायता करें कि संसार के सारे जातिगण उस के अधीन हो जावें क्योंकि संसार उस के द्वारा रचा गया और वह अपने वचन की शक्ति से उस को संभालता और ऐसे चलाता है कि वह होते होते परमेश्वर की महिमा से परिपूर्ण हो जाय और शैतान का निवास होने के बदले परमेश्वर का पवित्र निवासस्थान बन जावे। प्रभु यीशू चाहता है कि मेरी प्रजा के सब लोग निर्दोष और शुद्ध होवें और जगत में अपनी पवित्र चाल और सुकर्मों के द्वारा ज्योतिधारियों की नाई चमकें। वह चाहता है कि सब मसीही एक चित्त होके सच्चाई पर साक्षी देवें और अपने सारे कामों और सारी चालों के द्वारा परमेश्वर की महिमा को प्रगट करें। हां उस की इच्छा है कि सब विश्वासी लोग विश्वास की अच्छी लड़ाई लड़ा करें जिस्तें जगत के सारे राज्य ईश्वर के और उस के अभिषिक्त जन के हो जावें॥

फिर पिलात ने अचम्भित होकर प्रभु से पूछा कि "सो क्या तू राजा है। यीशू ने उत्तर दिया "तू कहता है मैं राजा हूं"। उस ने पहिले कहा था कि 'मेरा राज्य यहां का नहीं है"। पर अब वह अपने इस जगत में आने के मतलब को वर्णन करके कहता है कि "मैं ने इस लिये जन्म लिया है और इस लिये जगत में आया हूं कि सत्य पर साक्षी देऊं"। इस से जान पड़ता है कि मसीह सत्यता का राजा है। बहुत से अन्यदेशी सत्यता को खोजते २ बिन पाये मर गये सो यदि पिलात उन के समान सत्यता का खोजी होता तो वह अति प्रसन्न होके और सत्यता के राजा के पांव पड़कर उस से सीखने लगता। पर वह विषयी

जन था और सच्चाई और भलाई की कुछ चिन्ता नही करता था॥

मसीह सत्यस्वरूप है जैसा उस ने एक दिन कहा "मैं सत्य हूं"। वह अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण है। वह परमेश्वर की महिमा का तेज और उस के तत्व की मुद्रा होके संसार में सत्य का प्रकाशक ठहरता है। परमेश्वर सच्चा कहावता है क्योंकि उस में कोई विरुद्धता है ही नहीं बल्कि वह पूर्ण प्रेम होके सदा एकसां बना रहता है। परमेश्वर की सत्यता और उस की पवित्रता एक ही हैं। पुत्र की भी दशा यही है क्योंकि जैसा पिता तैसा पुत्र है। वे एक हैं। पुत्र पूर्ण प्रेम पूर्ण सत्यता और पूर्ण पवित्रता है। जो सत्यता वह आप है उसी पर वह साक्षी देता है। (योहन ८ ' १८ पर्व्व ३ और ११ ' ३२)। वह मनुष्यों पर परमेश्वर के सनातन प्रेम को प्रगट करता है (योहन १ ' १८ और १७ : ६) जिस्तें वह उन को पाप से जो झूठ है और झूठ के उत्पन्न करनेहारे के अधिकार से छुडावे। मसीह विश्वासयोग्य साक्षी है। उस की साक्षी का सार जो है सो यह है कि "ईश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दिया कि जो कोई उस पर बिश्वास करे सो नाश न होवे परन्तु अनन्त जीवन पावे"। इस के अनुसार पावल प्रेरित ने साक्षी देके कहा कि "यह वचन विश्वासयोग्य और सर्व्वथा ग्रहणयोग्य है कि मसीह यीशू पापियों को बचाने के लिये जगत में आया"। मसीह ने इस लिये जन्म लिया है कि वह मनुष्यों पर इस सत्यता को प्रगट करे कि परमेश्वर अपने प्रेम के कारण यह चाहता है कि सब मनुष्य त्राण पावें और सच्चाई के ज्ञान लों पहुंचें। वह सत्य पर साक्षी देता और मनुष्यों को सच्चे बनाता है। सब मनुष्य झूठे हैं पर मसीह सत्यवादी राजा होके उन्हें अपनी सच्ची प्रजा बनाता है। वह सभों को अपने पास बुलाता है और जो कोई सत्य का है सो उसका शब्द सुनके उस के पास आता है जो कोई प्रभु यीशू से सीखने न चाहे उस को सच्चाई का ज्ञान कभी नहीं प्राप्त होगा इस कारण जो मनुष्य यीशू मसीह का चेला हुए बिना ईश्वर के पास जाया चाहे सो धोखा खावेगा॥

पिलात सत्य का न था। उस ने पूछा तो सही कि सत्य क्या है पर अपने प्रश्न का उत्तर पाने की आशा न रखी। उस ने सोचा होगा कि इस जगत में कुछ सत्य नहीं है। यहूदियों का यह तुच्छ राजा मुझ को सत्य का ज्ञान दे न सकेगा। उस ने मसीह की ओर पीठ फेरके यहूदियों

के पास जाके उन से कहा "मैं उस में कोई दोष नहीं पाता हूं"। पिलात ने सच्चाई को नही चाहा पर उस को मानना पड़ा कि यीशू नासरी निर्दोष है। उस ने सोचा कि मैं न यीशू के विरुद्ध न उस की ओर होऊं। सो जब उस ने सुना कि यीशू गालीली है तो तुरन्त उसे हेरोदेस राजा के पास भेजा कि यह यहूदियों की इच्छा पूरी करे। परन्तु हेरोदेस ने भी प्रभु में दोष नहीं पाया सो उस ने उस से ठट्ठा करके उसे पिलात के पास फेर भेजा॥

हे भाइयो तुम ने भी मसीह में कोई दोष नहीं पाया। हां तुम समझते हो कि यीशू नासरी पूर्ण पवित्र है। पर क्या तुम उस को अपना प्रभु और त्राणकर्त्ता मानते हो। जब तक तुम दिल ओ जान से उस के अधीन होके उस को अपना राजा त्राणकर्त्ता और पवित्र करनेहारा नहीं जानते हो तब तक उस को सच्चा और निर्दोष मानने से तुम को कुछ लाभ न होगा। आमेन॥

बरब्बा को अथवा यीशू को।

पर्व्व में अध्यक्ष की यह रीति थी कि लोगों के लिये एक बन्धुए को जिसे वे चाहते थे छोड़ देता था। उस समय उन का बरब्बा नाम एक प्रसिद्ध बन्धुआ था। सो जब वे एकट्ठे थे तब पिलात ने उन से कहा तुम किस को चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिये छोड देऊं। बरब्बा को अथवा यीशू को जो मसीह कहलाता है। क्योंकि वह जानता था कि उन्हों ने उसे डाह से पकडवाया था। जब वह न्याय की गद्दी पर बैठा था तब उस की पत्नी ने उस को कहला भेजा कि तू इस धर्मी से कुछ काम न रख क्योंकि मैं ने आज स्वप्न में उस के कारण बहुत दुःख पाया है। और महायाजकों और प्राचीनों ने लोगों को उभाडा कि वे बरब्बा को मांगें और यीशू को नाश करें। अध्यक्ष ने उत्तर देके उन से कहा तुम इन दोनों में से किस को चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिये छोड़ दूं। उन्हों ने कहा बरब्बा को। पिलात ने उन से कहा फिर यीशू को जो मसीह कहलाता है मैं क्या करूं। सभों ने कहा वह क्रूश पर चढ़ाया जावे। उस ने कहा क्यों उस ने क्या बुराई किई है। पर उन्हों ने बहुत ही चिल्लाके कहा वह क्रूश पर चढ़ाया जावे। जब पिलात ने देखा कि कुछ बन नहीं पड़ता बरन हुल्लड़ होता जाता है तब उस ने जल लेके लोगों के साम्हने अपने हाथ धोये और कहा मैं इस धर्मी के लोहू से निर्दोष हूं तुम ही जानो। और

सब लोगों ने उत्तर देके कहा उस का लोहू हम पर और हमारे लड़कों पर होवे । तब उस ने बरब्बा को उन के लिये छोड़ दिया पर यीशू को कोड़े मारके क्रूश पर चढ़ाये जाने को सौम्प दिया । मत्ती २७ . १५–२६ । मार्क १५ : ६–१५, लूक २३ : १३–२५ और योहन १८ : ३६–४० को भी देखो ॥

पिलात का मन बटा हुआ था । उस में ज्योति के और अन्धकार के अधिकार आपस में लड़ रहे थे । परन्तु जब कि पिलात ने सच्चाई को मानने न चाहा बल्कि सत्यता के बैरियों से मेल करने लगा तो ज्योति के दूत उस की ओर पीठ फेरने लगे । पिलात ने चचल होके न प्रभु यीशू के विरुद्ध न उस की ओर होने चाहा । उस ने प्रभु यीशू को हेरोदेस राजा के पास भेजा था पर उस का यह उपाय भी निष्फल हुआ । भीड़ को प्रभु यीशू के संग लौटते देखकर वह बड़ा व्याकुल हुआ क्योंकि उस को और अधिक निश्चय पड़ा कि यीशू नासरी निर्दोष है । उस को जान पड़ा कि अब मुझ को ठानना पड़ेगा कि मैं किस की ओर होऊंगा । इन दो बातों में से एक को मुझे चुनना पड़ेगा अर्थात् चाहे इन दुष्ट यहूदियों को प्रसन्न करके निर्दोष यीशू नासरी को उन की इच्छा के अनुसार प्राणदण्ड के योग्य ठहराना चाहे न्याय के अनुसार उस का मुकद्दमा चलाके उसे छोड़ देना । यदि मैं उसे छोड़ देऊं तो वे महाराज के आगे मुझ पर झूठा दोष लगाके कहेंगे कि पिलात ने एक राजद्रोही को निर्दोष ठहराया है इस लिये वह हमारे देश का गवर्नर रहने के अयोग्य है । इन बातों पर सोचते सोचते पिलात ने ठाना कि मैं ऐसा उपाय करूंगा कि न मुझ को संसार की मित्रता न अपनी पुरानी चाल छोड़नी पड़ेगी और इस उपाय को करकर मुझे यीशू नासरी को प्राणदण्ड देना अवश्य न होगा ॥

पिलात न केवल महायाजकों और प्राचीनों को बल्कि साधारण लोगों को भी बुलाके अच्छी रीति से समझाने लगा क्योंकि उस ने सोचा होगा कि साधारण लोगों में बहुत से लोग हैं जिन पर यीशू नासरी ने दया करके उन का उपकार किया हो । वे निस्सन्देह उस के उपकारों को मानकर अपने उपकारक को मांगेंगे तो मैं उन की इच्छा के अनुसार उसे छोड़के आप निर्दोष ठहरूंगा । पिलात ने यीशू की निर्दोषता पर साक्षी देके यहूदियों से कहा न मैं ने न हेरोदेस राजा ने यीशू नासरी में कोई दोष पाया है । सो मेरी मनसा यह है कि मैं उस को कोड़े लगवाके छोड़ दूंगा । हे पिलात तू क्या कहता है । यदि यीशू नासरी निर्दोष है तो तू उस को

किस कारण कोड़े लगवाने चाहता है। पिलात ने सोचा होगा कि यह बुद्धियुक्त उपाय है क्योंकि छोटे बडे लोग उस राजा का आदर और सन्मान न करेंगे जिस ने कुकर्मी के समान कोड़े खाये हों। फिर महाराजा सोचेगा कि इस तुच्छ राजा की ओर से मेरे राज्य की कोई हानि हो न सकेगी। पिलात ने अपने मन की साक्षी के कारण यीशू को छोड़ने चाहा पर यहूदियों के डर के मारे उस ने सोचा कि उस के छोड़ने के पहिले मैं उस को कोड़े लगाऊंगा तो सब लोग प्रसन्न होवेंगे। उस ने ठाना कि मैं लोगों की समझ में यीशू नासरी का विरोधी दिखाई देऊंगा तौभी मैं उस के लोहू से निर्दोष ठहरूंगा। शैतान ने सोचा होगा कि हे पिलात जब कि तू निर्दोषी का अनादर करके उस को कोड़े दिलाता है तो मुझ को निश्चय पडता है कि तू मेरी इच्छानुसार बुराई में और अधिक बढ़कर उसे क्रूश पर भी चढ़वायगा॥

बहुत मनुष्य पिलात के समान पाप करने में बढते जाते हैं। वे मसीह के चेलों को कोड़े मारके ठट्ठों में उड़ाते हैं जिस्तें अधर्मी लोग उन से प्रसन्न होवें। वे इस मतलब से परमेश्वर के वचन को झुठलाते हैं कि संसार उन का आदर करे। जानना चाहिये कि ऐसे लोगों का भयानक अन्त होगा। पिलात ने कहा मैं उस को कोड़े लगवाके छोड़ूंगा पर प्रभु को छोडना उस से न बना। अब उस ने एक दूसरे उपाय पर चित्त लगाके लोगों से कहा कि मेरी यह रीति बहुत दिन से चली आई है कि मैं निस्तारपर्व्व के समय तुम्हारे लिये एक बन्धुआ छोड देता हूं। अब मेरे यहां एक प्रसिद्ध बंधुआ बरब्बा नाम है जिस ने नगर में बलवा कराके ख़ून किया। सो आप लोग किस को चाहते हैं कि मैं आप के लिये छोड़ देऊं बरब्बा को अथवा यीशू को जो मसीह कहलाता है। पिलात ने चाहा कि लोग आप ठाने कि इन दोनों में कौन प्राणदण्ड के योग्य ठहराया जावेगा। बरब्बा का अर्थ बाप का बेटा है। योहन के ८। ४४ के अनुसार जान पड़ता है कि बरब्बा उसी का बेटा था जो आरंभ से ख़ूनी और झूठा ठहरता आया है। यीशू मसीह जो परमेश्वर का एक ही पुत्र और उस की महिमा का तेज है सो शैतान के एक बेटे के संग लोगों के साम्हने पेश किया गया जिस्तें वे चुनें कि इन दोनों में से हमारा प्यारा कौन होगा। उन भूले भटके और पाप के कारण अंधे लोगों ने चाहा कि जीवते परमेश्वर के पुत्र के पलटे में इमें शैतान का एक अति दुष्ट बेटा दिया जावे। पिलात ने उन की बिनती सुनके अचंभा

करने लगा और उन से फिर पूछा कि क्या तुम चाहते हो कि मैं यहूदियों के राजा को छोड़ देऊं। उस ने ठट्ठा करके यह नहीं कहा परन्तु उस की इच्छा थी कि यहूदी अपनी अभक्ति और दुष्टता पर सोचकर लज्जित हो जावें। पिलात ने उन से मानो यों कहा कि चार एक दिन हुए जब से यीशू नासरी ने गदहे पर सवार होके यरूशलेम में प्रवेश किया तब तुम लोगों ने उस का ऐसा आदर और सन्मान किया जैसा राजा का किया जाता है पर अब तुम चाहते हो कि यह यीशू नासरी जो मेरी समझ में निर्दोष है क्रूश पर चढ़ाया जावे। ऐसी चंचलता से तुम्हें लज्जित होना चाहिये। फिर जब कि पिलात ने जाना कि बड़े लोगों ने डाह से यीशू को पकड़वाया था तो उस ने उन की ओर फिरके उन से पूछा कि तुम किस को चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिये छोड़ देऊं बरब्बा को अथवा यीशू को जो मसीह कहलाता है। उस ने मानो उन से यों कहा क्या तुम उसी को चाहते हो जिस का अपराध बलवा कराना और ख़ून करना है अथवा क्या तुम उसी को चाहते हो जिस को कुछ लोग उस के उपकारों अद्भुत कर्मों और उत्तम उपदेश और सुचाल के कारण मसीह मानते हैं। तुम प्राचीन काल से मसीह की बाट जोहते आये हो सो क्या तुम उसी को मरवा डालने चाहते हो जिस में अनेक मनुष्यों ने सच्चे मसीह के लक्षण पाये हैं। पिलात ने अध्यापकों और फरीसियों की मनसा बूझके समझा कि वे मसीह से केवल इस लिये वैर रखते हैं कि वह धर्मी है और उन के झूठे धर्म को रद्द किया है तौभी उस ने उन के लिये बरब्बा को छोड़ दिया क्योंकि उस की समझ में ईश्वर की मित्रता की अपेक्षा संसार की मित्रता अधिक प्रिय थी॥

फिर जब पिलात न्याय की गद्दी पर बैठा था तब परमेश्वर ने एक और बेर अपना अनुग्रहरूपी हाथ उस की ओर फैलाया जिस्तें वह शैतान के जाल से छूट जावे। उस की स्त्री ने उस को कहला भेजा कि "तू इस धर्मी से कुछ काम न रख क्योंकि मैं ने आज स्वप्न में उस के कारण बहुत दुःख पाया है"। पिलात ने सुभीता से अपना प्राण नहीं खो दिया। परमेश्वर ने नाना प्रकार के उपाय काम में लाके उस के प्राण को मृत्यु से बचाने का यत्न किया। उस ने उस से ऐसा व्यवहार किया जैसा लिखा है कि "ईश्वर तो एक क्या बल्कि दो प्रकार से भी बातें करता है हां लोग उस पर चित्त तो नहीं लगाते। एक तो स्वप्न में वा रात को दिये हुए दर्शनों में जब मनुष्य घोर निद्रा में पड़े रहते हैं अथवा बिछौने

पर ऊंघते हैं। तब वह मनुष्यों को अपनी बात सुनाता और जो शिक्षा वे पा चुके हैं उस पर मानो छाप लगाता है। यह वह इस लिये करता है कि मनुष्य को किसी बुरे काम से रोके" (अय्यूब ३३ : १४-१७)। परमेश्वर ने इसी रीति से स्वप्न में पिलात की स्त्री को जताया था कि यीशू नासरी को जो धर्मी है प्राणदण्ड के योग्य ठहराने से तेरा स्वामी अपने ऊपर बडा दण्ड लावेगा । पिलात का दोष अत्यन्त बड़ा था पर परमेश्वर का प्रेम और अधिक बड़ा प्रगट हुआ क्योंकि उस ने उसे इस बड़े दोष से बचाने चाहा। इस से हमें सीखना चाहिये कि जैसे परमेश्वर ने पिलात को समझाया तैसे वह और पापियों को नाना प्रकार से जताता और समझाता है कि वे पाप करने से रुक जावें और प्रभु की ओर फिरें। ऐसा जान पडता है कि पिलात ने प्रभु की सब चितौनियों को बिसरा दिया। परन्तु शायद उस की स्त्री को जिस का नाम क्लौदिया प्रोकुला था उस क्लेशजनक स्वप्न से और उस साक्षी के कारण से जो उस ने यीशू मसीह की निर्दोषता के विषय दिई आशीष मिली हो। हां यह हो सकता कि वह प्रभु यीशू की शरण आके पाप से बच गई हो और अब उन धन्य लोगों में गिनी जाती हो जो स्वर्ग में यीशू मसीह का गुणानुवाद और स्तुतिगान कर रहे हैं॥

पिलात ने अपनी स्त्री की अच्छी सलाह न मानी बलिक प्रभु यीशू के वैरियों की बातों पर मन लगाके उन की इच्छा पूरी किई। महायाजकों और प्राचीनों ने साधारण लोगों को उभाडा कि वे बरब्बा को मांगें और गवर्नर से यह बर भी मांगें कि वह निर्दोष यीशू को बध के योग्य ठहरावे। साधारण लोगों के शिक्षक अंधे थे और उन्हों ने लोगों को मार्ग से भटका दिया। उन की व्यवस्था के अनुसार वे इस बुरे कर्म के कारण स्रापित ठहरे। मसीह के जी उठने के पीछे पितर प्रेरित ने उपदेश करके उन्हें स्मरण दिलाया कि "हमारे पितरों के ईश्वर ने अपने सेवक यीशू की महिमा प्रगट किई जिसे तुम ने पकड़वाया और पिलात के साम्हने उस से मुकर गये जब कि उस ने उसे छोड देने को ठहराया था। परन्तु तुम उस पवित्र और धर्मी से मुकर गये और मांगा कि एक घातक तुम को दिया जाय"। पिलात लोगों की बात सुनके घबराने और व्याकुल होने लगा। वह अपनी स्त्री की आज्ञा के कारण और अधिक भयमान हुआ तौभी उस ने शैतान से भरमाया जाके लोगों से फिर पूछा कि मैं किस को तुम्हारे लिये छोड़ देऊं। उन्हों ने उत्तर देके कहा कि हमारे

लिये बरब्बा को छोड दे। उन का यह उत्तर सुनके वह और अधिक घबरा गया और बड़ा शोकित होके उस ने उन से फिर पूछा कि "यीशू को जो मसीह कहलाता है मैं क्या करूं"। लूक के वर्णन के अनुसार पिलात ने यीशू को छोड देना चाहा। पर उस की इच्छा स्थिर न थी। उस पर फर्ज था कि जो कुछ हो सो हो तौभी मैं उचित रीति से यीशू नासरी का न्याय चुकाऊंगा पर अपनी चंचलता के कारण वह न्याय के अनुसार प्रभु यीशू से व्यवहार न कर सका। बहुत मनुष्य पिलात के समान पाप के छोडने और प्रभु यीशू की ओर फिरने का इरादा करते पर अपनी चचलता और लोगों के डर के मारे उन के मन की सुधराई नहीं होती है। वे प्रभु की ओर फिरने का इरादा करते करते नरक को चले जाते हैं। शैतान ने पिलात को दोदिला होते देखकर लोगों को उभाड़ा कि वे पुकारें कि यीशू नासरी को क्रूश पर चढ़ा क्रूश पर चढ़ा। यह सुनके पिलात ने तीसरी वेर उन से पूछा कि "उस ने क्या बुराई किई है"। मै उस में प्राणदण्ड के योग्य कोई दोष नहीं पाता हूं। मैं उस को कोड़े लगवाके छोड़ दूंगा। पर जब उस ने देखा कि मुझ से कुछ नहीं बनता है तब उस ने अपने हाथ पानी में धोके कहा "मैं इस धर्मी के लोहू से निर्दोष हूं। जैसे मेरे धोये हुए हाथ सब प्रकार की अशुद्धता से शुद्ध हैं वैसे मैं इस धर्मी जन के लोहू से निर्दोष हूं। उस की स्त्री की चितौनी ने उस को बड़ा बेचैन किया था। उस ने सोचा होगा यदि मैं इस धर्मी को यहूदियों की इच्छा के अनुसार दोषी ठहराऊं तो मैं अपने को बड़ी जोखिम में डालुंगा। बात यह थी कि वह मन ही मन पाप से छुटकारा पाने न चाहता था इस लिये वह और अधिक शैतान के जाल में फसा। हां वह उस में जहां लों फंस गया कि वह उन बुरे लोगों की इच्छा के ऐसा आधीन हुआ कि उस ने उन की इच्छा पूरी किई। तौभी पिलात का दण्ड यहूदियों के दण्ड की अपेक्षा अधिक सहने योग्य होगा क्योंकि वे सच्चे धर्म से जानकार होते हुए उस के अनुसार नहीं चलते थे। उन्हों ने जाना कि यीशू नासरी निर्दोष है तौभी उन्हों ने उस को बध किये जाने के योग्य ठहराके पुकारा कि "उस का लोहू हम पर और हमारे लड़कों पर होवे"। अर्थात् उन्हो ने यों सोचा कि यदि वह निर्दोष हो तो परमेश्वर उस के लोहू का पलटा हम से और हमारे वंश से लेवे। वे अपने ऊपर स्राप लाये और यह स्राप उस दिन से आज के दिन लों उन को दबाता रहा। उन की दशा ऐसी है जैसा लिखा है कि

" वह स्राप देने में प्रीति रखता था इस लिये अब स्राप उस पर आ पडे और वह आशीर्वाद देने से प्रसन्न न होता था सो वह अब उस पर फलित न होवे " । यहूदियों ने मसीह को स्रापित ठहराया पर वे आप स्रापित ठहरे । परमेश्वर का धर्म उस आग के समान है जो सब कुछ भस्म कर देती है । जब से यहूदी मसीह पर झूठा दोष लगाके उसे घात करानेका यत्न करते थे तब से उस को तुच्छ जानते और उस के लोहू को अपने पांव तले रौंदते चले आये है । पर जहां कही वे जाते हैं वहां लोग उन को स्रापित समझते हैं । वे स्राप का चिन्ह अपने माथे पर रखे फिरते है । उनकी राजधानी नष्ट पडी है । उन की भूमि की उपज पराये लोग खाते हैं । तौभी यह वचन उन पर सच आता है कि परमेश्वर किसी पापी मनुष्य के मरण से प्रसन्न नहीं होता है । उस की इच्छा है कि यहूदी भी मसीह की ओर फिरें और जीवें । यीशू मसीह के जी उठने के पीछे हजारों यहूदी विश्वास करके मसीह के लोहू के कारण पाप से शुद्ध किये गये । हर समय के यहूदियों में थोडे जन हुए जिन का पाप-रूपी मल धो डाला गया । वह समय आवेगा जब परमेश्वर यहूदियों पर अपना अनुग्रह करनेहारा और प्रार्थना सिखानेहारा आत्मा उंडेलेगा तब वे प्रभु को जिसे उन्हों ने वेधा उसे ताकेंगे ॥

किसी ने कहा है कि इस वृत्तान्त से हम मन ही मन यह प्रार्थना करनी सीखें कि हे प्रभु यीशू अपने लोहू में हम को धो कि हम शुद्ध हो जावें हां हमें धो डाल कि हम हिम से अधिक सुफेद होवेंगे । तेरे लोहू का चिन्ह हमारे ऊपर होवें कि हम ससार के संग नष्ट न होवें । जैसे इस्रायलियों ने किरमिजी रंग के सूत की डोरी को जो खिड़की में बांधी हुई थी देखके राहाव और उस के घराने को बचाया तैसे परमेश्वर यीशू मसीह के लोहू को देखकर उस के सारे शरणागतों को बचावेगा ॥

पिलात ने बरब्बा छोडने को ठाना । पर अपने मन की घबराहट के कारण वह सोचने लगा कि मुझे दूसरा उपाय करना चाहिये कि जिस के द्वारा यीश नासरी बच जावे परन्तु सच पूछो तो बरब्बा के छोड़ देने से उस ने परमेश्वर के पवित्र जन को अधर्मियों के हाथ सौम्प दिया । पिलात ने अपने त्राणकर्त्ता को छोड़के अपने तईं शैतान के वश में सरा-सर सौम्प दिया ॥

हे भाई तुझ को भी चुनना पडेगा सो तू किस को चुनता है यीशू को अथवा बरब्बा को । तू ने यीशू की कथा सुनी हो और उस के अद्भुत

प्रेम के विषय सुनके तू पापरूपी नींद से जागने लगा हो। देख प्रभु यीशु तेरी दहिनी ओर खड़ा होके तुझ से बिनती करता है कि अपना मन मेरी ओर लगाके मेरा चेला बन जा। तेरी बाप और शैतान संसार तेरे बुरे स्वभाव समेत खड़े होके कहते हैं कि यीशु नासरी की बात मत मान परन्तु अपनी शारीरिक इच्छाओं पर चलता रह और उनका सुख भोगता जा कोई डर नहीं है। हे भाई क्या तू बरब्बा को छोड़ने अर्थात् पाप को निर्बन्ध करने चाहता है कि वह तेरे ऊपर प्रभुता करे और अन्त में तुझे नाश करे। हां ऐसा करने से क्या तू यीशु को बांधने चाहता है कि वह तेरी अगुवाई करने और सनातन सुख लों पहुंचाने न पावे॥

प्रभु यीशु इस लिये बांधा गया कि सारे आदमवंशी पाप से छुटकारा पाके निर्बन्ध हो जावें। परमेश्वर ने अपने निज पुत्र को न रख छोड़ा परन्तु उसे हम सभों के लिये सौंप दिया कि हम निर्बन्ध होके धार्मिकता और प्रेम के साथ परमेश्वर की सेवा करते हुए अपना जीवन बितावें और इस जीवन के पीछे धन्य लोगों के अधिकार के भागी होवें। प्रभु यीशु दण्ड के योग्य ठहराया गया कि हम दण्ड से बच जावें। हां परमेश्वर का प्रेम इतना बड़ा प्रगट हुआ कि उस ने अपने पुत्र को न्याय के सारे दावाओं को पूरा करने के लिये दे दिया जिस्तें परमेश्वर हम से दया का व्यवहार करने पावे। इस बड़े प्रेम को देखकर हमें चाहिये कि हम धूल पर औंधे मुंह गिरें और परमेश्वर का स्तुतिगान और धन्यबाद करें। आमेन॥

देखो इस मनुष्य को।

तब पिलात ने यीशु को लेके उसे कोड़े मारे। और योद्धाओं ने कांटों का मुकुट गूंथके उस के सिर पर रखा और उसे बैंजनी बस्त्र पहिराया और उस के पास आके कहा कि हे यहूदियों के राजा प्रणाम और उसे थपेड़े मारे। और पिलात ने फिर बाहर निकलके उन से कहा देखो मैं उसे तुम्हारे पास बाहर ले आता हूं कि तुम जानो कि मैं उस में कोई दोष नहीं पाता हूं। सो यीशु कांटों का मुकुट और बैंजनी बस्त्र पहिने हुए बाहर आया। और उस ने उन से कहा देखो इस मनुष्य को। योहन १६ : १-५। मत्ती २७ : २६-३०, मार्क १५ . १६-१६ को भी देखो॥

"तब पिलात ने यीशू को लेके उसे कोड़े मारे"। जो उपाय उस ने प्रभु यीशु के छुड़ाने के लिये किया था सो सुफल नहीं हुआ। इस लिये उस ने सोचा कि मैं दूसरा उपाय करके निस्सन्देह सुफल होऊंगा। मैं उसे कोड़े लगवाऊंगा। जब लोग उस को कोड़ों की मारों से घायल और लोहलुहान देखें तब उन को उस पर दया आयगी और वे पुकारने लगेंगे कि यीशू नासरी को क्रूश पर मत चढ़ा पर उसे छोड़ दे। महाराज के डर के मारे यह उपाय भी निष्फल हुआ और पिलात को ठहराना पड़ा कि धर्मी और निर्दोष यीशू क्रूश पर चढ़ाया जावे॥

पिलात ने प्रभु यीशू को पकड़वाया। परमेश्वर का प्रेम कितना बड़ा है। उस ने अपने पुत्र को पकड़वाये जाने के लिये दिया। यदि पुत्र हम से अचिन्त्य बड़ा प्रेम न रखता तो वे उसे पकड़के बांध न सकते। पर अपने अपार प्रेम के कारण वह चुप रहा और उन्हें इच्छानुसार करने दिया। उन्हों ने उसे कोड़े मारे। हे मेरे मन इस को विचार कर कि वैरियों ने हमारे परमधन्य प्रभु और मोक्ता को कोड़े लगवाकर लोहू-लुहान किया। रोमियों की रीति के अनुसार उन्हों ने उस की छाती और पीठ को नंगा करके उसे एक खंभे में बांधा। तब सिपाहियों ने चमड़े के कोड़े हाथ में लिये उस पास आये। इन कोड़ों में लोहे के कांटे लगाये हुये थे। इन कटीले कोड़ों से उन्हों ने प्रभु के नंगे शरीर पर मार पर मार लगाई। उस के पवित्र शरीर के कोड़ेवाले घावों से लोहू की धाराएं बहने लगीं। इस रीति प्रभु यीशू का यह वचन पूरा हुआ कि मनुष्य का पुत्र अन्य-देशियों के हाथ सौंपा जायगा और उस से ठट्ठा और अपमान किया जायगा और वे उस पर थूकेंगे और उसे कोड़े मारके घात करेंगे"। लिखा है कि "ठट्ठा करनेहारों के लिये दण्ड की और मूर्खों के लिये पीटने की तैयारी हुई है"। (नीतिवचन १९ : २९)। हे बुद्धिस्वरूप तू ने क्या मूर्खताई किई थी कि तू मार खावे। "जिस सेवक ने अपने स्वामी की आज्ञा न मानी सो बहुत सी मार खायगा"। हे प्रभु तू ने क्या आज्ञालंघन किया था। मैं ने तेरे विषय पढ़ा है कि तू परमेश्वर की इच्छा के आधीन होके संपूर्ण रीति से आज्ञाकारी रहा। सो तू ने काहेको मार खाई। धर्मपुस्तक इस प्रश्न का उत्तर देके कहती है कि "वह हमारे अपराधों के कारण घायल किया गया और हमारे अधर्म के कर्मों के हेतु कुचला गया था जो ताड़ना उस को मिली सो हम को शान्ति देने के लिये हुई और उस के कोड़े खाने से हम लोग चंगे हो सके"। जब कि हाल यह

है तो मैं आनन्द करके कह सकता हूं कि मेरे लिये उस ने कोड़े खाये कि मैं होनहार क्रोध से बच जाऊं। मेरे लिये वह कुचला गया और घायल किया गया कि मैं अपने प्राण का चगापन पाऊं। अपना पवित्र शरीर जो बलिदान के लिये चुना और तैयार किया गया था उसे प्रभु ने धीरज धरके आनन्द से दुःखदाई मार के लिये छोड़ दिया। अपने बड़े प्रेम के कारण उस ने उन बंधनों को नहीं तोड़ा जिन से वह लज्जा के खंभे में बांधा हुआ था। यदि वह न चाहता तो कोई उसे बांध न सकता। उस ने नबी के द्वारा कहा था कि "मैं ने उस की आज्ञा पालने में मारनेहारों की ओर अपनी पीठ किई"। (यशायाह ५० ६)। उस ने हमारी शारीरिक अभिलाषाओं के कारण जिन का कारखाना हमारी देह है बहुत सी मार खाई कि हमारी देहें शारीरिक अभिलाषाओं से शुद्ध किई जावें और उस की पवित्र देह के तुल्य अकलङ्क होवें। जैसे हम जानते हैं कि हमारा पुराना मनुष्यत्व उस के संग क्रूश पर चढ़ाया गया है तैसे हम यह भी जानते हैं कि हमारे पुराने मनुष्यत्व ने मसीह के मार खाने में मार खाई कि पाप का शरीर क्षय किया जाय। यीशू मसीह के मार खाने का फल जो है सो यह है कि जो लोग उस पर विश्वास रखते हैं उन के शरीर बुरी अभिलाषाओं के अधीन नहीं हैं वल्कि वे बुरी अभिलाषाओं को वश में रखते हुए पवित्रता और धार्मिकता के साथ अपना जीवन बिताते हैं। प्रभु यीशू के शारीरिक दुःखों के द्वारा पाप की प्रभुता का क्षय किया गया ऐसा कि जो यीशू मसीह पर विश्वास रखता है उस के ऊपर पाप प्रभुता नहीं रख सकता है"।

धर्मसंशोधन के समय के तीन एक सौ बरस के आगे जब लोग यह नहीं जानते थे कि मसीह हमारा धर्म है अर्थात् अपने ज्ञान के द्वारा उस पर विश्वास करनेहारों को धर्मी ठहराता है तब बहुत से लोग अपनी शारीरिक अभिलाषाओं को वश में करने और दबाने के मतलब से और परमेश्वर के क्रोध को दूर करने के लिये एक दूसरे को कोड़े मारा करते थे। ऐसे पश्चात्तापी मनुष्यों की बड़ी २ भाड़े एकट्ठी होकर एक शहर से दूसरे शहर लों चलते २ रोतीं और बिलाप करती पश्चात्ताप के गीत गाती और एक दूसरे को ऐसे कोड़े लगाया करती थीं कि लोहू की धाराए,उन के शरीरों से बहती थीं। उन भीड़ों में ऐसे जन कभी कभी पाये जाते थे जो पाप की बुराई से जानकार होके मन ही मन उस से

छुटकारा पाने के लिये तरसते थे पर वे छुटकारे के उपाय से अनजान होके सोचते थे कि हम आप अपने को पाप से शुद्ध करेंगे। उन को मालूम नहीं था कि प्रभु यीशू के कोडेवाले घावों के द्वारा हर एक पश्चात्तापी मनुष्य के लिये चंगापन प्राप्त हुआ है। हां वे इस से अनजान थे कि जो कोई प्रभु यीशू की शरण आवे वह बडा घिनौना पापी भी होवे तौभी वह अपने सारे पापों से शुद्ध किया जावेगा और अनन्त जीवन सेंतमेंत पावेगा। उन को मालूम नहीं था कि केवल वे लोग मन में सच्ची और स्थिर शान्ति रखते हैं जो इसका बिश्वास रखते हैं कि प्रभु यीशू ने हमारे लिये कोडे खाये और हमारे लिये कुचला गया। जिन का यह बिश्वास है वे प्रभु यीशू के चिन्ह अपनी देह में लिये फिरते हैं॥

हे भाइयो प्रभु यीशू ने हमारे और तुम्हारे लिये कोड़े खाये। यदि हम इस का विश्वास करें तो हम पवित्रात्मा की सहायता पाके आनन्द से और धीरज धरते हुए उन सारी मारों को सहेंगे जो हमें मसीही होने के कारण सहनी पड़ती हैं। "यदि अपराध करने से तुम घूसे खावों और धीरज धरो तो कौनसा यश है परन्तु यदि सुकर्म करने से तुम दुःख उठाओ और धीरज धरो तो यह ईश्वर के आगे प्रशंसा के योग्य है। तुम इसी के लिये बुलाये भी गये हो क्योंकि मसीह ने भी हमारे लिये दु.ख भोगा और हमारे लिये नमूना छोड़ गया कि तुम उस की लीक पर हो लेओ"। जब प्रेरित लोग मसीह के भविष्यद्वचन के अनुसार सुसमाचार के कारण मारे जाते थे तब वे इस बात से कि हम मसीह के नाम के लिये निन्दित होने और मार खाने के योग्य गिने जाते हैं आनन्द करते थे। उन के समान दुःख उठाना मसीह के दुःखों का संभागी होना है। चाहिये कि हम मसीही लोग मसीह के धीरज और दीनताई सहित सब प्रकार की ताड़ना सह लेवें और यह सोचें कि हमारे बुरे स्वभाव को चंगा करने वा सुधारने के लिये कडुवा औषध अवश्य है॥

वे प्रभु को कोड़े मारके नाना प्रकार से उस की अपनिन्दा करने और उसे दु.खाने लगे। अब प्रभु यीशू को नौ प्रकार का दु'ख उठाना पड़ा जैसे।

(१) "सिपाहियों ने उसे आंगन के भीतर ले जाके सारी जथा को एकट्ठा बुलाया"। यह जथा गिन्ती में चार एक सौ जन की थी। इन सिपाहियों ने बडी निर्दयता और क्रूरता दिखाके शक्ति भर उस को दुःखाया। जैसे नीच लोग धर्मी अय्यूब को तुच्छ जानके ठट्ठों में उड़ाते

थे तैसे इन गांवार और निर्दयी सिपाहियों ने उस से नाना प्रकार से ठट्ठा करके उस की अपनिन्दा किई। हे मेरे त्राणकर्त्ता तेरा धन्यवाद और स्तुति होवे कि तू ठट्ठा करनेहारों के बीच इस लिये खड़ा हुआ कि मैं उन की सगति से बचके उन धन्य लोगों की सभा में मिल जाऊं जिन के नाम स्वर्ग में लिखे हुए हैं। हे प्रभु अपने इस अचिन्त्य बड़े प्रेम के कारण मुझ को ऐसा मन दे कि जब नीच लोग मेरी निन्दा और नामधराई करें तब मैं दीन होके और धीरज धरकर तेरे समान परमेश्वर की महिमा प्रगट करूं॥

(२) "उन्हों ने उस के वस्त्र उतारे"। जब उन्हों ने प्रभु की पवित्र और शुचि देह को नंगा किया तब उस ने श्रीमान राजा दाऊद का सा अनुभव किया होगा कि उस का हृदय नामधराई के कारण फट गया। जिस ने इस जगत के पहिले पापियों के नंगापन के ढांकने के लिये कपड़े बनाये वह पापियों के बीच नंगा बैठा था। हम पाप के कारण धर्म रहित और नंगे हैं इस लिये अवश्य था कि वह नगा और लज्जा से भरा होवे कि वह हम को धर्म के वस्त्र पहिनाने पावे॥

(३) "उन्हों ने उसे बैंजनी रंग का वस्त्र पहिनाया"। आदम और हव्वा ने अंजीर के पत्ते जोड़ जोड़के अपने नगापन को ढांका पर वे परमेश्वर से अपना पाप छिपा न सके इसी लिये प्रभु यीशू को बैंजनी रंग का वस्त्र पहिनाया गया कि वह हमारे लिये धर्म का पहनावा प्राप्त करे। उस ने इस वस्त्र को अपने लोहू से लाल किया। जैसे हेरोद ने उस को सुफेद अंगा पहिनवाके उस से ठट्ठा किया तैसे सिपाहियों ने लाल रंग का पुराना और फटा हुआ वस्त्र उसे पहिनाके ठट्ठों में उड़ाया। चाहिये था कि वह राजा के चमकीले वस्त्र पहिन लेवे क्योंकि वह स्वर्ग के राज्य का राजा है। उस ने मनुष्यों के पापों के लिये प्रायश्चित्त करके परमेश्वर के क्रोधरूपी हौद में अकेला ही दाख रौंदी है और उनके लोहू के छींटे जो उस के वस्त्रों पर पड़े सो उस का पहिरावा मैला हो गया। हां "मेरा प्यारा गोरा और लाल सा है वह दस हजारों में भी उत्तम है"। जो लाल वस्त्र प्रभु यीशू पहिने था उस के नीचे हमारे सारे पाप और बिपत्तियां छिपी हुई हैं॥

(४) "उन्हों ने कांटों का मुकुट गूंथके उस के सिर पर रखा"। उस को पीड़ा देने और उस से ठट्ठा करने के लिये उन्हों ने यह किया। कांटों ने उस के सिर में गड़के और उस से लोहू को बहाकर उस को

अत्यन्त बड़ा दुःख दिया। फिर कांटों के मुकुट को उस के सिर पर देखके सब लोग सोचें कि यह राजा बड़ा निकम्मा और तुच्छ जन है। यदि उस को इतनी बड़ी शक्ति होती जैसे लोग अनुमान करते हैं तो वह उन को अपना ऐसा निरादर करने नहीं देता। पर सच पूछो तो उस के सिर पर कांटों का मुकुट इस लिये धरा गया कि हमारे सिरों पर अनन्त जीवन आदर और महिमा के मुकुट बांधे जावें। जैसे कांटेवाले झाड में सुन्दर गुलाब के फूल लगते हैं तैसे मसीह के कांटेवाले मुकुट से विश्वासियों के लिये विजयरूपी फूल निकलते हैं। वे इन फूलों से सुशोभित होते हैं। मसीह का सिर कांटों से दुःखित और लोहूलुहान हुआ जिस्तें उस पर विश्वास रखनेहारे दुःख और संकट के दिन न घबरावें बल्कि मसीह के तुल्य शान्तमन होके जानें कि अपने राजा के सरीखे हम भी जयवन्त होके धर्म का मुकुट पहिनने पावेंगे॥

(५) "उन्हों ने उस के दहिने हाथ में नरकट दिया"। राजकीय बैजनी वस्त्र के पलटे में उन्हों ने उस को पुराना फटा हुआ लाल वस्त्र पहिनाया। हीरों से जड़ित सोने के मुकुट के बदले में उस के सिर पर कांटों का मुकुट बांधा गया और सुनहरे राजदण्ड के पलटे में एक कमजोर नरकट उस के हाथ में दिया गया। उन्हों ने इन तुच्छ आभूषणों को इस मतलब से उसे पहिनाया कि उस की नामधराई और हंसी किई जावे। संसार के लोग मसीह के राज्य को जिस की महिमा उन से छिपी हुई है तुच्छ जानते और सोचते हैं कि कमजोर नरकट के समान यह शीघ्र टूटेगा। पर मसीह का राजदण्ड जो है सो न्याय का और सामर्थ्य का है। उस के द्वारा वह अपनी प्रजा के लोगों को अपनी इच्छानुसार चलाता है और अपने बैरियों के सिर फोड देता है। उस की प्रजा अपने में कमजोर नरकट के समान दुर्बल हैं पर वह उन्हें अपने बलवन्त हाथ से संभाले रहता है। उन का विश्वास तो कभी २ हिलनेवाले नरकट के समान होता है पर मसीह उस को बढाके दृढ़ करता है कि वे जयवन्त ठहरते हैं॥

(६) "वे उस का नमस्कार करके उस से कहने लगे कि हे यहूदियों के राजा प्रणाम"। पहिले उन्हों ने उस को कोड़े मारे पर अब वे गाली देके उस का अपमान करने लगे। उन्हों ने घुटने टेकके उस को प्रणाम किया" अर्थात् उन्हों ने ठट्ठा करके जैसा राजाओं का आदर किया जाता है तैसा उस का आदर किया। हम लोगों के अभिमान और घमंड के

कारण प्रभु यीशू अपमानित और निन्दित हुआ जिस्तें हम दीन हो जावें और आदरयोग्य ठहरें ॥

(७) "उन्हों ने उस पर थूका"। थूक और निन्दा मानो वे दान थे जिन को वे लिये हुए उस के आगे आये। हे सौम्य चिहरे जिस से सारा संसार डरता और थरथराता है तू पापी मनुष्यों के थूक से अशुद्ध किया गया जिस्तें हमारे चिहरे सब प्रकार के पापरूपी चिन्हों से शुद्ध होके तेरी महिमा को प्रगट करें। ईश्वर करे कि जिन मनुष्यों के मन में प्रभु यीशू विराजमान होता है उन में उस के चिहरे की महिमा प्रतिबिम्बित होवे। जो मनुष्य अपने मन में बुरी इच्छाओं और खियालों को पालता है वह मानो प्रभु के पवित्र मुंहपर थूकता है ॥

(८) "उन्हों ने उसे थपेडे मारे"। प्रभु यीशू ने जो प्रतापी राजा है पीड़ित और क्लेशित होके बिना कुड़कुडाये मार खाई। क्या हम लोग बिना कुडकुड़ाये उस के नाम के कारण मार खाया करते हैं कि नहीं। ऐसा जान पडता है कि इस समय के मसीही बहुत करके आरामतलबी होते हुए क्लेश और दुःख से भय खाते हैं। हां जब लोग उन को कुछ गाली देवें अथवा उन की नामधराई करे तो वे झट मसीह से लज्जित होने लगते हैं। हमें जानना चाहिये कि जो प्रभु यीशू के संग निन्दा और अपमान सहते हैं केवल वे ही स्वर्ग में हाजिर होके विजयी मंडली के संग परमेश्वर के दर्शन के पाने में परमसुखी होवेंगे। सब प्रकार के डरपोकने स्वर्ग से बाहर रहेंगे ॥

(९) "उन्हों ने नरकट लेके उस के सिर पर मारा"। आशिया खण्ड के राजाओं की प्रचलित रीति है कि वे प्रजा की ओर राजदण्ड बढ़ाते हैं जिस्तें प्रजा उसे चूमे पर रोमी सिपाहियों ने मसीह राजा के नरकटरूपी राजदण्ड को लेके उस के सिर पर मारा। उन्हों ने मार पर मार लगाके सिर पर धरे हुए मुकुट के कांटों को उस के माथे में दबाया। जो दुःख सिपाहियों ने उसके सिर पर मारने से दिया उस के समान दुःख वे लोग मसीह को देते हैं जो उस के वचन का झूठा अर्थ लगाके अपने मनमताओं के अनुसार बुरे मार्ग पर चलते हैं। वे मानो मसीह के राजदण्ड को लेके उस के सिर पर मारते हैं ॥

क्रूश पर चढ़ाये जाने के पहिले मसीह को असहनयोग्य दुःख उठाना पड़ा। जो कुकर्मी उस के संग क्रूशों पर चढाये गये वे ऐसे दुःखों से बच गये। जब इब्राहीम अपने बेटे इसहाक को वध करने पर था तब

परमेश्वर को इसहाक पर दया आई और उस ने इब्राहीम से कहा "उस लड़के पर हाथ मत बढ़ा" परन्तु उस ने उन हाथों को न रोका जो उस के एकलौते पुत्र को मारते थे। ईश्वर का प्रेम जो मनुष्यों की ओर है सो इतना बड़ा है कि उस ने अपने निज पुत्र को न रख छोड़ा बल्कि असहनयोग्य दु:ख और निन्दा सहने को दे दिया। किसी ने कहा है कि न केवल मसीह के एक अंग को बल्कि उस की सारी देह को भयानक दु ख और पीड़ा उठानी पड़ी। उस का सिर कांटों के मुकुट से और थपेड़ों से घायल किया गया। उस का चिहरा थूक और लोहू से और मार खाने से बिगड़ा हुआ था। उस के शरीर पर एक पुराना मैला और फटा बैंजनी बस्त्र ओढ़ा गया। उस के हाथों में नरकट दिया गया और उस की जीभ को पित्त से मिला हुआ सिरका चखना पड़ा॥

निदान पिलात ने सोचा कि उन्हों ने उस को बहुत दु खाया है सो उस ने बाहर निकलके लोगों से कहा देखो मैं उसे तुम्हारे पास बाहर ले आता हूं कि तुम जानो कि मैं उस में कोई दोष नहीं पाता हूं। पिलात ने सोचा होगा कि मैं ने बड़ी चालाकी किई है और मानो उन से कहा देखो मैंने तुम्हारी इच्छा के अनुसार इस मनुष्य को कोड़े लगवाके ठट्ठों में उड़वाया है। क्या तुम अब सतुष्ट नही हो गये। मुझ से कुछ और मत मांगो। तुम आप देखते हो कि यह एक निरुपाय मनुष्य है। तुम उस के विषय क्यों इतना बडा बखेड़ा करते हो। फिर जब प्रभु दु खित और पीड़ित होकर बाहर आया तब उस ने कुछ समदुःख दिखाके उन से कहा "देखो इस मनुष्य को"। उस पर दया करके उस को जीवदान देओ। तुम लोग आप समझ सकते हो कि इस निकम्मे राजा से किसी को हानि नही हो सकती। हां प्रभु यीशू यहां लों तुच्छ गिना गया कि पिलात ने सोचा कि वह इस के योग्य नहीं है कि कोई उस से बैर रखे। अधर्मी लोग मसीह के चेलों को तुच्छ जानके सोचते हैं कि उन का मसीह किसी काम का नहीं है। केवल भोले और असमझ लोग उस के पीछे हो लेते हैं। कोई २ उन को कुछ समदु ख दिखाके कहते हैं कि उन को रहने दे। वे निर्बुद्धि और असभ्य हैं। वे हमारी हानि कर नहीं सकते हैं॥

बिना जाने पिलात ने एक बचन कहा जिस में हमारी मुक्ति का भेद छिपा हुआ है। हां हमारी कुदशा और महिमा भी इस बचन में छिपी हुई है। प्रभु पुकारक इस बचन को सब मनुष्यों से कहता है कि "इस

मनुष्य को देखो"। तब धर्मपुस्तक का बचन पूरा हुआ कि 'वह तुच्छ गिना जाता था और महापुरुष उस का कुछ लेखा न करते थे। वह दुःखी पुरुष था''। हम पापियों के कारण वह तुच्छ गिना गया। इस मनुष्य को देखो। क्या वह राजा होने को ईश्वर के स्वरूप में न सृजा गया था। पर अब वह कैसा हो गया है। स्वर्ग में उस के लिये जगह नहीं है क्योंकि वह अशुद्ध है। पर परमेश्वर धन्य होवे कि उस ने अपना पुत्र दे दिया कि वह मनुष्य को सुधारे और स्वर्ग के योग्य बनावे। उस ने अपने दुःखों और मरण के द्वारा मनुष्यों को स्राप से हां पाप की सारी विपत्तियों से छुड़ाया कि निन्दित और लज्जित होने के बदले वे आदरमान होके परमेश्वर के संग रहने पावें। आमेन॥

कैसर का मित्र।

जब महायाजकों और प्यादों ने उसे देखा तब उन्हों ने चिल्लाके कहा कि उसे क्रूश पर चढ़ा क्रूश पर चढ़ा। पिलात ने उनसे कहा तुम ही उसे लेके क्रूश पर चढ़ाओ क्योंकि मैं उस में कोई दोष नहीं पाता हूं। यहूदियों ने उस को उत्तर दिया कि हम लोगों की व्यवस्था है और उस व्यवस्था के अनुसार वह बध होने के योग्य है क्योंकि उस ने अपने को ईश्वर का पुत्र ठहराया। जब पिलात ने ये बातें सुनीं तब और भी डर गया और फिर अध्यक्षभवन के भीतर गया और यीशू से कहा तू कहां का है। परन्तु यीशू ने उस को उत्तर न दिया। पिलात ने उस से कहा क्या तू मुझ से नहीं बोलता क्या तू नहीं जानता कि तुझे छोड़ देने का मुझ को अधिकार है और तुझे क्रूश पर चढ़ाने का मुझ को अधिकार है। यीशू ने उस को उत्तर दिया यदि तुझ को ऊपर से न दिया जाता तो तुझे मुझ पर कुछ अधिकार न होता इस लिये जिस ने मुझे तेरे हाथ में सौंपा उस का अधिक पाप है। इस से पिलात ने उस को छोड़ देने चाहा परन्तु यहूदियों ने पुकारके कहा यदि तू इस को छोड देवे तो तू कैसर का मित्र नहीं है जो कोइ अपने को राजा ठहराता है सो कैसर का बिरोध करता है। ये बातें सुनके पिलात यीशू को बाहर ले आया और एक स्थान में जो चबूतरा परन्तु इब्रानी भाषा में गबथा कहलाता है विचारासन पर बैठा। निस्तारपर्व्व की तैयारी का दिन था और दो पहर के लगभग था। और उस ने यहूदियों से कहा देखो अपने राजा को।

तब वे चिल्लाने लगे कि ले जा ले जा उसे क्रूश पर चढ़ा। पिलात ने उन से कहा क्या मैं तुम्हारे राजा को क्रूश पर चढ़ाऊं। महायाजकों ने उत्तर दिया कि कैसर को छोड़ हमारा कोई राजा नहीं है। तब उस ने उसे क्रूश पर चढाये जाने को उन के हाथ में सौम्पा। योहन १९ : ६–१६ ॥

उस लोहूलुहान कुचले और कुटे हुए यहूदियों के राजा को देखके पिलात ने अचम्भित होकर पुकारा कि इस मनुष्य को देखो। उस को जान पड़ा कि मेरा यह उपाय सुफल होगा। क्योंकि भीड़ में से किसी ने कुछ नहीं कहा। पर महायाजकों और अध्यापकों की समझ में प्रभु यीशू ने उन के खोटे धर्म के प्रगट करने में इतना बड़ा अपराध किया था कि जिस की क्षमा अनहोनी है। इस लिये जब वे प्रभु यीशू को देखने पाये तब क्रोध से भरपूर होकर पुकारने लगे कि उसे क्रूश पर चढ़ा उसे क्रूश पर चढ़ा। जो वचन उनहत्तरवें स्तोत्र में लिखा हुआ है सो तब पूरा हुआ कि "जिस को तू ने मारा वे उस के पीछे पड़े हैं और जिन को तू ने घायल किया वे उन की पीडा की चर्चा करते हैं"। यह भी पूरा हुआ जो प्रभु यीशू ने कहा था कि "मालियों ने पुत्र को देखके आपस में कहा यह तो अधिकारी है आओ इसे मार डालें"। उन की शैतानी पुकार सुनके परमेश्वर ने बड़ी सहनशीलता दिखाई। यदि वह सहनशीलता न दिखाता वलिक अपने यथार्थ क्रोध को भडकने देता तो वे क्षण भर में भस्म हो जाते। इस बात में दुवधा नहीं है कि प्रभु यीशू अपने सतानेहारों की पुकार सुनके उन के लिये सारे मन से विनती करने लगा कि परमेश्वर उन पर दया करके उन के मन की कठोरता और अभक्ति के अनुसार उन से व्यवहार न करे। हां उस ने मेरे लिये भी विनती किई क्योंकि अपने पापों के कारण मैं ने भी उन के संग पुकारा कि उसे क्रूश पर चढ़ा। जो मनुष्य यीशू मसीह के दुखभोग और भयानक मृत्यु से यह नहीं सीखते हैं कि हमारा पुण्य प्रताप कुछ नहीं है और हमारा सारा धर्म जो है सो मैले कुचैले चिथड़ों के समान निकम्मा है वे अब तक पुकारा करते हैं कि उसे क्रूश पर चढ़ा। जो कोई अपने को अर्थात् अपने बुरे स्वभाव को क्रूश पर नहीं चढ़ाया करता है सो मानो मसीह को क्रूश पर चढ़ाया करता है ॥

पिलात महायाजकों की निर्दयी पुकार सुनके भयमान और अचम्भित भया। उस ने ठाना था कि मैं क्रूर यहूदियों की इच्छा पूरी न करूंगा। निर्दोषी को इतना बहुत दुःख दिलाने के हेतु वह व्याकुल जान-

पड़ा। उस ने क्रोधित होके तीसरी बेर उन से कहा "मैं इस मनुष्य में कोई दोष नहीं पाता हूं। तुम उसे लेके क्रूश पर चढाओ"। पिलात ने धोखा खाके न जाना कि इस मुकद्दमे की समाप्ति इस रीति से नहीं हो सकती। उस पर फर्ज़ था कि प्रगटरूप से ठान लेवे कि किस का मित्र होऊं यीशू का अथवा यिहूदियों का। उस को ठानना चाहिये था कि क्या मैं प्रभु यीशू के बिरुद्ध होके शैतान और उस के सेवकों की इच्छा को पूरा करूगा। क्या मैं अपने प्राण को बचाऊं अथवा खो देऊं। उस ने ठानना नहीं चाहा पर उस को ठानना पड़ा। जो दोष यहूदियों ने प्रभु यीशू पर लगाया था कि वह राजद्रोही है सो झूठा ठहर चुका। पर महायाजकों ने उसे इस लिये बध किये जाने के योग्य ठहराया था कि उस ने कहा था कि मैं ईश्वर का पुत्र हूं सो उन्हों ने इस दोष को पेश करके पिलात से कहा कि हमारी व्यवस्था के अनुसार यीशू नासरी प्राणदण्ड के योग्य है क्योंकि अपने को परमेश्वर का पुत्र कहने से उस ने परमेश्वर की निन्दा किई। अब प्रगट हुआ कि किस कारण से अवश्य था कि यीशू मर जावे। अवश्य था कि वह अपने मरण के द्वारा मनुष्यों के पापों के लिये प्रायश्चित्त करे। अवश्य था कि मसीह अपने दुःख और मरण के द्वारा शैतान के कामों को लोप करे और मनुष्यों को उस के बश से छुडावे। मसीह ईश्वर का पुत्र अर्थात् शरीर में प्रगट हुआ ईश्वर था इसी लिये अवश्य था कि वह बध किया जावे। परमेश्वर ने जगत की उत्पत्ति के आगे ठहराया था कि मसीह अपने बहुमूल्य लोहू के द्वारा पाप से मनुष्यों का उद्धार करे। वह इस लिये नहीं मरा कि उस ने अपने को ईश्वर का पुत्र ठहराया था। जो जन ईश्वर का पुत्र न होके अपने को ईश्वर का पुत्र ठहरावे सो ईश्वर की निन्दा करता है। प्रभु यीशू ने केवल मान लिया था कि मैं कौन हूं। (योहन ५ १८)। उस ने कहा था कि "मैं और पिता एक हैं"। परमेश्वर ने तीन बेर स्वर्ग से पुकारा था कि "यह" अर्थात् यीशू मसीह "मेरा प्रिय पुत्र है जिस से मैं प्रसन्न हूं"। उस ने सैकड़ों बरस के आगे स्तोत्ररचक के द्वारा मसीह से कहा था "तू मेरा पुत्र है आज मैं ही ने तुझे जन्माया"॥

इन बातों से जान पडता है कि जो लोग नहीं मानते हैं कि यीशू मसीह ईश्वर का पुत्र है अर्थात् परमेश्वरताई का भागी है सो उस को ईश्वरनिन्दक समझते और इस लिये उस को बध किये जाने के योग्य ठहराते हैं पर यदि हम लोग यीशू मसीह को कुछ जानने लगे हों सो

ऐसे बुरे खियालों को दूर कर क्योंकि हम ईश्वरादिष्ट बचन से और अपने मन के अनुभव से जानते हैं कि यीशू मसीह जो है सो ईश्वर का पुत्र है। ईश्वर का पुत्र होने के कारण वह क्रूश पर चढ़ाया गया कि जगत के लोगों के पापों को दूर करे। हम मसीही लोग मानते हैं कि वह हमारे लिये क्रूश पर मरा कि हम जीवन पावें। हां यही हमारा विश्वास है। इस विश्वास के द्वारा हम नये मनुष्य हो गये। यीशू मसीह को ईश्वर का पुत्र मानके उस पर विश्वास करने से हम ईश्वर के लड़केबाले और स्वर्ग के अधिकारी हो गये हैं॥

जो लोग पवित्रात्मा से प्रकाशित और शिक्षित हुए केवल वे ही उस मारे कुटे हुए और घायल मनुष्य को जो यहूदियों के साम्हने खड़ा था देखके जान सकते हैं कि यही ईश्वर का पुत्र है। इस निन्दित और पीड़ित मनुष्य की गुप्त महिमा वा तेज की कोई किरण दिखाई दिई हो। पिलात ने प्रभु यीशू की अद्भुत सहनशीलता और धीर को देखके सोचा होगा कि यह मनुष्य और मनुष्यों से बढकर है सो जब उस ने सुना कि यीशू ने अपने को ईश्वर का पुत्र बनाया था तब उस का डर और अधिक बढ गया। जो लोग ईश्वर से प्रेम नहीं रखते हैं वे ईश्वर की समीपता में रहने से भय खाते हैं। पिलात ने भवन में प्रवेश किया और प्रभु यीशू को अपने पास बुलाके उस से पूछा कि "तू कहां का है"। उस ने उस से मानो यों कहा लोग कहते है कि तू गालील देशका है पर तू आप क्या कहता है। पुरानी कथाओं में लिखा हुआ है कि कभी २ देवताओं के पुत्र मनुष्यरूप धारण करके पृथिवी पर फिरा करते हैं। क्या यह संभव है कि तू उन में से एक है। तू ने मुझ से कहा कि मेरा राज्य इस ससार का नहीं है पर मैं इस ससार में आया हूं कि सच्चाई पर साक्षी देऊं सो कृपा करके मुझे बता कि तू कहां का है। पिलात के ये खियाल हुए होंगे। क्या जाने उसने इस के आगे बापदादों के धर्म से ठट्ठा किया था पर अब उस के मन ने उस को दोषी ठहराया सो उस ने व्याकुल होके सोचा कि जो मैं ने सुना था शायद वह सच है। देवपूजक जातिगणों की किस्से कहानियों में सत्यता के कुछ बीज पाये तो जाते हैं। लुस्त्रा के अज्ञानी देवपूजकों ने पावल और बर्णबा के विषय कहा "देवगण मनुष्यों के समान होके हमारे पास उतर आये हैं"। जिस की आशा ईश्वर के खोजी प्राचीन काल से रखते आये थे सो अब आया था। जो यीशू मसीह पिलात के साम्हने खड़ा था उस में नबियों के भविष्यद्वचन पूरे हुए थे। वह मनुष्य का और ईश्वर का

पुत्र भी है। पिलात ने सत्यता का यह भेद नहीं बूझा। यदि उस को बूझ-कर दिल ओ जान से मान लेता तो वह धन्य होता॥

यीशू ने उस को उत्तर न दिया"। वह क्यों चुप रहा। उस ने याकूब के कूए पर पापिनी को यरूशलेम में जन्म के अन्धे मनुष्य को और बहुत से और निरुपाय प्राणियों को बताके कहा था कि मैं मसीह अर्थात् ईश्वर का पुत्र हूं। पिलात उत्तर पाने के योग्य न था क्योंकि जब प्रभु ने उस से बातें कर उस को बताया कि "मैं सत्य पर साक्षी देने को आया हूं तब उस ने प्रभु की ओर पीठ फेरके सुनने न चाहा। उस ने तब विश्वास नहीं किया जब प्रभु ने उस को सच्चाई का ज्ञान सिखाने चाहा इस लिये उस के यथार्थ दण्ड के लिये प्रभु चुप रहा। अब उस ने सच्चाई को ढूंढ-करके न पाया। इस से हमें सीखना चाहिये कि जब सत्यता अर्थात् जब सत्यस्वरूप प्रभु यीशू किसी से बातें करके उस को सच्चाई का ज्ञान सिखाने चाहे यदि वह तब ही सच्चाई को न माने तो वह इस के पीछे उसे वृथा ढूढ़ेगा। पिलात ने किस कारण से पूछा। क्या वह अपने पापों के कारण क्लेशित होके मुक्ति का अभिलाषी था और इस लिये सोचा कि यदि तू जैसे यहूदी कहते हैं कि तू ने कहा है तैसे ईश्वर का पुत्र हो तो तू मुझ अधम पापी को बचा सकेगा। यह उस के पूछने का अभिप्राय नहीं था। उस ने केवल डरके मारे यों पूछा। उस ने चाहा कि प्रभु यीशू यह उत्तर देके कहे कि मैं स्वर्ग से नहीं आया हूं। जो तेरे साम्हने खड़ा है सो केवल एक बिनाशी मनुष्य है। वह ईश्वर का पुत्र नहीं है। अन्तर-यामी और घट घट का जाननेहारा प्रभु यीशू पिलात सरीखे पूछनेहारों को उत्तर नहीं देता है। जो मनुष्य मसीह को दण्ड के योग्य ठहराने चाहे उस को ईश्वर की ओर से उत्तर न मिलेगा। जो मनुष्य धर्मपुस्तक को खोटा ठहराने के मतलब से पढ़े उस को उस के द्वारा सच्चाई का ज्ञान नहीं प्राप्त होगा। धर्मपुस्तक उस के लिये मानो चुप रहेगी। परन्तु जो मनुष्य सच्चाई का खोजी होके सीधे और सारे मन से सत्य को ढूढ़े सो धर्मपुस्तक के द्वारा सत्यता का ज्ञान प्राप्त करेगा। वह धर्मपुस्तक के बचन के द्वारा उजियाला और बुद्धि पाके निश्चय जानने लगेगा कि जिस यीशू का बर्णन मसीही धर्मपुस्तक में लिखा हुआ है सो मेरा और सारे संसार का त्राणकर्त्ता है। उस मनुष्य पर हाय जिस को प्रभु उत्तर न देवे। उस से परमेश्वर का आत्मा अलग हो गया और वह होते होते यहां लों कठोर बन जाता है कि उस का प्रभु की ओर फिरना अनहोना

ठहरेगा। यह कठोरता ईश्वर की ओर से उस की अविश्वस्तता का यथार्थ दण्ड है॥

पिलात ने प्रभु यीशू के चुप रहने से अचंभा करके फिर कहा "क्या तू मुझ से नहीं बोलता क्या तू नहीं जानता कि तुझे छोड़ देने का मुझ को अधिकार है और क्रूश पर चढ़ाने का मुझ को अधिकार है"। उस के कहने का यह अर्थ है कि क्या तुझ को मालूम नहीं है कि मुझ सरीखे महापुरुष के मुंह के वचन पर तेरा जीवन और मरण अवलम्बित हैं। जो मैं चाहूं तो न्याय के अनुसार तुझे छोड सकूं और यदि मेरी इच्छा हो तो मैं न्याय के विरुद्ध तुझे वध किये जाने के योग्य ठहरा सकूं। यह सुनके प्रभु अपना मुंह खोलके बोला कि "यदि तुझ को ऊपर से न दिया जाता तो तुझे मुझ पर कुछ अधिकार न होता इस लिये जिस ने मुझे तेरे हाथ में सौंपा उस का अधिक पाप है"। प्रभु के वचन का यह अर्थ है कि तू सोचता है कि दण्ड देने का और छोडने का मेरा निज अधिकार है पर जब कि तू उसी को नहीं जानता है जो ऊपर से है तो तेरा अपराध यहूदियों के अपराध से छोटा है क्योंकि वे जानबूझकर सच्चाई से मुकरते हैं और जानना नहीं चाहते हैं कि यीशू नासरी जो मैं हूं सो ईश्वर का पुत्र है। मसीही लोग जो सच्चाई का ज्ञान रखते पर उस के अनुसार अपना जीवन नहीं बिताते हैं उन का दण्ड बहुदेवमतवालों के दण्ड से बडा होगा क्योंकि ये सच ज्ञान से रहित हैं॥

हे भाइयो तुम जो प्रभु यीशू का भय मानते हो अब उस की ओर दृष्टि लगाके उस को देखो। वह दण्ड के योग्य ठहराया जाता है तौभी न्यायकर्त्ता का सा उस का व्यवहार है। वह अपने दोषदायकों को दण्ड के योग्य ठहराता है। पर हमें जानना चाहिये कि जब वैरियों ने अन्याय से प्रभु को दोषी ठहराया तब उस ने उस की ओर दृष्टि लगाई जो न्याय के अनुसार विचार करता है उस को मालूम था कि मेरा स्वर्गवासी पिता इन दु खों और निन्दाओं के द्वारा मुझ पर अपना सारा धर्म प्रगट करता है कि वह उन सभों को जो मुझ पर विश्वास करें धर्मी ठहरा सके। उस ने सोचा कि पिता का प्रेम पापी मनुष्यों की ओर इतना बडा है कि उस ने मुझ अपने पुत्र को न रख छोडा बल्कि मुझे दुःखों को उठाने के लिये भेजा कि वह मनुष्यों पर दया करने पावे। इन बातों पर सोचते हुए वह शान्तमन होके बिना कुडकुड़ाये इन दुःखों को सहता था॥

पिलात मसीह का उत्तर सुनके चुप हो गया। उस ने प्रभु को न धमकाया। उस का मन कांपने लगा क्योंकि उस को जान पड़ा कि यीशू मेरा दोष कम करने चाहता है। वह ऐसी सहनशीलता और कोमलता से अनजान था। तब से उस की बेचैनी दुगनी हो गई। सो वह उसे छुडाने का यत्न फिर करने लगा। पर जब उस ने बाहर आके लोगों को अपना इरादा बताया तब उन का क्रोध भडका और वे उस को डराने और कहने लगे कि यदि तू इस को छोड़ देवे तो तू कैसर का मित्र नहीं है। यह सुनके पिलात भयभीत हुआ और सोचने लगा कि जो कुछ हो सो हो पर कैसर महाराज की मित्रता मुझ को न खो देनी चाहिये। यदि महाराज मेरा वैरी हो जावे तो मेरा निरादर और सत्यानाश होगा। सच तो यह है कि यहूदियों के इस बेचारे राजा की ओर से महाराज को कुछ हानि पहुंच नहीं सकती है। फिर उस ने सोचा होगा कि जो कुछ मुझ से बन पडा उसे मैंने उस के बचाने के लिये किया है। फिर यदि मैं एक नीच यहूदी के कारण महाराज की मित्रता को खो देऊं तो मैं सचमुच बड़ा मूर्ख ठहरूंगा। फिर जब कि उस के देशी भाई उस से दिल औ जान से बैर रखते हैं तो बहुत संभव है कि वह दोषी है। उस की सारी चालों और व्यवहारों से जान पड़ता है कि वह सब और मनुष्यों से श्रेष्ठ है हां देव के से गुण उस के स्वभाव में प्रगट होते हैं। ईश्वर और परलोक और सत्यता के विषय कोई कुछ नहीं जानता है। क्या जाने वे हैं या नहीं। पर मैं निश्चय जानता हूं कि रोमी महाराजा है और मैं उस की प्रसन्नता नहीं खोऊंगा॥

यहूदियों ने इस झूठे मुकद्दमे के द्वारा पिलात को बडा क्लेशित और बेचैन किया था इस लिये उस ने उन पर क्रोध करके उन से कहा अपने राजा को देखो। पर जब वे पुकारने लगे कि उसे ले जा उसे क्रूश पर चढ़ा तो उस ने फिर पूछा कि क्या मैं तुम्हारे राजा को क्रूश पर चढ़ाऊं तुम तो स्वीकार करते हो कि हमारे राजा का सिंहासन एक आड़ी लकड़ी होगा। वे इस वचन को सुनके चिडे और पुकारने लगे कि कैसर को छोड़ हमारा कोई राजा नहीं है। वे तो कैसर के जानी दुशमन थे तौभी यीशू मसीह की अपेक्षा वे उसे अधिक चाहते थे। मृदुभाव सहनशील और प्रेमवन्त प्रभु यीशू के पलटे में उन्हों ने एक निर्दयी और उपद्रवी राजा को चुना। वे इस का फल थोड़े दिनों के पीछे भुगतने पाये॥

निदान जब पिलात ने देखा कि मुझ से कुछ नहीं बनता है तब उस ने ठहराया कि यीशू नासरी क्रूश पर चढ़ाया जावे। पिलात इस कारण हार गया कि उस ने स्वर्ग के राज्य के राजा के मित्र होने की अपेक्षा इस संसार के एक राजा का मित्र होना अधिक प्रिय जाना। उस ने थोड़े मोल में अपने अनमोल प्राण को बेच डाला। कैसर की मित्रता बहुत दिन लों न रही। तीन एक बरस के पीछे पिलात अपने पद से उतारा गया। महाराजा ने ठहराया कि वह फ्रांस देश में बन्धुआ होके रहे। कई इतिहासवेत्ता कहते हैं कि इस महाराजा के उत्तराधिकारी ने उस से अधिक कुव्यवहार किया कि पिलात ने निराश होके आत्मघात किया पर और लोगों ने लिखा है कि नेरो नाम महाराज ने उस का सिर कटवाया। इस कथा से सीखना चाहिये कि जो अपने मन की साक्षी के विरुद्ध अनुचित काम करे सो उस का बुरा फल भुगतने पावेगा क्योंकि ईश्वर से ठट्ठा नहीं किया जाता है। आमेन॥

दुःखभरा यादगमन।

जब वे उस से ठट्ठा कर चुके तब उस पर से बागा उतारा और उसी का वस्त्र उस को पहिराकर उसे क्रूश पर चढ़ाने को ले चले। वे और दो मनुष्यों को भी जो कुकर्मी थे उस के संग घात करने को ले चले। वह अपना क्रूश उठाये हुए था। और जब वे उसे ले जाते थे तब उन्हों ने शिमोन नाम कुरेने के एक मनुष्य को जो गांव से आता था पकड़के उस पर क्रूश धर दिया कि उसे यीशू के पीछे पीछे ले चले॥

और एक बड़ी भीड़ उस के पीछे हो लिई और बहुत सी स्त्रियां भी जो उस के लिये छाती पीटतीं और बिलाप करती थीं। यीशू ने उन की ओर फिरके उन से कहा हे यरूशलेम की पुत्रियो मेरे लिये मत रोओ परन्तु अपने लिये और अपने बालकों के लिये रोओ। क्योंकि देखो वे दिन आते हैं जिन में लोग कहेंगे धन्य वे स्त्रियां जो बांझ हैं और वे गर्भ जो न जने और वे स्तन जिन्हों ने दूध न पिलाया। तब वे पर्व्वतों से कहने लगेंगे कि हम पर गिरो और टीलों से कि हमें ढांपो। क्योंकि जब वे हरे पेड़ से यह करते हैं तो सूखे से क्या किया जायगा। मत्ती २७ ३१, ३२। मार्क १५ : २०, २१। लूक २३ : २६–३२। योहन १६ : १६, १७॥

परमेश्वर का मनुष्यरूपी मेम्ना हम पापियों के लिये क्रूश पर वध किया गया। यद्यपि वह तुच्छ जाना गया तथापि वह अद्भुत धीर दिखाके अचिन्त्य बड़ा दुःख बिना कुड़कुड़ाये सहता रहा। हे प्रभु तू ने जो हमारे पाप को उठाके मृत्यु का क्षय किया हम तुझ से बिनती करते हैं कि अपनी शान्ति हम को दे॥

हे भाइयो अपने नेत्रों को खोलके परमेश्वर के मनुष्यरूपी मेम्ने को देख लो। वह अपमानित और निन्दित और थका मान्दा और दुःख से भरा हुआ होके भारी क्रूश को उठाये हुए वधस्थान को चला जाता है। तेंतीस एक बरस लों वह इस पापमय पृथिवी पर दुःख उठाता हुआ मनुष्यों का उपकार करता रहा था। यह उस की पिछली यात्रा है पर वह उस की दूसरी यात्राओं की अपेक्षा बहुत अधिक क्लेशमय है पर हम बेचारे मनुष्यों के लिये अधिक उपकारी है। हे मनुष्य जाग उठ और इस बात को विचारके सोच ले कि परमेश्वर मुझ को भी अनुग्रह दिखाके मसीह के संग दुःख से भरे मार्ग में चलने बुलाता है जिस्तें मैं उस की महिमा और सुख का भागी हो जाऊं॥

जब पिलात प्राणदण्ड की आज्ञा सुना चुका था तब यहूदियों ने उस को उभारके उस से कहा कि यीशू नासरी अभी वधस्थान को पहुंचाया जावे और क्रूश पर चढ़ाया जावे। रोमियों का कानून यह था कि जिस पर प्राणदण्ड की आज्ञा सुनाई गई सो दस दिन के पीछे वध किया जावे। पर पिलात ने यहूदियों को प्रसन्न करके ठहराया कि यीशू नासरी कानून के बिरुद्ध तुरन्त वध किया जावे। धर्मपुस्तक के अनुसार अवश्य था कि वह निस्तारपर्व्व में वध किया जावे॥

चार रोमी वधकों ने उस को अपने हाथों से पकड़ा। प्रभु तो अपने बचन मात्र से अथवा अपनी आंख की दृष्टि के तेज से उन दुष्टों को भूमि पर गिरा सकता पर उस ने उन का साम्हना न किया। उस ने शान्तमन होके सोचा होगा कि मैं इस लिये पकड़ा जाता हूं कि पवित्र दूत शुद्ध किये हुए मनुष्यों के आत्माओं को स्वर्गलोक को ले जाने पावें॥

उन्हों ने उस पर से बैंजनी रंग के बागे को उतारा और उसी का वस्त्र उसे पहिराया। सिपाहियों ने यह इस लिये किया कि कोई दूसरा जन उस के वस्त्र न लेने पावे बल्कि वे उन्हें आपस में बांटने पावें। एक दूसरा कारण भी था अर्थात् उन्हों ने यों ही किया कि धर्मपुस्तक का बचन पूरा होवे कि "वे मेरे वस्त्र आपस में बांटते और मेरे कपड़े पर

चिट्ठी डालते हैं। (स्तोत्र २२ १८) । यह देखके कि परमेश्वर का वचन पूरा किया जाता है प्रभु का हियाव बढ़ गया। चाहिये कि हमारा विश्वास भी बढ़े और दृढ़ हो जावे क्योंकि इस बात से मालूम होता है कि जो कुछ मसीह पर बीतता था सो सब परमेश्वर के ठहराये हुए मत और इच्छा के अनुसार होता था । परमेश्वर ने ठहराया था कि यीशू मसीह अति दीन और दरिद्र होके अपने दुःख और मृत्यु के द्वारा शैतान के कामों को लोप करे। मसीह का अंगा जो था सो उस धर्म का चिन्ह था जिसे उस ने मनुष्यों के लिये कमाया। इसी लिये अवश्य था कि वह उसे पहिने हुए वधस्थान को चले । उन्हों ने उस के सिर पर से कांटों का मुकुट न उतारा। अवश्य था कि वह उस के सिर पर चमकता रहे। पश्चात्तापी चोर उस की चमक को देखके प्रभु की ओर फिरा। प्रभु के सिर पर कांटों का मुकुट इस लिये धरा गया कि हमारे सिर पर अनन्त जीवन का चमकनेहारा मुकुट बांधा जावे ॥

वे उस नगर के बाहर ले गये। यह सचमुच बड़े संकट का गमन था। वधस्थान कचेरी से १३२१ फुट दूर था। इब्रियों की पत्री के १३ : ११, १२वें पदों से मालूम होता है कि उसे नगर के बाहर ले जाने का क्या अर्थ है अर्थात् वहां यों लिखा है कि "जिन पशुओं का लोहू महायाजक पाप के निमित्त पवित्रस्थान में ले जाता है उन की देह छावनी के बाहर जलाई जाती हैं। इस कारण यीशू ने भी इस लिये कि लोगों को अपने ही लोहू के द्वारा पवित्र करे फाटक के बाहर दुःख भोगा"। इस घटना से कि वह नगर के बाहर पहुंचाया गया प्रगट हुआ कि जिस प्रायश्चित्तवाले बलि का दृष्टान्त पुराने नियम के बलि थे सो यीशू मसीह है। प्राचीन काल के पवित्र नबियों और दर्शियों ने आगे से जाना कि मसीह दुःख उठाके जगत के लिये अपना प्राण देवे। पुराने नियम के बहुत से धर्मकृत्य इस बात पर साक्षी देते थे कि आनेवाला मसीह अपना प्राण देने से जगत के पापों के लिये प्रायश्चित्त करे। निस्तारपर्व्व के वध किये हुए मेम्ने से और जो बकरा प्रायश्चित्त के दिन बध किया जाता था इन दोनों से और पुराने नियम के सब पापबलियों और दोषबलियों से प्रगट होता है कि विना लोहू बहाये पापमोचन नहीं हो सकता है। इन बातों पर सोचते हुए प्रभु यीशू ने धीरज धरके क्रूश को सह लिया और लज्जा को तुच्छ जाना। राजा के समान उस ने पांच दिन हुए यरूशलेम नगर में प्रवेश किया था तब सब लोगों ने उस का आदर किया पर अब

वह लज्जा से लदा हुआ और घायल और लोहूलुहान होके नगर से निकला। जो लोग उस के आगे और पीछे चलते थे सो उस से ठट्ठा कर रहे थे। पर प्रभु को निश्चय था कि मेरे इस दुःखभरे पादगमन के कारण स्वर्गीय यरूशलेम के फाटक उन सभों के लिये खुल जावेंगे जो मेरे शरणागत होके संकट और चैन के दिन मेरे पीछे हो लेवें। हे भाइयो सुनो यदि ऐसा हो कि हम तुम उस होनहार नगर के खोजी हों तो हम प्रेरित के वचन पर मन लगाके उस के अनुसार करें अर्थात् "सो हम लोग उस की निन्दा सहते हुए छावनी के बाहर उस पास निकल जावें" जो दिल औ जान से मसीह के पीछे हो लेवे उस की निन्दा किई जावेगी। क्योंकि जैसे उस समय के सांसारिक लोग मसीह को तुच्छ जानके उस से वैर रखते थे तैसे इस समय के अधर्मी और अभिमानी लोग उस के अनुगामियों को तुच्छ जानके उन से वैर रखते हैं॥

वह अपना क्रूश उठाये हुए था। दोनों कुकर्मी भी अपना २ क्रूश उठाये हुए थे क्योंकि रीति यह थी। पर प्रभु का क्रूश अधिक भारी जान पड़ा। कारण इस का यह था कि प्रभु की पीठ कोड़ेवाले घावों से भरी हुई थी और लोहू के कम होने से उस का सामर्थ्य घट गया था। फिर उस के कान्धों पर जगत के सारे पापों का अत्यन्त भारी बोझ लदा हुआ था हां हमारे पापों का स्राप उस को दबाता था। हे मेरे मन जब तू ने ईश्वर के पुत्र को चरनी में पड़े हुए अथवा यूसुफ के कारखाने में लकड़ी का बोझ उठाये हुए देखा तब अचंभा किया हो पर अब उस को देख ले। वह अपने स्वर्गीय पिता की सेवा करते हुए उस भारी क्रूश को उठाये गलगथा को ले जाता है कि वह वहां उस वेदी का काम देवे जिस पर प्रभु आप चढ़ाया जावे। किसी अध्यापक ने कहा है कि मसीह क्रूश को विजय का चिन्ह मानके उठाये हुए था क्योंकि अपने क्रूश के द्वारा उस ने शैतान को जीता और सारे जगत का अधिकार प्राप्त किया। उस ने अपने शिष्यों से कहा था कि "यदि कोई मेरे पीछे आने चाहे तो अपनी इच्छा को मारे और अपना क्रूश उठाके मेरे पीछे आवे"। अब उस ने अपनी करनी और व्यवहार के द्वारा से दिखाया कि जो लोग उस के अनुगामी हुआ चाहें सो कैसे मन से उस के कारण दुःख उठावें क्योंकि जैसे प्रभु यीशू अपना क्रूश उठाये हुए था वैसे चाहिये कि मसीही लोग उन दुःखों को उठाये हुए सहें जो वे मसीही होने और सच्चाई पर चलने के कारण भोगने पावें। जानना चाहिये कि सब प्रकार के दुःख और

क्लेश जो विश्वासियों पर मसीह के कारण आन पडते हैं सो क्रूश कहलाते हैं। अधर्मी लोग भी बहुत से दुःख पाते हैं पर उन के दुःखों को क्रूश कहना उचित नहीं है। जब मैं कहता कि मैं अपने क्रूश को सह लेता हूं तब मैं मानता कि मैं मसीह की मण्डलीरूपी देह का एक अंग होके मसीह के दुःखों का भागी हूं। जो दुःख उस ने अपने शरीर में उठाये मैं उन का भागी इस लिये होता हूं कि मैं उस की महिमा का भागी भी होऊं। धन्य वे लोग हैं जो मसीह के लिये निन्दित होते हैं क्योंकि महिमा का और ईश्वर् का आत्मा उन पर ठहरता है॥

कहते हैं कि वेस्टईन्डिया के किसी टापू पर कोई बड़ा धनवान जमीनदार रहता था। उस के यहां बहुत से दास थे। इन बेचारे दासों में से एक दास अपना मन प्रभु यीशू को देके प्रार्थना करने लगा। उस को प्रार्थना करते देखकर उस का स्वामी बड़ा क्रोधित हुआ। संसार के अधर्मी लोग बहुत बातों को सह सकते पर जो प्रार्थना मसीह के नाम से किई जाती है सो उनकी समझ में असहनयोग्य है। जैसे लोगों ने अन्धे बर्तुलमई को तब रोका जब इसने पुकारा कि हे यीशू दाऊद के सन्तान मुझ पर दया कर तैसे इस समय के अधर्मी मनुष्य लोग को प्रभु यीशू की विनती करने से रोकते हैं। उस जमीनदार ने अपने बेचारे दास को बहुत धमकाके उस से कहा प्रभु यीशू की प्रार्थना न करना। जब कि दास ने प्रार्थना करनी न छोडी बल्कि अधिक सरगर्मी से प्रार्थना करता गया तो उस के निर्दयी स्वामी ने उस की नंगी पीठ पर कोड़े लगवाके कोड़ेवाले घावों में लाल मिर्च से मिला हुआ सिरका भरवा दिया। वे योंही दो बरस लों उस को दुःखाते गये तौभी वह प्रार्थना करता गया। निदान उस के स्वामी ने एक भोर को उस से कहा अरे नेह मुझे सच बता कि हठी होने से तुझे क्या लाभ प्राप्त होता है। देख तू दिन दिन कोड़े खाया करता है तेरा काम और दासों के काम की अपेक्षा अधिक भारी होता है तेरी पीठ घावों से भरी है और तेरा खाना अच्छा नहीं है। इन सब बुरी बातों को सहते सहते क्या यह हो सकता है कि तू सुखी है। दास ने उत्तर देके कहा हे स्वामी मैं बहुत सुखी हूं। मैं सन्तुष्ट हूं और मेरी इच्छा और अभिलाषा है कि सब मनुष्य मेरे समान सुखी होवें पर मैं नही चाहता हूं कि उन की पीठ मेरी सरीखी घायल होवे। यह बेचारा दास धन्य था क्योंकि वह आनन्दित और सन्तुष्ट होके अपना क्रूश उठाये रहा। परमेश्वर की ओर से उस को बड़ा प्रतिफल दिया गया हो। जो आनन्द से

अपनी पीठ झुकाके परमेश्वर को उस पर बोझ धरने देवें परमेश्वर उठाने का सामर्थ्य उन्हें देगा हां वह बोझ का सब से भारी भाग आप उठाये रहेगा ॥

"वे और दो मनुष्यों को भी जो कुकर्मी थे उस के संग घात करने को ले चले"। लिखा हुआ है कि "वह अपराधियों के संग तो गिना गया"। जब वैरी तलवारें और लाठियां लिये हुए उस को पकड़ने आये तब उस ने कहा कि यह इस लिये हुआ कि धर्मपुस्तक का वचन पूरा होवे। इस व्यवहार से उस के पवित्र प्राण को बड़ा क्लेश हुआ होगा पर अब जब वह जो अकेला शुद्ध और निर्दोष है जिस के मुंह में छल कभी पाया न गया अपराधियों के संग गिना गया हां उन का अगुवा और मुख्य माना गया तब उस को अचिन्त्य कष्ट हुआ होगा। वह पूर्ण पवित्र है और स्वर्गीय सिंहासन पर विराजमान होता है उस के साम्हने पवित्र दूत औंधे मुंह गिरके उस की स्तुति करते हैं तौभी वह अपराधियों के संग गिना गया। यह भी हमारे लिये हुआ। वह अपराधियों के संग गिना गया जिस्तें वह हमें दूतों के सगी बनाने पावे ॥

जब वे यरूशलेम के फाटकों के बाहर खड्ड में पहुंचे तब वे वहां कुछ ठहर गये। गलगथा एक टेकडी के ऊपर था सो उन को चढ़ना पड़ा। प्रभु यीशू बहुत थका और श्रमित था सो वे सोचने लगे कि निर्बलता और भारी बोझ के कारण वह मरने चाहता है। यह सोचते सोचते उन्हों ने एक किसान को आते देखा। वह मसीह के सताने में उन के संग न हुआ इस से वह उन को बुरा लगा। उन्हों ने सोचा होगा कि जो हमारे संग नहीं है सो हमारे विरुद्ध है। उन्हों ने देखा कि शिमोन शोक और समदुःख दिखाके मसीह पर दृष्टि करता है इस लिये उन्हों ने उसे पकड़के मसीह का क्रूश उस पर धरा। जो लोग मसीह के संग गलगथा को चले उन में से एक ने भी उस की सहायता न किई। पर उन की व्यवस्था में लिखा है कि "यदि तुम अपने वैरी के गदहे को बोझ के मारे दबा हुआ देखो तो अवश्य उसे छुड़ाना।" तौभी उन्हों ने अपने उपकारक पर दया न किई। एक परदेशी ने उस के बोझ को उठाके उस की सहायता किई। शिमोन जो आफ्रिका देश से आके यरूशलेम के समीप रहने लगा उसने पहिले क्रूश को उठाने न चाहा। उस ने सोचा कि मैं आगे बढूंगा। वह सिपाहियों की मार से नहीं डरा पर उस ने प्रभु के चेहरे पर देखा कि वह मुझ से सहायता चाहता है। फिर

जैसे वह क्रूश को उठाये हुए आगे बढ़ा तैसे उस का मन अधिक शान्त भया। वह प्रभु का मित्र था इस लिये उस के मन में आनन्द और शोक मिले हुए थे। उस ने इस से आनन्द किया कि वह क्रूश उठाने के योग्य गिना गया पर वह इस कारण से क्लेशित था कि प्रभु को इतना बड़ा संकट और लज्जा सहनी पड़ती है। अनुमान होता है कि मसीह के पीछे २ क्रूश उठाना उस के लिये बड़ी आशीष का कारण ठहरा। मार्क ने इस का इशारा किया जब उस ने कहा कि शिमोन दो नामी मसीहियों का बाप था। रोमियों को पत्रों के १६ ' १३ में पावल प्रेरित कहता है कि रूफ अर्थात् शिमोन का बेटा प्रभु में चुना हुआ है और पावल ने उस की मा को अपनी मा जाना। इस से अनुमान होता है कि शिमोन घराने समेत क्रूश पर चढ़ाये हुए मसीह का चेला था। संभव है कि शिमोन जल्दी मर गया तौभी उस का नाम कभी बिसर न जायगा। बन्धुवे के पीछे २ क्रूश उठाना निरादर का काम है पर सब सच्चे मसीही उस को आदर का काम समझते हैं। शिमोन थोड़ी देर लों लज्जा को सहता था पर वह अनादि काल लों आदर और महिमा का सुख भोगता रहेगा। शिमोन मसीह के पीछे पहिला क्रूश सहनेहारा था और वह मसीह के दु:खों का पहिला फल जान पड़ता है। चाहिये कि हम भी शिमोन के सरीखे क्रूश उठावें। यदि हम मसीह का कोई क्लेशित और श्रमी और क्रूश के बोझ के तले दबा हुआ चेला देखें तो उचित है कि हम अपने कन्धों को झुकाके उस का बोझ उठावें। जो ऐसा करे सो प्रभु की सेवा करेगा और प्रभु उस से प्रसन्न होगा। जो बिश्वास से मसीह का क्रूश उठावे केवल वही अपना क्रूश उठा सकेगा। विश्वास के द्वारा मसीही मसीह से ऐसे मिलाये जाते हैं कि वे पावल के समान कह सकते कि हम मसीह के संग क्रूश पर चढ़ाये गये हैं हां हम उस के दु:खों के भागी हैं। क्योंकि वह हमारे लिये दु:खी था और मरा भी। "यदि सभों के लिये एक मरा तो वे सब मुए और वह सभों के लिये मरा कि हम विश्वासी अपने लिये नहीं परन्तु उस के लिये जीवें"॥

जो लोग प्रभु के संग गलगथा को जा रहे थे सो सब निर्दयी नहीं थे। भीड़ में बहुत सी स्त्रियां थीं जो प्रभु को अत्यन्त दु:खी और क्लेशित और लज्जा से भरा हुआ देखकर समदु:खी होने लगीं। वे अपनी अपनी छाती पीटती और रोती हुईं आगे चली जाती थीं। उन्हों ने बिलाप करके प्रभु के अधर्मी बधकों को दोषी ठहराया। प्रभु उन

के समदुःख का खोजी न था सो उस ने उन से कहा "हे यरूशलेम की पुत्रियो मेरे लिये मत रोओ"। उस ने मानो उन से यों कहा कि मेरे विषय भूल मत करो। मत समझो कि वह परमेश्वर का मारा हुआ है। मैं अपने पापों के लिये नहीं परन्तु तुम्हारे अधर्म के कर्मों के लिये दुःखी होता हूं। मैं केवल उस दुःख को सहता हूं जिसे मैं ने अपने प्रेम के कारण अपने ऊपर ले लिया है। कोई मेरा जीवन मुझ से ले नहीं सकता है मैं आनन्द से उस को देता हूं पर यह जानो कि मुझे उसे फिर लेने का अधिकार है। मैं उस को फिर लेऊंहीगा क्योंकि मैं मृत्यु के कष्ट को सहके अपनी महिमा में प्रवेश करूंगा। मैं जीवन और मरण का हाकिम होके मृत्युंजय होऊंगा सो मेरे लिये मत रोओ पर अपने लिये और अपने लड़कों के लिये रोओ क्योंकि तुम्हारे ऊपर अत्यन्त भारी विपत्तियां आन पड़ेंगी। हां वे दिन आवेंगे जब लोग उन स्त्रियों को धन्य कहेंगे जो बच्चों को न जनीं। तुम्हारे जातिभाइयों ने पुकारा है कि उस का लोहू हमारे ऊपर और हमारे लड़कों के ऊपर आवे। उन की यह पुकार परमेश्वर ने सुनी है और वह यरूशलेम के निवासियों पर उन के अधर्म के कर्मों के कारण इतनी बड़ी विपत्तियों को भेजेगा कि वे सोचेंगे यदि हमारा जन्म न होता तो अच्छा होता॥

प्रभु यीशू वर्त्तमान समय में भी सब निष्पश्चात्तापी पापियों से कहा करता है कि मेरे लिये मत रोओ वरिक अपने लिये रो रोके अपने पापों से पछताओ नहीं तो तुम पर भी बडी विपत्ति आवेगी और तुम अपने पापों का यथार्थ दण्ड भुगतने पाओगे। ईश्वर करे कि सब पापी मनुष्य अपने पापों और अधर्म के कर्मों के कारण मन ही मन रो रोके आनेवाले क्रोध से भागें। आमेन॥

उन्हों ने उस को क्रूश पर चढ़ाया।

और वे उसे गलगथा स्थान पर जिस का अर्थ खोपडी का स्थान है लाये। और वे गन्धरस मिला हुआ दाखरस उस को देने लगे परन्तु उस ने चखके पीने न चाहा। और उन्हों ने उस को क्रूश पर चढ़ाया और उस के संग दो और मनुष्यों को जो डाकू थे क्रूशों पर चढाया एक को इधर और एक को उधर और बीच में यीशू को। तब यीशू ने कहा हे पिता उन्हें क्षमा कर क्योंकि वे नहीं जानते कि क्या करते हैं। और पिलात ने

दोषपत्र भी लिखके क्रूश पर लगाया। और लिखा हुआ यह था कि यीशू नासरी यहूदियों का राजा। यह दोषपत्र बहुत यहूदियो ने पढ़ा क्योंकि वह स्थान जहां यीशू क्रूश पर चढ़ाया गया नगर के निकट था और पत्र इब्रानी और रोमी और यूनानी भाषा में लिखा हुआ था। तब यहूदियों के महायाजकों ने पिलात से कहा यहूदियों का राजा मत लिख परन्तु यह कि उस ने कहा मैं यहूदियों का राजा हूं। पिलात ने उत्तर दिया कि मै ने जो लिखा सो लिखा॥

जब योद्धाओं ने यीशू को क्रूश पर चढाया तब उस के कपड़े लेके चार भाग किये प्रत्येक योद्धा के लिये एक भाग और कुर्ता भी लिया। और कुर्ता बिन सीआ ऊपर से नीचे लों बिना हुआ था। इस लिये उन्हों ने आपस में कहा हम इस को न फाड़ें परन्तु उस पर चिट्ठियां डालें कि वह किस का होवे जिस्तें धर्मपुस्तक का वचन पूरा होवे कि उन्हों ने मेरे कपड़े आपस में बांट लिये और मेरे वस्त्र पर चिट्ठियां डालीं। योद्धाओं ने यह किया और वहां बैठके उस का पहरा देने लगे। मत्ती २७: ३३-३८ मार्क १५: २२-२८ लूक २३: ३३, ३४, ३८। योहन १६: १७-२४॥

गलगथा नाम टेकड़ी का अर्थ खोपड़ी का स्थान है क्योंकि वह यरूशलेम का बधस्थान था और उस में बहुत से बध किये हुए अपराधियों की खोपड़ियां पड़ीं थीं। जब कि परमेश्वर का पुत्र इसी स्थान में बध किया गया और अपनी मृत्यु के द्वारा जगत के सब मनुष्यों के पापों के लिये प्रायश्चित्त किया तो यह टेकड़ी सब मसीहियों की समझ में पवित्र स्थान ठहरती है। मसीही लोग गलगथा की ओर दृष्टि लगाके कहा करते हैं कि हम अपने नेत्र पर्वतों की ओर लगावेंगे हमें सहायता वहां से मिलेगी। पर जानना चाहिये कि जहां कहीं कोई आत्मा और सच्चाई से प्रभु यीशू की उपासना करे हां जहां कहीं कोई पश्चात्तापी और अपने पापों के कारण क्लेशित मनुष्य बिश्वास से प्रभु यीशू को ग्रहण करे वहां वह उस मुक्तिरूपी धन का भागी होगा जिसे प्रभु ने गलगथा की टेकड़ी पर प्राप्त किया। प्रभु किसी स्थान से बांधा हुआ नहीं है परन्तु वह अपने मुक्तिरूपी दानों को हर जगह में बराबर दिया करता है सो यरूशलेम के समीपवाले पवित्र स्थानों की यात्रा इस मतलब से करनी कि वहां मुक्ति का पूरा ज्ञान और प्रभु का दर्शन प्राप्त होवे सो अवश्य नहीं है। जो लोग इस मतलब से गतसमनी और गलगथा की यात्रा करें सो धोखा खावेंगे। पर जो लोग प्रभु से प्रेम रखते सो उन जगहों में प्रीति रखते हैं

जिधर उन का प्रिय प्रभु चलता फिरता और उन के लिये अपमानित और निन्दित होके अत्यन्त बडा दु ख और कष्ट सहता था। यदि वे उन जगहों में घुटने टेककर प्रभु के प्रेम और उपकारो के कारण उस का धन्यवाद करें तो वे अच्छा करेंगे। पर जो लोग उन पवित्र स्थानों को तीर्थस्थान ठहराके सोचते हैं कि पवित्र देश अर्थात् पलिस्तैना देश के पवित्र स्थानों की यात्रा करने से हम और विश्वासियों की अपेक्षा अधिक पवित्र होवेंगे हां हम बड़ा पुण्य कमावेंगे वे लोग धोखा खाते हैं क्योंकि प्रभु ने कभी नही कहा है कि मैं एक स्थान की अपेक्षा दूसरे स्थान में अधिक स्पष्टता से प्रगट होके अपने उपासकों पर दया करूंगा। पर जो मनुष्य सारे मन से प्रभु को खोजते हैं वे उस को उसी जगह में पावेंगे जिधर वे रहते हैं॥

मसीह के दुःखभोग के द्वारा पुराने नियम नाम धर्मपुस्तक में लिखी हुई बहुत सी प्रतिज्ञाएं और भविष्यद्वचन पूरे हुए। दु ख सहनेहारे यीशू नासरी की चारों ओर मूसा अरु और सब नबी खड़े होके साक्षी देते हैं कि यीशू जो है सो मसीह है। गलगथा पर धर्मपुस्तक की बाते पूरी हुईं। जिस के लिये भक्त लोग तरसते आये थे सो गलगथा पर पूरा हुआ। धर्मपुस्तक में लिखी हुई प्रतिज्ञाएं और भविष्यद्वाणियां ईश्वर के पुत्र के लिये लाठी और टेक का काम तब देती थी जब वह मृत्यु से छाये हुए खड्ड में होके चलता रहा। हम भी इन टेकों को काम में लावें क्योंकि "भविष्यद्वाणी का वचन हमारे निकट और भी दृढ है"। वह पूरा होने से भोर के तारे के समान चमकता है। यदि हम उस पर मन लगाते रहें तो हम अच्छा करेंगे क्योंकि तब ही हम उस के द्वारा प्रकाशित होवेंगे॥

यहूदियों की रीति थी कि जो अपराधी बध किये जाने पर थे वे उन्हें दाखमधु से मिला पित्त पिलाते थे जैसे नीतिबचन नाम पुस्तक में लिखा है कि "मदिरा नष्ट होनेहारे को और दाखमधु उदास मनवालों ही को देना"। वे यों ही इस लिये करते थे कि अपराधी मूर्छित होके दुःखों को मालूम न करें बलिक मूर्छागत होके शीघ्र मर जावें। यीशू मसीह की पवित्र जीभ को दु खाने के लिये उन्हों ने दाखमधु में गन्धरस और पित्त को मिलाया था। प्रभु ने उसे चखके पीने न चाहा सो उस के दु खदायक लाचार हुए क्योंकि वे उस की इच्छा के बिरुद्ध कुछ नहीं कर सके। प्रभु पिता के दिये कटोरे की बहुत सी कड़वी बून्दों को पी चुका पर उस ने

इस कड़वे दाखरस को पीने न चाहा क्योंकि उस की इच्छा थी कि मेरी इन्द्रियां ठिकाने की होवें अर्थात् मैं अचेत न होऊं बल्कि पूरी रीति से चेतन होकर इन अति बड़ी पीडाओं को सहूं और जब लों मेरा काम पूरा न हुआ हो तब लों न मरूं। अवश्य था कि वे उस को पित्त पिलाने की चेष्टा करें क्योंकि धर्मपुस्तक में लिखा हुआ है कि "लोगों ने मेरे खाने के लिये बिष दिया और मेरी प्यास बुझाने के लिये मुझे सिरका पिलाया"। जिस ने मीठे मधु को सिरजा था उस ने कड़वे पित्त को चखा। जिन लोगों के पुरखा जब मरु भूमि में प्यास के मारे नष्ट होने पर थे तब मसीहरूपी चटान से पानी पीने पाये उन्हों ने मसीह को पित्त पिलाया। हम लोग उन के समान कृतघ्न न होवें ऐसा कि हम शारीरिक मन का पित्त और मृतक कर्मों का सिरका उसी को पिलावें जिस ने हमें अनन्त जीवन का जल पिलाया है॥

उन्हों ने उस को वहां क्रूश पर चढाया। इस जागत की सारी घटनाओं में जो घटना बडी है उस का बर्णन प्रेरितों ने दो चार बातों से किया है। मसीह का क्रूश पर चढ़ाया जाना उस के सारे दुःखों और संकटों का केन्द्र और सार है। परमेश्वर हम पर दया करे कि हम क्रूश पर चढ़ाये हुए मसीह पर ध्यान से ऐसा देखें जैसा कि वह हमारे आगे साक्षात क्रूश पर चढाया हुआ होता॥

उन्हों ने क्रूश को उठाके भूमि में गाड़ दिया। फिर उन्हों ने प्रभु के वस्त्र उतारके और उसे पकड़के उठाया और उस तखते पर बैठाया जो क्रूश के बीच में लगा हुआ था। उन्हों ने उस की घायल पीठ को क्रूश की लकडी में बांधा और उस के लोहूलुहान सिर को सीधा करके और उस के दोनों हाथों को फैलाकर आड़ी लकडी में रस्सी से बांध दिया इस के पीछे उन्हों ने बडे कीलों को लेके उस के हाथों में ठोक दिया। निदान उन्हों ने दोनों पांवों को झुकाके क्रूश के खभे में कसा अथवा ठोका। जो दुःख महिमा का प्रभु उस आडी लकडी पर टंगता हुआ सहता रहा उस का बर्णन करना मुझ से नहीं हो सकता। मैं केवल इतना जानता हूं कि अवश्य था कि वह अकथ्य दुःख उठाके अपनी महिमा में प्रवेश करे। मनुष्यों के उद्धार करने के लिये अवश्य था कि वह पृथिवी से स्राप की लकडी पर ऊंचा किया जावे। अपने अथाह प्रेम के कारण उस ने क्रूश को सह लिया और लज्जा को तुच्छ जाना हां "उस ने अपने को दीन किया और मृत्यु लों हां क्रूश की मृत्यु लों आज्ञाकारी रहा"। जो कष्ट-

और पीड़ा नरकवासी सहते हैं उस के सदृश मसीह का कष्ट और दुःख था। उस के कष्ट और पीडा के द्वारा से प्रगट हुआ कि परमेश्वर के खरे न्याय के अनुसार पापी मनुष्य कैसे दण्ड के भुगतने के योग्य है। परमेश्वर ने मसीह पर अपना सारा धर्म प्रगट किया जिस्तें वह उन्हों को धर्मी ठहरा सके जो यीशू मसीह पर विश्वास करगे। प्रभु यीशू प्रेम से परिपूर्ण होके अपने सारे अंगों में दुःखी होने और मृत्यु के डंक की पीडा को भोगने का अभिलाषी था कि वह मनुष्यों का उद्धार करे। हां उस ने स्रापित होने चाहा जिस्तें हम स्राप से छुडाये जावें। पावल प्रेरित ने लिखा है कि "मसीह ने हमें व्यवस्था के स्राप से छुडाया कि वह हमारे लिये स्रापित बना क्योंकि लिखा है कि हर एक जन जो काठ पर लटकाया जाता है स्रापित है"। यीशू मसीह संसार के सब मनुष्यों के पापों को उठाके काठ पर लटकाया जाने से स्रापित ठहरा जिस्तें मनुष्य आशीष के अधिकारी हो जावें। हां वह जो पाप से अनजान था हमारे लिये पाप बना कि हम उस के द्वारा धर्मी बने। वह अकलंक था पर अपराधियों के संग इस लिये गिना गया कि जो लोग उस की शरण आके उस पर सच्चा विश्वास करें उन पर दण्ड की आज्ञा कभी सुनाई न जावे॥

हे भाई इस बात पर मन लगा कि परमेश्वर का पवित्र जन हां प्रिय पुत्र किस कारण से स्रापित बना। लिखा है कि वह हमारे लिये स्रापित बना कि हम आशीष और आनन्द के अधिकारी हो जावे। चाहिये कि हम में से एक एक सोचे कि प्रभु यीशू मेरे लिये स्रापित बना कि मैं ही आशीष का अधिकारी बनूं। वह पापबलि हुआ कि मुझ को पापों की क्षमा मिले। वह दुःखी और क्लेशित हुआ कि मैं देह और प्राण की आरोग्यता पाके सुख चैन के साथ रहूं। वह अमित हुआ कि मैं सच्चा विश्राम पाऊं॥

हे भाइयो यदि तुम यीशू की ओर मन लगाके विश्वास करो कि हमारे पापों के नष्ट करने के लिये वह मरा तो तुम जीओगे और तुम निश्चय जानने पाओगे कि हमारे सारे पाप दूर किये गये हैं। हम धर्मी हैं और पवित्र लोगों के अधिकार के जो ज्योति में है भागी होंगे। जैसे प्राचीन काल के भक्त इस्रायली उस मेम्ने पर जो उन के लिये चढ़ाया जावे हाथ रखते थे तैसे हम भी क्रूश पर चढ़ाये हुए ईश्वर के मेम्ने पर हाथ रखके कहें हमारे लिये तू चढ़ाया गया। फिर सुनो परमेश्वर ने

कहा था कि स्त्री का वश सर्प का सिर कुचलेगा मसीह ने इस प्रतिज्ञा को पूरा किया है उस ने शैतान के सिर को कुचलके उस का अधिकार तोड़ा उस ने अपनी प्रायश्चित्तवाली मृत्यु के द्वारा पाप के दोष को दूर किया और शैतान के कामों को लोप किया। पर शैतान ने उस में डंक तो मारा। शैतान के डंक मारने से उस को इतना बडा कष्ट लगा कि उस ने पुकारा कि "उन्हों ने मेरे हाथों और पैरों को छेदा है'। पर प्रभु ने धीरज धरके कष्ट को सह लिया जिस्से पुराने सांप के डक से उस के अनुगामियों को हानि न पहुंचे॥

उन्हों ने प्रभु यीशू को दो अपराधियों अर्थात् डाकूओं के बीच क्रूश पर चढ़ाया। इस का कारण यह था कि परमेश्वर वैरियों को यों चलाता था कि बिना जाने उन को धर्मपुस्तक का वचन पूरा करना पड़ा। लिखा हुआ था कि ' वह अपराधियों के संग गिना गया "। मार्क के वर्णन से जान पड़ता है कि उन्हों ने उसे नौ बजे भोर को क्रूश पर चढ़ाया सो प्रभु छ घंटे लों क्रूश पर लटका रहा क्योंकि तीसरे पहर अर्थात् तीन बजे सांझ को उस ने अपना आत्मा छोड़ दिया॥

जब सिपाही प्रभु के हाथों में कीलों को ठोक रहे थे तब वह अपने नेत्र अपने दु खदायकों की ओर से फेरके अपने स्वर्गीय पिता की ओर लगाकर अपने बधकों के लिये प्रार्थना करने लगा। उस ने उन पर स्वर्ग से स्राप और दण्ड नहीं चाहा बल्कि उस की इच्छा थी कि परमेश्वर अपने अथाह प्रेम के अनुसार उन से व्यवहार करे। उस ने कहा " हे पिता उन को क्षमा कर क्योंकि वे नहीं जानते कि क्या करते हैं "। क्रूश पर उस का पहिला वचन यह है। आहा उस का प्रेम कितना बड़ा है। जब वह वैरियों के हाथ से अकथ्य पीडा और कष्ट सहता रहा तब भी उस के मुंह से प्रेम की वाणी निकल रही थी। क्रूश पर से जो बचन प्रभु पहिले बोला सो परार्थप्रार्थना का था। यह प्रार्थना बहुत अवश्य थी क्योंकि यदि वह उन दुष्ट वैरियों के लिये विनती न करता तो क्या जाने परमेश्वर अपना यथार्थ क्रोध प्रगट करके उन्हें भस्म करता। जब इस्राएलवंशियों ने सुनहरे बछडे को बनाके उस की पूजा करने लगे तब परमेश्वर ने मूसा से कहा "सो अब मुझे मत रोक मैं उन्हें भड़के कोप से भस्म कर देऊं" पर मूसा ने अपने भूले भटके लोगों के लिये विनती किई और उन्हें परमेश्वर के कोप से बचाया। इसी रीति से जब परमेश्वर का कोप क्रूश के पास खड़े हुए वैरियों पर भड़कने लगा तब प्रभु ने

अपनी प्रार्थना से उस को रोका। प्रभु की इस प्रार्थना की दो चार बातों पर हम ध्यान करें। उस ने कहा "हे पिता"। जानना चाहिये कि प्रभु ने क्रूश पर अपने पहिले और पिछले बचन में परमेश्वर को पिता कहा है। जब उस का दुःख अत्यन्त लों पहुचा और वह अथाहकुण्ड की सी पीड़ा और कष्ट सहता था तब उस ने हे मेरे ईश्वर पुकारा। वह पिता का एकलौता पुत्र होके लटका था। पिता कहके उस ने मान लिया कि मैं जो इस क्रूश पर लटका हूं सो ईश्वर का पुत्र हूं। यद्यपि मैं उस की इच्छा के अनुसार यह भारी कष्ट पाता हूं तौभी मैं उस से सारे मन से प्रेम रखता हूं क्योंकि मैं उस की इच्छा पूरी करने से प्रसन्न हू। फिर उस ने कहा "उन्हे क्षमा कर" क्योंकि हे पिता जो कष्ट मैं सह रहा हूं उस के द्वारा ये लोग मानो तुझ को दुःख देते है। "उन्हें क्षमा कर" के बचन से जाना जाता है कि प्रभु यीशू जगत को दण्ड के योग्य ठह-राने न आया था परन्तु उस के आने का अभिप्राय केवल यह था कि जगत के लोग उस के द्वारा त्राण पावें। जब अधम मनुष्यरूपी प्रवाह उस को घबरा देता था और वह शारीरिक और मानसिक दुःख सह रहा था तब वह अपने दुःखदायकों की आत्मिक दुरदशा को बिचारके उन के लिये बिनती करने लगा। उस ने यह न सोचा कि ये लोग मुझ को दुःखाते हैं बल्कि उस का सोच यह था कि मैं इन दुष्ट लोगों के लिये भी मृत्यु का स्वाद चखता हूं। प्रभु ने क्रूश के कष्ट के सहने से मनुष्यों के लिये पापमोचन का धन प्राप्त किया और उस की इच्छा थी कि मेरे बधक इस धन के भागी होवें। गतसमनी की बारी में उस ने अपने लिये बिनती किई और कहा "यदि हो सके तो यह कटोरा मुझ से टल जावे" पर जब पापी मनुष्यों के लिये बिनती किई तब उस ने नहीं कहा कि यदि हो सके क्योंकि सभव था कि उन के पाप क्षमा किये जावे। यहू-दियों ने पुकारा था कि उसे क्रूश पर चढा पर मसीह ने पुकारा कि उन्हें क्षमा कर। हां हमारे परमधन्य मसीह ने "बहुतों के पाप का भार उठा लिया और अपराधियों के लिये बिनती करता रहा"॥

"हे पिता उन को क्षमा कर क्योंकि वे नही जानते हैं कि क्या करते हैं"। रोमी सिपाहियों ने नही जाना कि हम ईश्वर के पुत्र को क्रूश पर चढाते हैं। पिलात भी इस से अनजान था और महायाजकों ने भी न जाना कि हम ने तेजोमय प्रभु को क्रूश पर चढवाया। पर उन का मसीह से अनजान होना उन ही का दोष था। उन्होंने इस कारण से न जाना

कि उन्हों ने स्वीकार करने न चाहा कि हम अधम और दण्ड के योग्य पापी हैं। उन्हों ने बिना पाप से पछताये स्वर्ग के राज्य की प्रजा हुआ चाहा इस लिये वे सच्चे मसीह से जानकार नही थे। संभव था कि उन का यह पाप क्षमा किया जावे इस लिये प्रभु ने उन के लिये क्षमा मांगी प्रेरिते ने पहिले यहूदियों को क्रूश की कथा सुनाई। प्रभु यीशू कह न सका कि मैं उन को क्षमा करता हूं क्योंकि वे निष्पश्चात्तापी थे परन्तु उस ने चाहा कि परमेश्वर उन को पश्चात्ताप करने का अवसर देवे कि वे पापों की क्षमा ग्रहण कर सकें॥

जो प्रार्थना प्रभु ने उन भूली भटकी मनुष्यरूपी भेडों के लिये किई उस से परमेश्वर प्रसन्न था क्योंकि वह इस कारण पुत्र से प्रेम रखता है कि यह अपना प्राण भेडों के लिये देता है। मसीह की क्रूश पर किई हुई प्रार्थना निष्फल नहीं हुई क्योंकि उस के द्वारा बहुत से मनुष्य उस के बडे प्रेम को जानने लगे हैं। जैसे उस ने उस दिन अपने बैरियों के लिये बिनती किई तैंसे वह उस दिन से सब प्रकार के अपराधियों के लिये बिनती करता आया है। वह परमेश्वर की दहिनी ओर बिराजमान होता और सदा जीता और अपने लोगों के लिये बिनती करता है कि वे सब बुराई से बचकर स्वर्गलोक में पहुंचे॥

यहूदियों से ठट्ठा करने के लिये पिलात ने मसीह के सिर के ऊपर एक दोषपत्र लगवाया जिस पर लिखा था कि "यीशू नासरी यहूदियों का राजा"। इस पत्र के द्वारा पिलात ने यहूदियों की इच्छा के विरुद्ध प्रभु यीशू को वह नाम दिया जिसे नबियों ने आगे से उस को दिया था अर्थात् वह राजा होके बुद्धि से राज्य करेगा और अपने देश में न्याय और धर्म करेगा और उस का यह नाम रखा जायगा अर्थात् यहोवा हमारी धार्मिकता का मूल"। क्रूश पर लटका हुआ उस ने प्रगट किया कि मैं धर्म और न्याय किस रीति से करता हूं। परमेश्वर जो सिय्योन का राजा है सो यीशू नासरी में प्रगट हुआ। इस्राएल का राजा होने के कारण वह क्रूश पर चढ़ाया गया। दोषपत्र तीन भाषाओं में लिखा हुआ था। परमेश्वर ने ऐसा इस लिये होने दिया कि जाना जावे कि यीशू नासरी सारे भूमडल पर प्रभुता करेगा। "उस का नाम सदा बना रहेगा बल्कि जितने दिनलों सूर्य्य चमकता रहेगा तब लों उस का नाम नित्य नया होता रहेगा और लोग अपने को उस के कारण धन्य मानेंगे सारी जातियां उस को भाग्यवन्त कहेंगे"॥

प्रभु ने अपनी प्रार्थना से अपने वैरियों की लज्जा को ढांका पर उन्हों ने उस के वस्त्रों को छीनके आपस में बांट लिया। बिना जाने उन्हों ने धर्मपुस्तक के इस बचन को पूरा किया कि "वे मेरे वस्त्र आपस में बांटते और मेरे कपड़े पर चिट्ठी डालते हैं"। इस से हम निश्चय जानें कि जिस यीशू नासरी में धर्मपुस्तक के बचन पूरे हुए हैं सो संसार का त्राणकर्त्ता और राजा भी है। आमेन॥

क्रूश के पास ठट्ठा करनेहारे और भक्त लोग खड़े हैं।

और लोग खड़े हुए देखते रहे। और जो आते जाते थे वे अपना सिर हिलाके उस की निन्दा करते और कहते थे कि हे मन्दिर के ढानेहारे और तीन दिन में बनानेहारे अपने को बचा जो तू ईश्वर का पुत्र है तो क्रूश पर से उतर आ। और अध्यक्षों ने भी और महायाजकों ने शास्त्रियों और प्राचीनों के संग इसी रीति से ठट्ठा करके कहा उस ने औरों को बचाया अपने को बचा नहीं सकता। मसीह इस्राएल का राजा क्रूश पर से अब उतर आवे कि हम देखके बिश्वास करें। वह ईश्वर पर भरोसा रखता है यदि वह उसे चाहता है तो अब उस को छुडावे क्योंकि उस ने कहा मैं ईश्वर का पुत्र हूं। योद्धाओं ने भी उस से ठट्ठा करने को निकट आके उसे सिरका दिया और कहा जो तू यहूदियों का राजा है तो अपने को बचा। जो डाकू उस के सग क्रूशों पर चढ़ाये गये थे वे भी इसी रीति से उस की निन्दा करते थे। उन म से एक ने उस की निन्दा करके कहा क्या तू मसीह नही है अपने को और हम को बचा। परन्तु दूसरे ने उत्तर देके उसे डांटके कहा क्या तू ईश्वर से भी नहीं डरता क्योंकि तू उसी दंड में फसा है। और हम तो न्याय से क्योंकि हम अपने कर्मों के फल भोगते हैं परन्तु इस ने कोई अनुचित कर्म नही किया। और उस ने कहा हे यीशू जब तू अपने राज्य में आवे तब मुझे स्मरण कर। और उस ने उस से कहा मैं तुझ से सच कहता हूं कि आज ही तू मेरे सग बैकुण्ठ में होगा॥

यीशू की माता और उस की माता की बहिन मरियम जो क्लोपा की पत्नी थी और मरियम मगदलीनी उस के क्रूश के पास खडी थीं। सो यीशू ने अपनी माता को और उस शिष्य को जिस से वह प्रेम रखता था पास खडे हुए देखके अपनी माता से कहा हे नारी देख तेरा पुत्र।

तब उस ने उस शिष्य से कहा देख तेरी माता। और उस घडी से वह शिष्य उस को अपने घर ले गया। मत्ती २७ ३६-४४ मार्क १५ २६-३२ लूक २३ · ३५-३७, ३६-४३ योहन १६ : २५-२७॥

मसीह के क्रूश के आसपास सब प्रकार के लोग एकट्ठे हुए थे। वहां अभिमानी फरीसी और ईश्वर रहित देवपूजक खड़े थे। इन दोनो प्रकार के मनुष्यों ने एका करके मसीह को क्रूश पर चढ़ाया था। उन्हों ने एक चित्त होके उस की निन्दा किई और उसे ठट्ठों में उड़ाया। पर प्रभु यीशू उन का सा मन न रखता था। उस ने उन की निन्दा की बातें सुनकर अपने स्वर्गीय पिता की ओर मन लगाके कहा " हे पिता उन को क्षमा कर क्योंकि वे नहीं जानते कि क्या करते हैं"। जो अपराधी उस के सग अपने अपने क्रूश पर चढ़ाये गये उन में से भी एक ने प्रभु की निन्दा किई। पर दूसरा मसीह की प्रार्थना सुनके और उस के अद्भुत धीरज को देखकर सोचने और अपने पापों से पछताने लगा। मसीह की गुप्त महिमा के प्रेममय तेज की कोई किरण उस के अन्धेरे मन को व्यापने और प्रकाशित करने लगी थी सो उस को निश्चय हुआ कि मैं अपने अपराधों का यथार्थ दण्ड भोगता हूं पर जो पुरुष मेरे समीप क्रूश पर लटका है सो न केवल निर्दोष है बल्कि वह और सब मनुष्यों से अत्यन्त महान है। इस संसार में उस का राज्य नही है पर वह दुःख उठाके अपने राज्य को चला जायगा। ऐसी ऐसी बातों का सोच करके उस ने प्रभु से बिनती किई कि " हे प्रभु जब तू अपने राज्य में आवे तब मुझे स्मरण कर "। उस ने सोचा कि यदि कृपासागर मुझ अधम और नीच पापी को इतनी दया दिखावे कि वह मुझ को स्मरण करे तो बडी बात होगी। प्रभु ने पश्चात्तापी डाकू की सुनके जो इस ने मांगा था उस से अत्यन्त अधिक उस के लिये किया अर्थात् उस ने उस को स्वर्ग के राज्य का अधिकारी बनाया। वह उस को सब पापों से शुद्ध करके और सब सकट और कष्ट से छुड़ाके अपने संग स्वर्गलोक को ले गया। पर दूसरा अपराधी निष्पश्चात्तापी होके मर गया॥

मसीह के क्रूश के पास वे लोग भी खड़े थे जो उस पर बिश्वास रखने से अनन्त जोवन के भागी थे। प्रभु उन से अन्त लो प्रेम रखता रहा और उन से बिदा होते समय उस ने उन को यह आज्ञा दिई कि एक दूसरे से प्रेम रखना। क्रूश पर प्रभु के तीन पहिले वचनों का अभिप्राय यह था कि अधर्मी परमेश्वर की ओर फिरे बिश्वासी सत्यता के ज्ञान में

बढ जावें और निदान अन्य लोगों के अधिकार के भागी हो जावें। पहिले हम मसीह के वैरियों पर कुछ सोचेंगे और पीछे प्रतापी राजा की चाल पर ध्यान करेंगे ॥

गलगथा नाम टेकड़ी पर मनुष्यों की बड़ी भीड़ एकट्ठी थी। जैसे बरस २ के प्रायश्चित्त के दिन में इस्राएलियों का सारा समाज महायाजक के आसपास एकट्ठा हुआ करता था कि परमेश्वर के साम्हने अपने पापों से शुद्ध किये जावें तैसे जब प्रभु यीशू मसीह ने जो सच्चा महा-याजक है अपने को न केवल एक जाति के लोगों के लिये वल्कि सारे संसार के लिये क्रूशरूपी वेदी पर चढाया तब इस्राएल में से हजारों साक्षी उस को घेरते थे। मसीह जो इस्राएल का राजा है उस ने क्रूश पर से उन पर दृष्टि करके उन से मानो यह पूछा कि "हे मेरी प्रजा मैं ने तेरा क्या बिगाड़ा और क्या करके तुझे उकता दिया है मेरे विरुद्ध इस बात की साक्षी दे। (मीका ६. ३) उन्हों ने कुछ उत्तर न दिया। वे उसकी दुरदशा को निहारते २ सन्तुष्ट हो गये। कितने एक मनुष्यों ने क्रूश के समीप जाके मसीह पर अपमानरूपी पत्थरों को फेंका। निदान सब अधर्मी ठट्ठा करनेहारे आत्मा के वश में पडे। छोटे और बड़े लोग धनी और कंगाल सिपाही और क्रूश पर चढाये हुए अपराधी मिलके उस की अपनिन्दा और अपमान करने लगे। उन्हों ने उस के सामर्थ्य को ठट्ठों में उडाया। उन्हो ने उस से मानों थां कहा कि तू ने जो घमंड करके अपने को इतना बडा और सामर्थी वताया जैसे कि सब कुछ कर सके पर तू तो इतना निर्बल है कि तू इन कीलों को भी निकाल नही सकता। अरे तुच्छ यदि तू सचमुच ईश्वर का पुत्र है तो काहेको क्रूश पर से नहीं उतरता है। तू ने बहुत मनुष्यों की सहायता किई है। अभी अपने को बचा। यदि तू कुछ कर सके तो अब अपना सामर्थ्य दिखा। तू ने कहा है कि मै परमेश्वर पर भरोसा रखता हूं वह मेरी सहायता करेगा पर तेरा परमेश्वर कहां है। ऐसा जान पड़ता है जैसा वह तेरे सहायकों में न होता। तू ने जो कहा था मैं इस्राएल का राजा हूं सो अब अपना अधिकार दिखाके उतर आ तो हम तेरी प्रजा होवेंगे। सिपाहियों ने पीने के लिये उस को सिरका देके कहा यदि तू पीने चाहे तो उतरके सिरके को दाखमधु बनाके पी ले। हे यहूदियों के नीच राजा। हे तरंगी जन हम ने तुझे ऐसी मजबूती से क्रूश में कसा कि तू हाथ पांव हिला नही सकता है। हे मेरे प्रिय प्रभु तू ने मेरे लिये कितना बड़ा सकट सहा है। जब

कभी सब से बड़े अपराधी अपने अपराधों का यथार्थ दण्ड भुगतते हैं तब लोग उन को समदुःख दिखाते हैं पर हे प्रभु तेरे क्रूश के पास कोई समदुःखी दिखाई न दिया ॥

उन लोगों ने किन कारणों से उसी की निन्दा और अपमान किया जिस ने भलाई को छोड़के उन से कुछ न किया था। कारण दो थे। (१) उन्हों ने अपने मन की साक्षी को जो उन को दोषी ठहराने लगी थी चुप करने चाहा सो वे यीशू नासरी का तुच्छ और दास का स्वरूप देखके अपने आप को समझाने लगे कि यह सोचना उचित है कि उस ने शैतान से सहायता पाके चमत्कार और अद्भुत कर्म दिखाये सो उस के सब आश्चर्य्य केवल धोखा अथवा माया के थे इस कारण से वह क्रूश पर चढ़ाये जाने के योग्य था। निस्सन्देह हमने अनुचित काम नहीं किया है। वर्त्तमान समय के ठट्ठाकरनेहारों की हंसी के नीचे निराश मन छिपा हुआ है। वे अपने होंठों से पवित्र वस्तुओं से ठट्ठा करते है पर उन के मन आनेहारे क्रोध से कांपते हुए डरते हैं। वे अन्धियारे से प्रीति रखते और न्याय से भय खाते हैं इसी लिये वे हंसी और ठट्ठा के द्वारा उजियाले को दूर करने का यत्न करते हैं। (२) शैतान ने मसीह को निराश करने और गिराने चाहा इस लिये उस ने अपने अधर्मी सेवकों को उभारा कि वे निन्दा और अपमानरूपी बाणों से उस के मन को घायल करें। परीक्षक अर्थात् पुराने शैतान रूपी सर्प ने जिस का सिर प्रभु यीशू कुचलता रहा उस ने बन में प्रभु से कहा था कि यदि तू ईश्वर का पुत्र है तो इन पत्थरों से कह कि वे रोटी बन जावें हां उस ने यह भी उस से कहा था कि यदि तू ईश्वर का पुत्र है तो मन्दिर के कलश पर से अपने को गिरा तो लोग तुझ पर बिश्वास करके तुझे अपना प्रतिज्ञात मसीह मानेंगे। अब शैतान के नौकरों ने मसीह से कहा "क्रूश पर से उतर आ कि हम देखके बिश्वास करें कि तू ईश्वर का पुत्र है"। शैतान ने क्रूश पर चढाये हुए मसीह की दुरदशा और क्लेशित मन से जानकार होके जाना कि उस ने सोचा कि संसार के पापों का बोझ जो मुझ पर लदा है उस के कारण मैं ईश्वर से त्यक्त हूं। यह जानके शैतान ने लोगों को और अधिक उभारा कि वे उसे दुःखावें। जिस क्लेश का अनुभव स्तोत्ररचक ने उस समय किया जब वह अपने पापों के कारण उदास होके कुढ़ता था उस से बढ़कर मसीह का क्लेश और सकट था। उस ने मानो यों कहा कि "मेरे सतानेहारे जो मुझे चिड़ाते है उस से मानो मेरी हड्डियां

कटार से छिदी जाती हैं क्योंकि वे दिन भर मुझ से कहते रहते हैं कि तेरा परमेश्वर कहां रहा"। मसीह का प्रेम अद्भुत है यदि उस का प्रेम अद्भुत न होता तो वह इन बड़े कष्टों और संकटों को सह न सकता। उन की निन्दा की बातें सुनकर उस को स्मरण आया होगा कि ये सब बातें आगे से लिखी हुई हैं। यह सोचके उस ने शान्ति पाई होगी। हां जब उस ने उन को सिर हिलाते और मुंह पसारते देखा तब उस को और अधिक निश्चय हुआ कि मैं मसीह ईश्वर का चुना हुआ जन हूं क्योंकि लिखा हुआ है कि "मैं तो कीडा हूं मनुष्य नहीं मनुष्यों में नामधराई और लोगों में अपमान का कारण हूं। जितने मुझे देखते हैं सो ठट्ठा करते और होंठ बिचकाते और सिर हिलाते हैं। वे कहते हैं कि उस ने तो कहा था कि यहोवा पर सब भार डाल सो अब वह उस को छुडावे वह उस को उबारे क्योंकि वह उस से प्रसन्न तो है"। शैतान ने उसे निराश करने को उस की परीक्षा किई पर प्रभु ने उस का साम्हना कर परमेश्वर से यों बिनती किई जैसा लिखा हुआ है कि "हे मेरे परमेश्वर हे मेरे ईश्वर तुझ ही पर मैं भरोसा रखता हूं। तू ही ने मुझे गर्भ से निकाला। जब मैं दूध पीउवा बच्चा था तब भी तू ने मुझे अपने पर भरोसा रखना सिखाया। मैं जन्मते ही तुझ पर डाल दिया गया माता के गर्भ ही से तू मेरा ईश्वर है। मुझ से दूर न हो क्योंकि संकट निकट है और कोई सहायक नहीं"। योंही प्रभु ने बिनती किई। प्रार्थना के द्वारा वह परमेश्वर से मिला रहा ऐसा कि कोई उस को परमेश्वर से अलग कर न सका। उस ने अपनी ईश्वरीय महिमा और सामर्थ्य को त्याग दिया था सो केवल ईश्वर पर अटल भरोसा रखने से उस ने शैतान का साम्हना करके उस को जीता। मसीह सच्चा मनुष्य होके परमेश्वर पर दृढ भरोसा रखने से सिद्ध बना और सिद्ध बनके वह उन सभों के लिये जो उस के आज्ञाकारी होते हैं अनन्त त्राण का कर्त्ता हुआ। उस का ईश्वर पर भरोसा रखना उन बन्धनों में से एक था जिस से वह क्रूश में कसा हुआ रहा। दूसरा बधन जो था सो मनुष्यों की ओर उस का प्रेम था। इन बंधनों के कारण उस ने लोगों की पुकार सुनी अनसुनी किई। प्रभु के कानों में उन सभों की पुकार भी सुनाई पड़ी जो धर्म के भूखे और प्यासे और पाप से छुटकारा पाने के अभिलाषी थे। वे पुकार रहे थे कि हे प्रिय प्रभु क्रूश पर से मत उतर बल्कि अपना काम पूरा करके हमें परमेश्वर पिता के पास पहुचा। हां उस ने परमेश्वर पिता

को भी कहते सुना कि " मैं अपने नाम की महिमा प्रगट करूंगा " । वह इन पुकारों को सुनके क्रूश पर से न उतरा बलिक उसने अपना काम पूरा किया । उस ने क्रूश पर से उतरने नहीं बलिक मृत्युंजय होके कबर में से निकलने चाहा ॥

जो अपराधी मसीह के संग अपने २ क्रूश पर लटके थे उनमें से एक ने निष्पश्चात्तापी होके और ठट्ठा करनेहारों से मिलके प्रभु की निन्दा किई। इस से प्रभु का क्लेश और अधिक बढ़ गया होगा । पर इतने में उस का जीव कुछ ठण्डा होने लगा हां उसके प्रेम से भरा हुआ मन आनन्दित होने लगा क्योंकि वह अपने दुखों का एक फल देखने पाया । प्रभु देखने लगा कि गेहूं का वह दाना जो अब बोया जाता है सो बहुत फल फलेगा। अर्थात् उस ने दूसरे अपराधी को यह कहते सुना कि " हे प्रभु अपने राज्य में आके मुझे स्मरण कर " । इस अपराधी ने प्रभु को स्मरण दिलाके बताया कि तू सचमुच प्रभु है और तेरा राज्य भी है । इस अपराधी ने पवित्रात्मा से प्रकाश पाके देखा कि यीशू नासरी जो मेरी अलंग नंगा और लोहूलुहान होके लटका है सो अपराधी नही है परन्तु प्रतापी राजा है। वह और मनुष्यों के समान दुख नहीं उठाता है बलिक वह अद्भुत धीर और सहनशीलता को दिखाके इन अत्यन्त बड़ी पीड़ाओं को सह लेता है। फिर पश्चात्तापी डाकू अपने ठट्ठा करनेवाले संगी डाकू को उलहना देने और उससे कहने लगा कि " क्या तू ईश्वर से नहीं डरता क्योंकि तू उसी दण्ड में फंसा है " । हां उस ने उस ढीठ निन्दक को धमकी देके और ईश्वर का भय मानके अंगीकार किया कि " हम तो न्याय से क्योंकि हम अपने कर्मों के योग्य दण्ड भोगते हैं " । यह बड़ा उत्तम स्वीकार है। वह अपराधी अपने पापों से और उनकी बुराई से जानकार होके मन ही मन उन से पछताता था । वह असहनयोग्य पीड़ा सहता रहा तौभी नहीं कुडकुडाया । उस ने मान लिया कि मैं इस पीड़ा के योग्य हूं हां इस से बढ़कर मैं नरक में डाले जाने के योग्य हूं । फिर वह कहता गया कि " इसने कोई अनुचित काम नहीं किया " । जो २ काम यहूदियों के राजा को करने उचित थे उस ने केवल ऐसे कामों को किया है । यह बात उसको किस रीति से मालूम थी । किस ने उस को बताया था कि यीशू नासरी ने अनुचित काम न किया है । मसीह को छोड़ कोई दूसरा उस को बता न सका । प्रभु यीशू जो उस की अलंग लटका था बल्कि उस के मन में वास करने लगा था उस ने इस डाकू

पर अपनी निर्दोषता को प्रगट किया था। संभव है कि डाकू ने मसीह के और उस के राज्य के विषय सुना था अथवा मसीह के उपदेश के सुनने से सुसमाचार का बीज उस के मन में बोया गया था। पर प्रभु यीशू को दुःख उठाते देखकर वह सोचने लगा होगा कि पापी मनुष्य इस यीशू के तुल्य धीरज धरके दुःख भोग नहीं सकता है। फिर मसीह की क्रूश पर किई हुई प्रार्थना उस चुम्बक की सी थी जिस ने उसे मसीह के मन के समीप खीचा। हां यह प्रार्थना सुसमाचाररूपी वह जाल थी जिस में उस का अशान्त आत्मा फस गया। उस को निश्चय होने लगा कि यीशू नासरी जो मेरे निकट लकड़ी पर लटका है सो इस्राएल का सच्चा राजा है और वह मुझ अधम और तुच्छ पापी को बचा सकता है। इसी लिये उस ने प्रभु से विनती करके कहा "हे यीशू जब तू अपने राज्य में आवे तब मुझे स्मरण कर"। "हे प्रिय डाकू बता तो कि जिस राजा से तू इतना बड़ा उपकार मांगता है उस का सुनहरा और हीरों से जडित सिहासन कहां है। स्वर्गीय और चमकनेहारे दूत जो उस के कर्मचारी हैं सो कहां है। जो राजा तेरे समीप लटका है उस का सोने का मुकुट और सुनहरा राजदण्ड कहां हैं। क्या तू कांटेवाले मुकुट को छोडके कोई दूसरा मुकुट देखता है अथवा क्या उन कीलों के सिवाय जो उस के हाथों को छेदते हैं कोई दूसरा राजदण्ड देखता है अथवा क्या लोहू की उन धाराओं के उपरान्त जिन से उस का शरीर लाल हो गया तू राजकीय बैंजनी रग का सुन्दर वस्त्र देखता है"॥

"जब तू अपने राज्य में आवे तब मुझे स्मरण कर"। यह कैसी अद्भुत प्रार्थना है। डाकू और खूनी जन क्रूश पर चढाये हुए एक मनुष्य से विनती कर कहता कि हे प्रभु अपने राज्य में पहुंचके मुझे स्मरण कर अर्थात् मुझ पर दया कर। डाकू ने दृष्टि करके यीशू नासरी के बिगडे हुए रूप के नीचे एक सुन्दर और तेजोमय रूप को देखा। पिलात ने न समझा कि यीशू नासरी राजा है पर डाकू को निश्चय था कि जो मेरी बाईं ओर लटका है सो इस्राएल का राजा है। वह फिर आके अपने राज्य को स्थापन करेगा पर तब ही वह दीनताई का रूप धारण करके न आवेगा। वह अपनी स्वर्गीय गद्दी पर विराजमान होके आवेगा और लाखों लाख पवित्र और तेजवन्त दूत उस के सग होवेंगे। डाकू ने इन बातों पर सोचके प्रभु से कहा मुझे स्मरण कर अर्थात् मुझ पर कृपादृष्टि करके मुझे अपनी प्रजा बना। मैं तो और पापियों की अपेक्षा अधिक

बुरा हूं तौभी मुझ को दूर मत कर वलिक मुझ पर तर्स खाके मुझे बचा। यीशू ने उस की प्रार्थना सुनके सोचा होगा कि इस का विश्वास बहुत बड़ा है। शिष्यों के विश्वास की अपेक्षा इस डाकू का विश्वास अत्यन्त बड़ा था ' जब उन का विश्वास जाता रहा तब इस का उत्पन्न होके बढ़ने लगा। जब उन्हों ने उसी से ठोकर खाई जो मरा तब इस ने उसी पर भरोसा रखा जो उस के समीप क्रूश पर मरने पर था जैसे लोग किसी मनुष्य की मृत्यु पर विलाप करते हैं वैसे शिष्य यीशू पर विलाप करते थे पर डाकू ने सोचा कि यीशू नासरी अपनी मृत्यु के पीछे सनातन लों राज्य करेगा॥

डाकू का बड़ा विश्वास कहां से उत्पन्न हुआ। वह मसीह के कोड़ेवाले घावों से उत्पन्न हुआ। पर किस कारण से दोनों डाकूओं के मन में विश्वास उत्पन्न न हुआ। कारण यह था कि पश्चात्तापी डाकू ने पवित्रात्मा को अपना मन खोलने दिया और वह मसीह की पवित्रता और शोभा देखके अपने पापों से घिन करने लगा। दूसरे ने ज्योति से वैर रखा और और ढीठ होके प्रभु का साम्हना किया। शिष्यों की अपेक्षा पश्चात्तापी डाकू पाप की बुराई से अधिक जानकार था इस लिये उस को प्रभु का अधिक ज्ञान और पहिचान प्राप्त हुआ। प्रभु भूखों को भली वस्तुओं से भर देता है। "वह हमारे लिये दरिद्र हुआ कि हम उस की दरिद्रता के द्वारा धनी हो जावें"। प्रभु ने डाकू से कहा "मैं तुझ से सच कहता हूं कि आज तू मेरे संग स्वर्गलोक में होगा"। क्रूश न्याय गद्दी हो गया। हां जो उस पर लटका है सो कहता है कि मेरे पास मृत्यु और परलोक की कुंजियां हैं। उस ने डाकू से माना यों कहा कि मैं जो प्रभु हूं सो तेरा प्रभु हूं इस लिये ढाड़स बांध तू पाप से शुद्ध किया जावेगा और मेरे संग उस महिमा में प्रवेश करेगा जिसे किसी मरनहार मनुष्य ने कभी नहीं देखा। मैं इस रीति से तुझे स्मरण करूंगा कि तू आज न मेरे दूसरे आगमन पर वलिक इसी दिन में जहां जाके रहेगा तहां मैं जाके रहूंगा। प्रभु के इस शब्द में अर्थात् "मेरे संग" में पूर्ण सुख शामिल है क्योंकि जिधर प्रभु है उधर सुख और आनन्द के सिवाय कुछ और नहीं है। आमेन॥

मसीह के पिछले तीन घण्टों का वर्णन।

दो पहर से लेके तीसरे पहर लों सारे देश पर अन्धकार छा गया।

तीसरे पहर के निकट यीशू ने बडे शब्द से चिल्लाके कहा एली एली लामा सवक्तनी अर्थात् हे मेरे ईश्वर हे मेरे ईश्वर तूने क्यों मुझे छोड दिया। जो वहां खडे थे उन में से कितनों ने यह सुनके कहा वह एलिय्याह को पुकारता है। इस के पीछे यीशू ने जानके कि सब कुछ हो चुका जिस्तें शास्त्र पूरा होवे कहा मैं पियासा हूं। वहां एक पात्र सिरके से भरा हुआ धरा था सो उन्हों ने स्पंज को सिरके से भिगाके और नरकट पर रखके उस के मुंह तक पहुंचाया। जब यीशू ने सिरका लिया था तब कहा पूरा हुआ है और सिर झुकाके प्राण त्यागा॥

यीशू ने फिर बडे शब्द से चिल्लाके कहा हे पिता मैं अपना आत्मा तेरे हाथ में सौंपता हूं और यह कहके प्राण त्यागा। मत्ती २७ : ४५–५० मार्क १५ ३३–३७ लूक २३ ४४–४६ योहन १९ : २८–३० ॥

क्रूश पर चढाये हुए जगत्राता ने तीन बेर अपना मुंह खोलके ऐसे वचन कहे हैं कि जिन से प्रगट होता है कि जगत के पापी मनुष्यों से तब प्रेम रखता है। उस ने महायाजक होके हमारे लिये भी बिनती किई कि हमारे पाप क्षमा किये जावें। राजा होके उस ने डाकू से कहा आज तू मेरे संग स्वर्गलोक में होगा। वह हमारा राजा है और उस ने प्रतिज्ञा किई है कि मैं अपनी सारी प्रजा को विजयी करके अपनी महिमा के राज्य में पहुंचाऊंगा। जब उस ने योहन को आज्ञा दिई कि मेरी मा की सुध लेना तब उस ने प्रगट किया कि मैं अपने प्रिय लोगों की सुधबुध लेऊंगा हां मैं उन को संभालता रहूंगा कि उन को कभी कोई घटी न होवे। ऊपर के पाठ में प्रभु यीशू के चार पिछले वचन लिखे हुए हैं। इन चार वचनों के द्वारा मनुष्य के पुत्र ने अपने स्वर्गीय पिता से बातें किईं। हां ईश्वरके निर्दोष और मनुष्यरूपी मेम्ने ने ईश्वर से बातें किईं। जो वचन मसीह क्रूश पर बोला उन से उस के दुःखभोग और विजय का भेद प्रगट होता है। वह इन सात वचनों को इस मतलब से बोला कि हर समय के विश्वासी उन से शान्ति पावें॥

परन्तु परमेश्वर पिता ने कार्य्यों के द्वारा बोलके अपने प्रिय पुत्र के क्रूश पर साक्षी दिई है। हम बूझ नहीं सकते हैं कि जब मसीह क्रूश पर लटका रहा तब उस का मानसिक दुःख और कष्ट कितना बड़ा था इस लिये परमेश्वर ने उस का वर्णन किया। "दो पहर से लेके तीसरे पहर लों सारे देश पर अन्धकार छा गया'। जब प्रभु यीशू बेतलेहेम में उत्पन्न हुआ तब अन्धेरी रात स्वर्गीय ज्योति से प्रकाशित भई पर जब वह गल-

गथा नाम टेकड़ी पर दु ख भोगता था तब सूर्य्य का प्रकाश जाता रहा और दो पहर दिन में अन्धकार सारे देश पर छा गया क्योंकि जो जगत की ज्योति है सो मृत्यु के वश में था। जिस अन्धकार के विषय प्रभु (योहन १२ : ३५) बोला था उस ने अभी यहूदियों को घेरा क्योंकि उन्हों ने अपने त्राणकर्त्ता को क्रूश पर चढ़ाया था । इस अन्धकार के देश पर छा जाने के द्वारा धर्मपुस्तक का यह वचन पूरा हुआ कि " उस समय मैं सूर्य्य को दो पहर के समय अस्त करूंगा और इस देश को दिन दुपहरी अंधियारा कर देऊंगा और तुम्हारे पर्व्वों के उत्सव को दूर करके बिलाप कराऊंगा और तुम्हारे सब गीतों को दूर करके बिलापवाले गीत गवा-ऊंगा—और ऐसा विलाप कराऊगा जैसा एकलौते के मरने पर करते हैं और अन्त में तुम्हारे पापों का फल कडुवा लगेगा "। (आमोस ८ ६ और १०) किसी अध्यापक ने कहा है कि सृष्टि अपने सिरजनहार की लज्जा को सह न सकी इस लिये सूरज ने अपनी किरणों को रोका कि दुष्ट मनुष्यों की दुष्टता को प्रगट न करें "। डियोनिसीय नाम एक बहु-देव माननेवाला पुरुष उस समय मिस्र देश में था । उस ने दो पहर दिन में उस अन्धकार को देखके कहा कि चाहे परमेश्वर दु ख उठाता है चाहे किसी दुःखी को समदुःख दिखाता है । जैसे इस सृष्टि के सूरज का प्रकाश जाता रहा और सारी सृष्टि पर घोर अन्धकार छा गया तैसे धर्म के सूरज अर्थात् यीशू मसीह का तेज भी जाता रहा । मसीह के मनुष्यत्व से उस की सनातन ईश्वरताई छिप गई कि उस को थोड़ी देर के लिये जान न पड़ा कि मैं और परमेश्वर एक हैं । यह इस लिये हुआ कि वह नरक के भय का और मृत्यु के घोर अन्धकार का और असहन-योग्य पीडा का अनुभव करने पावे । यदि ऐसा न होता तो उस की परमेश्वरताई का तेज मृत्युरूपी घोर अन्धकार को उड़ा देता । यद्यपि सूरज की चमक तीन घण्टे लों दिखाई न दिई तथापि सूरज सूर्य्य बना रहा । इसी रीति से यद्यपि प्रभु यीशू भी तीन घण्टे लों अपनी स्वाभा-विक महिमा से अनजान रहा तथापि वह ईश्वर का पुत्र बना रहा । जब मनुष्य की आंख पलक के नीचे छिपी है तब भी वह आंख बनी रहती है । मसीह का मानुष चोला मानो वह पलक था जिस के नीचे उस ने अपनी सनातन परमेश्वरताई की तेजवन्त आंख को छिपाया । अवश्य था कि " वह सब बातों में भाइयों के समान हो जावे कि वह दयाल और बिश्वासयोग्य महायाजक बने कि लोगों के पापों के लिये प्रायश्चित्त

करे "। इस कारण वह अपने शरीर के दिनों में जब मनुष्यों के बीच चलता फिरता था तब अपनी परमेश्वरताई का तेज कुछ न कुछ छिपाता था। पर गतसमनी की बारी में और गलगथा नाम टेकडी पर उस ने अपनी ईश्वरीय महिमा को सम्पूर्ण रीति से थोडी देर लों छिपाया॥

जिन शारीरिक पीडाओं से मसीह पीड़ित था वे उस के मानसिक कष्ट के प्रतिरूप थीं। उस के शुद्ध आत्मा पर घोर अन्धकार छा गया। मृत्यु के भय ने उस को घेर लिया और वह मानो नरक का कष्ट और पीडा सहता रहा क्योंकि "वह हमारे अपराधों के कारण घायल किया गया और हमारे अधर्म के कर्मों के हेतु कुचला गया था"। विना कुड़कुडाये वह तीन घण्टे लों अथाहकुण्ड की अकथ्य यातनाओं को सहता रहा। जो उसे मृत्यु से बचा सका उस से वह विनती करता रहा। किसी मनुष्य पर प्रगट न हुआ कि प्रभु अपने मन में इन भयानक घण्टों में क्या सोचता वा सहता रहा। जब हम ईश्वर की दया के कारण मेम्ने के सिंहासन के पास पहुंचें तब यह भेद हम पर प्रगट होगा। पर स्तोत्र संहिता नाम पुस्तक से कुछ मालूम होता है कि जब हमारा धन्य प्रभु मृत्यु से छाये हुए खड्ड में होके चलता रहा तब उस की दशा कैसी भयानक थी। यों लिखा है कि "मैं मृत्यु की रस्सियों से चारों ओर घिर गया और अधम मनुष्यरूपी प्रवाहों ने मुझ को घबरा दिया था। अधोलोक की रस्सियां मेरी चारों ओर थीं मैं मृत्यु के फन्दों से घिर गया था। अपने संकट में मैं ने यहोवा को पुकारा मैं ने उसी की दोहाई दी जो मेरा परमेश्वर है"। (स्तोत्र १८. ४-६)। "मैं अनगिनित बुराइयों से घिरा हूं मेरे अर्थात् जगत के अधर्म के कर्मों ने मुझे आ पकडा और मैं ऊपर दृष्टि नही कर सकता वे गिनती में मेरे सिर के बालों से भी अधिक हैं सो मेरे जी में जी नही रहा। हे यहोवा कृपा करके मुझे छुडा"। (स्तोत्र ४० : १२ और १३)। "हे परमेश्वर मेरा उद्धार कर क्योंकि जल मेरी नाक लों पहुंच गया है। मैं बड़े दलदल में धसा जाता हूं और मेरे पैर कहीं नहीं रुकते मैं गहिरे जल में आ गया बलिक धारा में डूबा जाता हूं"। (स्तोत्र ६९)। "मेरा जीव क्लेश से भरा हुआ है और मेरा प्राण अधोलोक के निकट पहुंचा है। मैं कबर में पड़नेहारों में गिना गया मैं बलहीन पुरुष के समान हो गया हूं —हे यहोवा तू मुझे अपने मन से क्यों उतारे रहता है तू अपना मुख मुझ से क्यों फेरे रहता है।—मैं तेरे क्रोधरूपी जल में डूब गया तेरे भय से मैं मिट

गया हूं ")। (स्तोत्र ८८)। इन वचनों को स्मरण करके प्रभु ने निश्चय जाना कि अवश्य है कि ये वचन मुझ में पूरे होंगे। यह सोचते हुए वह संभलता गया। तीसरे पहर उस का कष्ट अत्यन्त लों पहुंचा सो उस के मुंह से बड़ा क्लेशमय शब्द निकला अर्थात् उस ने अपनी आंखों को घोर अन्धकार से छाये हुए आकाश की ओर लगाके ऊंचे शब्द से पुकारा कि "हे मेरे ईश्वर हे मेरे ईश्वर तू ने क्यों मुझे छोड़ दिया" उस को जान पड़ा कि ईश्वर ने मुझे छोड़ दिया है हां मैं ईश्वर से अलग हो गया क्योंकि मैं नरक की सी पीडा सहता हूं। ईश्वर जो जीवन और सुख का मूल है उस से मैं अलग हो गया। जो असुख मनुष्यों को पाप के कारण सहना उचित है उस को प्रभु यीशू ने भोगा। उस को पिता कहने का हियाव न था। पर हे मेरे ईश्वर हे मेरे ईश्वर पुकारके उस ने ईश्वर को जिस ने अपना मुंह उस से फेरा था मानो पकड़ा और उस से कहा मैं तुझ को न छोड़ूंगा क्योंकि तू ही मेरा ईश्वर है। उस ने विश्वास करके मानो गहिरे गढ़ों में से ईश्वर को पुकारा। अथाहकुण्ड को अन्धकार उस को छा गया कि वह न बूझ सका कि मैं ईश्वर का बेटा हूं तौभी वह सच्चा मनुष्य होके ईश्वर को अपना ईश्वर मानता गया। वह पूछता गया कि हे मेरे ईश्वर तू ने मुझ को क्यों छोड़ दिया। प्रभु की इस अति बड़ी दुरदशा से मालूम होता है कि उस की दरिद्रता अत्यन्त हुई क्योंकि जो अपने को ईश्वर से त्यागा हुआ जाने उस के समान दरिद्र कोई नहीं हो सकता है। मसीह की इस दरिद्रता से जान पड़ता है कि मनुष्यों की ओर उस का प्रेम बहुत बड़ा है। यदि वह मनुष्यों से प्रेम न रखता तो वह दीन और दरिद्र मनुष्य न बनता पर उस का प्रेम इतना बड़ा था कि यद्यपि वह धनी और परमसुखी होके किसी का प्रयोजन न रखता था तौभी वह यहां लों दरिद्र हुआ कि उस को मालूम हुआ कि मैं गढ़े में डूबा हुआ ईश्वर से त्यक्त हूं। कारण इस का यह था कि उस की इच्छा थी कि आदमवंशी ईश्वर से त्यागे न जावें बल्कि पवित्रता और धार्मिकता के धनी प्रेम और आनन्द के धनी हां अनन्त सुख और शान्ति के धनी हो जावें। मनुष्यों के लिये इन दोनों के प्राप्त करने को उस ने परमेश्वर पर भरोसा रखना न छोड़ा बल्कि स्तोत्ररचक के समान कहा कि "मेरे तन और मन दोनों तो हार गये हैं पर हे परमेश्वर तू सर्वदा के लिये मेरा भाग और मेरे मन का आधार बना है"॥

प्रभु के इन बड़े दुःखों और कष्टों के द्वारा न केवल उसी का बड़ा प्रेम प्रगट होता है बल्कि परमेश्वर का प्रेम भी क्योंकि यदि परमेश्वर भ्रष्ट आदमवंशियों से प्रेम न रखता तो वह अपने पुत्र को इस अभिप्राय से न भेजता कि वह उस के खरे न्याय के सब दावाओं को पूरा करके मनुष्यों का उद्धार करे॥

फिर मसीह की क्लेशमय पुकार से जान पड़ता है कि उस के प्राण का श्रम समाप्त होने पर था। हां उस ने निश्चय जाना कि मैं ने जीता। उस का कष्टित जीव कुछ ठंडा होने लगा और सूरज फिर चमकने लगा सो जब कि उस ने जाना कि सब कुछ हो चुका तो उस ने पुकारा कि मैं प्यासा हूं। उस ने जाना कि जिस काम के करने को मैं जगत में आया उसे मैं ने पूरा किया। मनुष्यों का उद्धार करने और उन के लिये सनातन और अकलंक धर्म प्राप्त करने के लिये जो कुछ दुःख और क्लेश उठाना था उसे मैं उठा चुका। इस बड़े दुःख और कष्ट की समाप्ति पर वह अत्यन्त श्रमी और थका था जैसा लिखा है कि "मैं पुकारते पुकारते थक गया मेरा गला सूख गया है। हे ईश्वर मुझ अपने दास से अपना मुंह फेरे न रह क्योंकि मैं संकट में हूं फुर्ती से मेरी सुन ले"। प्रभु विशेष करके परमेश्वर की संगति का प्यासा था। सच तो है कि इन अत्यन्त बड़ी पीड़ाओं के कारण उस का शरीर सूखने पर था और उस को बड़ी स्वाभाविक प्यास लगी पर वह विशेष करके परमेश्वर का प्यासा हां उस की प्रसन्नता का प्यासा था। उस की दशा स्तोत्ररचक की सी थी जिस ने कहा कि "परमेश्वर जो जीवता ईश्वर है उसी का मैं प्यासा हूं"॥

पर यीशू मसीह की प्यास का दूसरा अर्थ भी है। चाहिये कि हम सब मन लगाके इस अर्थ को विचारें। उस ने क्रूश पर पुकारके कहा कि जिन मनुष्यों का उद्धार मैं कर चुका मैं उनका प्यासा हूं। मैं इस का प्यासा हूं कि मैं उन को धर्मी ठहराने और उन के पापों को क्षमा करने पाऊं। मैं इस का प्यासा हूं कि मैं हर एक मनुष्य के मन में सच्चे धर्म की भूख और प्यास उत्पन्न करने पाऊं। मैं अपने परिश्रम के फलों के देखने का प्यासा हूं। हां जब मैं मनुष्यों के बीच चलता फिरता था तब मेरी भूख और प्यास कभी इस से मिट गई कि मैं मनुष्यों को परमेश्वर से मिलाने पाया। जैसा मैं तब उन से भलाई करने के लिये तरसता था तैसा मेरा जीव अब भी उन की भलाई और अनन्त सुख का प्यासा है॥

हे भाइयो तुम एक एक इस का विचार करके सोचो कि प्रभु मेरा प्यासा है। वह मुझ ही पर दया करने के लिये तरसता है। हम उन लोगों के समान न करें जो क्रूश के पास खड़े थे उन्हों ने कडवा सिरका लेके उस को पिलाया। प्रभु हमारे मन का हमारे प्रेम का और हमारे अनुराग का प्यासा है। उस ने क्रूश पर अपने हाथों को फैलाके बताया कि मैं सब मनुष्यों को ग्रहण करने की बाट जोहता हू। जो अनुग्रह वह हम को दिया चाहता है उसे हम तुच्छ न जानें और न मीठी दाख के पलटे में उस को जंगली दाख देवे। यदि हम शोमरोनी स्त्री के समान उस को अपना त्राता जानके ग्रहण करें तो हम उस की भूख और प्यास बुझाकर उस को तृप्त और सन्तुष्ट करेंगे॥

"जब यीशू ने सिरका लिया था तब कहा पूरा हुआ है"। सिरका उस के शारीरिक दुःख की पिछली कडवाहट था। अब बस हुआ। उस का काम समाप्त हुआ था। जिस बपतिस्मा के हेतु वह सकेतो में हुआ था सो अब सम्पूर्ण हुआ। जिस चढावे से लोग पवित्र किये जाते हैं उसे उस ने चढ़ाया था। उस ने पापों का परिशोधन किया और शैतान के कामों को लोप किया था। जो कुछ करना और जो कुछ कमाना था उसे उस ने किया और कमाया था। जो कुछ पवित्र आत्मा ने आगे से मसीह के दु खों के विषय कहा था सो सब पूरा हुआ था। तब से स्वर्ग का द्वार खुल गया है कि जो कोई चाहे सो यीशू मसीह के द्वारा स्वर्ग में प्रवेश कर सकेगा। वह पिता का उस को दिया हुआ दु.खरूपी कटोरा खाली कर चुका। उस में एक बूंद भी बाकी न रही इस लिये उस ने जयजयकार करके पुकारा कि "पूरा हुआ है"। उस ने पृथिवी पर पिता की महिमा को प्रगट किया था। उस ने पापों का अन्त और अधर्म का प्रायश्चित्त करके युगानयुग की धार्मिकता प्रगट किई थी। मुक्ति का वह धन प्राप्त हुआ जिसे मन में दीन होते हुए लोग ग्रहण करके सन्तुष्ट होवेंगे"। अपने एक ही चढावे से उस ने उन्हें जो पवित्र किये जाते हैं सदा सिद्ध किया है"। क्योंकि दुःख भोगने और आज्ञा मानने से वह आप सिद्ध बना और उन सभों के लिये जो उस के आज्ञाकारी होते हैं अनन्त त्राण का कर्त्ता ठहरा॥

प्रभु यीशु ने अपने एक दृष्टान्त में कहा था कि "आओ क्योंकि सब कुछ अब तैयार है"। सो कितना अधिक करके हम मसीह की कथा सुनाके मनुष्यों से कहे कि आओ उस ने तुम्हारे लिये सब कुछ तैयार

किया है। उस पर विश्वास करो क्योंकि जो कुछ करना था उसे उस ने किया है। मत सोचो कि हम अपने क्रियाकर्मों से अपने पापों और अपराधों को दूर करेंगे। प्रभु ने उन्हें दूर किया है। परमेश्वर की इच्छा और आज्ञा भी है कि हर एक मनुष्य वह कितना बड़ा पापी क्यों न हो मसीह पर विश्वास करे तो वह अपने सारे अधर्म से शुद्ध किया जावेगा। "धर्म के निमित्त हर एक विश्वास करनेहारे के लिये मसीह व्यवस्था का अन्त है"। जब कि मसीह ने हमारे लिये पूरा धर्म प्राप्त किया और हर मनुष्य को देने चाहता है तो चाहिये कि हम अपने निज कर्मों को छोड़के केवल उसी पर भरोसा रखें॥'

जब प्रभु को निश्चय हुआ कि मैं ने सब कुछ पूरा किया तब उस का भीतरी और बाहरी अन्धकार उड़ गया। उस को फिर मालूम हुआ कि परमेश्वर मेरा बाप है। उस ने केवल पल भर मुझ से अपना प्रसन्न मुख फेरा। यह जानके उस ने अपने को इस संसार से कूच करने के लिये तैयार किया। उस ने बड़े शब्द से चिल्लाके कहा "हे पिता मैं अपना आत्मा तेरे हाथ सौम्पता हूं"। यह वचन ३१वें स्तोत्र में लिखा हुआ है। यीशू मसीह धर्मपुस्तक का वचन मुंह में लेके धर्मपुस्तक के अनुसार मरा। किसी ने उस का जीव उस से न लिया उस ने आप आनन्द से उस को दे दिया। मृत्यु उस के पास नहीं आई बलिक वह मृत्यु के पास गया। तौभी उसकी मृत्यु स्वाभाविक थी। उस ने अपना आत्मा परमेश्वर के हाथ सौम्प के दृश्यलोक से कूच किया। उस ने अपना जीव परमेश्वर के हाथ सौम्पा कि जी उठने के दिन लों उस की रक्षा किई जावे॥

क्रूश पर मसीह का पहिला वचन जो था सो "हे पिता" था और उस का पिछला वचन जो था सो "हे पिता" भी था। वह बचपन से अपने पृथिवी पर के जीवन के अन्त लों यह मानता गया कि परमेश्वर मेरा पिता है। उस को निश्चय था कि मेरा जीव अधोलोक में पड़ा न रहेगा क्योंकि उस को उसे फिर लेने का अधिकार था। परमेश्वरने उस के अकलंक आत्मा को अपनी आड में रखके अपने घर पहुंचाया॥

जो लोग प्रभु यीशू पर विश्वास रखते हुए उस के रूप के अनुसार बदलते जाते हैं जब वे इस लोक से कूच करने लगते हैं तब वे पुकारा करते हैं कि हे प्रभु यीशू हमारा आत्मा ग्रहण कर। पवित्र स्तिफान की मृत्यु का वर्णन देखो। जब अधर्मी लोग धर्मशोधक योहन हुस्स साहिब से ठट्ठा करते करते उसे जलाने को ले जाते थे तब वह बोलता गया कि

"हे सत्यवादी ईश्वर हे प्रभु यीशू मसीह मैं अपना आत्मा तेरे हाथ में सौम्पता हूं क्योंकि तू ने मुझे छुड़ा लिया"। आमेन॥

सचमुच यह ईश्वर का पुत्र था।

और देखो मन्दिर का पर्दा ऊपर से नीचे लों फटके दो भाग हो गया और धरती डोली और चटानें तडक गईं और कबरें खुल गईं और सोये हुए पवित्र लोगों की बहुत लोथें जी उठी और उस के जी उठने के पीछे वे कबरों से निकलके पवित्र नगर में गये और बहुतों को दिखाई दिये। तब शतपति और जो उस के संग यीशू का पहरा देते थे भूईं डोल और जो कुछ हुआ था देखके निपट डर गये और ईश्वर की स्तुति करके कहा निश्चय यह मनुष्य धर्मी था और ईश्वर का पुत्र था। और सब लोग जो यह देखने को एकट्ठे हुए थे जो कुछ हुआ था सो देखके छाती पीटते हुए फिर गये। और उस के सब चिन्हार और वे स्त्रियां जो गालील से उस के संग आई थीं दूर खडे होके यह सब देखते रहे॥

वह दिन तैयारी का दिन था इस लिये यहूदियों ने पिलात से बिनती किई कि उन की टांगें तोडी जायें और वे उतारे जायें न हो कि लोथें विश्रामवार को क्रूश पर रहें क्योंकि वह विश्रामवार बड़ा दिन था। सो योद्धाओं ने आके पहिले की टांगें तोड़ी फिर दूसरे की भी जो उस के संग क्रूश पर चढ़ाया गया था परन्तु यीशू के पास आके जब उन्हों ने देखा कि वह मर चुका है तब उस की टांग न तोडी। परन्तु योद्धाओं में से एक ने भाले से उस का पंजर बेधा और तुरन्त लोहू और पानी निकला। और जिस ने यह देखा उस ने साक्षी दिई है और उस की साक्षी सच्ची है और वह जानता है कि सच कहता है इस लिये कि तुम भी विश्वास करो। क्योंकि ये बातें इसलिये हुईं कि शास्त्र पूरा होवे कि उसकी कोई हड्डी नहीं तोड़ी जायगी। और फिर शास्त्र का दूसरा बचन है कि जिसे उन्हों ने बेधा उस पर वे दृष्टि करेंगे। मत्ती २७ : ५१-५४ मार्क १५ : ३८, ३९, लूक २३ ४५, ४७, ४८, योहन १९ : ३१-३७॥

यैरूशलेम के मन्दिर के पवित्रस्थान और परमपवित्रस्थान के बीच एक बडा पर्दा लटका हुआ था। यह पर्दा नीले बैजनी और लाल रंग का और सनीवाले कपड़े का बना हुआ था। इस पर्दे से प्रगट होता था कि जब तक वह परमपवित्रस्थान के साम्हने जिसमें यहोवा परमेश्वर करूबों के ऊपर बिराजमान होता है लटका रहता है तब तक परमेश्वर के पास

पहुंचाने का मार्ग न खुला है। पापी मनुष्य उस स्थान में प्रवेश न कर सकते थे जिस में पवित्र दूत परमेश्वर के तेज को देखते हैं। बीचवाला पर्दा मनुष्यों को यह उपदेश देता था कि ' तुम्हारे और तुम्हारे परमेश्वर के बीच जो भीत की सी आड़ हो गई इस का कारण तुम्हारे अधर्म के कर्म हैं और उस ने जो तुम से मुंह फेर लिया है और तुम्हारी नहीं सुनता इस का हेतु तुम्हारे पाप हैं "। महायाजक केवल एक बेर बरस भर में परमपवित्रस्थान में प्रवेश करने पाता था पर लोहू के बिना प्रवेश न कर सकता था। परन्तु हमारे महान महायाजक अर्थात् यीशू मसीह ने अपने ही लोहू के द्वारा से एक ही बेर स्वर्गीय परमपवित्रस्थान में प्रवेश करके अनन्त उद्धार प्राप्त किया। संसार के लोगों ने इस उद्धार को ढूंढ़के न पाया था। मन्दिर का पर्दा प्रभु यीशूमसीह के शरीर का दृष्टान्त था। जैसे अवश्य था कि मन्दिर का पर्दा फट जावे कि लोग परमपवित्रस्थान में प्रवेश करने पावें तैसे अवश्य भी था कि मसीह का शरीर टूट जावे कि हमारे लिये एक नया और जीवता मार्ग स्थापन किया जावे। जो शरीर प्रभु ने हमारे उद्धार करने के लिये धारण किया था सो उस के लिये भी एक प्रकार का पर्दा ठहरा जिसके नीचे उस की परमेश्वरताई की महिमा छिपी हुई थी। जब वह क्रूश पर लटका था और विशेष करके जब वह सोचता रहा कि ईश्वर ने मुझे छोड़ दिया है तब तीन घण्टे लों शरीररूपी पर्दा उस की परमेश्वरताई की महिमा को उस से छिपाता था। पर यह भी जानना चाहिये कि वह संसार के पापों को उठाता रहा और वे मानो एक काला बादल थे जिस के हेतु वह परमेश्वर का प्रसन्न मुख देख नहीं सका। पर जब उस ने जयजयकार करके पुकारा कि " पूरा हुआ है " तब यह पापरूपी काला बादल उड़ गया और जैसे पहिले तैसे वह परमेश्वर के प्रेममय मुख को देख सका। फिर देखो जिस क्षण मसीह का आत्मा शरीर से अलग हुआ उसी क्षण मन्दिर का पर्दा ऊपर से नीचे लों फटके दो भाग हो गया और सिद्ध महायाजक अपने प्रायश्चित्तवाले लोहू के द्वारा से परमेश्वर के सन्मुख हमारे लिये प्रगट हुआ। तब से वह मनुष्यों को उसी नये और जीवते मार्ग पर चलाता है जिस पर वह आप चलता था। इसी मार्ग पर मनुष्यों को चलाके वह उन को परमेश्वर के पास पहुंचाता है। मन्दिर के फटे हुए पर्दे से मालूम होता है कि मसीह ने अपने दुःखभोग और मृत्यु के द्वारा से सब पश्चात्तापी मनुष्यों के लिये स्वर्ग का द्वार खोल दिया है।

"जो लोग उस के द्वारा ईश्वर के पास आते हैं वह उनका त्राण अत्यन्त लों कर सकता है क्योंकि वह उन के लिये विनती करने को सदा जीता है"। जो सुसमाचार दूतों ने मसीह के जन्म पर गाके सुनाया उस सुसमाचार का बोध फटे हुए पर्दे से प्रगट होता है। ईश्वर ने मसीह के क्रूश पर बहाए हुए लोहू के द्वारा से मिलाप करके उसी के द्वारा सब कुछ चाहे वह जो पृथिवी पर है चाहे वह जो स्वर्ग में है अपने से मिलाया। उस ने चादर का जो पर्दा सब जाति के लोगों के ऊपर पड़ा हुआ है और जो ओहार अन्यजातियों पर पडा हुआ है उन दोनों को उस ने गलगथा नाम टेकड़ी पर नष्ट किया। धर्मपुस्तक के अनुसार प्रभु यीशू मसीह ने मनुष्यों और परमेश्वर के बीच मध्यस्थ होके अपनी प्रायश्चित्तवाली मृत्यु के द्वारा से परमेश्वर के खरे न्याय के दावाओं को पूरा किया जिस्ते मनुष्य उस के द्वारा आत्मिक जीवन पाके ईश्वर की संगति में सदा जीवें। मसीह की मृत्यु अनुग्रह की वाचा की नेव और कारण है। यदि मसीह प्रेम दिखाकर मनुष्यों के लिये दुःख भोगके न मरता तो किसी मनुष्य के पाप क्षमा न किये जाते। मनुष्य बिश्वास के द्वारा मसीह की मृत्यु के धन्य फलों के भागी होते हैं। मसीह ने एक ही चढ़ावे से सब कुछ पूरा किया है। यीशू मसीह पर बिश्वास करने से मनुष्य परमेश्वर के धर्म के भागी होते हैं और वे ईश्वर के अनुग्रह के सिंहासन के पास रुकावट के बिना जा सकते हैं कि वे अनुग्रह पावें। मसीह ने अपने दुःखभोग और मृत्यु के द्वारा से अनुग्रह और जीवन का अनमोल धन सब मनुष्यों के लिये प्राप्त किया। उस ने उस भीत को तोड़ डाला जो मनुष्यों को ईश्वर के पास जाने से रोकती थी सो जो कोई पाप के गढ़े से निकलने और नये और जीवते मार्ग पर चलने चाहे वह अनन्त जीवन का भागी होगा और परमेश्वर की संगति प्राप्त करेगा॥

धर्ती अर्थात् पृथिवी डोली। पृथिवी पापी मनुष्यों का निवासस्थान है और वह अपने निवासियों के अधर्म के कर्मों के कारण स्रापित है। हां मनुष्यों की दुष्टता के हेतु सारी सृष्टि कहरती और पीड़ा पाती है। सृष्टि निर्बन्धता की आशा करती है। इस लिये जब मनुष्यों के उद्धार का काम समाप्त हुआ और प्रगट हुआ कि अब से परमेश्वर के सन्तान निर्बन्ध होवेंगे, तब सृष्टि मानो सोचने लगी कि मैं भी स्राप से छुटकारा पाऊंगी। इस कारण से अचेत पृथिवी मानो आनन्द के मारे डोलने लगी। धर्मपुस्तक से जान पड़ता है कि जब जब प्रभु परमेश्वर अपने

लोगों का कोई विशेष उपकार करता है तब तब सृष्टि भी उन के आनन्द की भागी होती है जैसा लिखा है कि "जब इस्राएलियों ने मिस्र से पयान किया तब समुद्र इस बात को देखके भागा यर्दन नदी उलटी बही। पहाड़ मेंढा की नाईं उछलने लगे और पहाड़ियां भेड़ बकरियों के बच्चों के समान कूद पड़ी" (स्तोत्र ११४)। जब सृष्टि ने एक जातिगण पर दया होने के कारण इतना आनन्द किया और उस के छुटकारे के पूरा करने में भागी हुई तो जब सारी मनुष्यजाति के लिये पाप के दासत्व से और शैतान के अधिकार से उद्धार प्राप्त किया गया तब उचित था कि पृथिवी डोल उठे और आनन्द के मारे कांपे ॥

चटानें तड़क गईं और कबरें खुल गईं और सोये हुए पवित्र लोगों की बहुत लोथें जी उठीं"। जिस क्षण में मसीह शरीर में घात किया गया उसी क्षण वह आत्मा में जिलाया गया। वह अधोलोक में उतरा जिधर इस लोक से सिधारे हुए लोग रहते थे। परमेश्वरताई का जो जीवन उस के शरीर के दिनों में देहरूपी पर्दे के नीचे छिपा हुआ था सो सामर्थ्य के साथ प्रगट हुआ। उस ने अपने को विजयी दिखाके अपनी विजय का मंगलसमाचार अधोलोक के निवासियों को सुनाया। उस ने उन पर प्रगट किया कि मैं ने मृत्यु का अधिकार तोड़ा है और जीवन और अमरता को प्रगट किया है। इस सुसमाचार को सुनते ही जिन पवित्र लोगों ने मसीह की और उस की विजय की आशा करते करते इस लोक से कूच किये थे उन में से बहुतों के आत्मा उनकी देहों से मिल गये। उन की कबरें खुल गईं और वे जीते हुए निकले। वे तो मसीह के मरते दम अपनी २ कबर में से न निकले बल्कि वे अपनी कबरों को मसीह की पवित्र देह के कबर में रखे जाने के कारण पवित्र स्थान जानकर मसीह के जी उठने के दिन उन में से निकले। हां जब मसीह के जी उठने से संपूर्ण रीति से प्रगट हुआ कि जय में मृत्यु निगल गई है और शैतान का अधिकार टूट गया है तब ही वे कबरों को छोड़के पवित्र नगर में जाके बहुत धर्मी लोगों को दिखाई दिये। जैसे अधर्मी और अविश्वासी लोग प्रभु को उस के जी उठने के पीछे देख नहीं सके तैसे अविश्वासी जी उठे हुए पवित्र लोगों को भी न देख सके। प्रभु ने विश्वासियों की आंखों को खोला कि वे उन्हें देखें और उस बचन को समझें जो उस ने कहा था कि "मैं तुम से सच सच कहता हूं यदि गेहूं का दाना भूमि में पड़के मर न जावे तो वह अकेला ही रहता है पर यदि

मर जावे तो बहुत फल लाता है"। जो मुर्दे। मसीह के जी उठने पर कबरों में से निकले सो मसीह के देहरूपी भूमि में बोये हुए दाने के पहिले फल थे। तब यह भविष्यद्वचन पूरा हुआ कि "पर अब निश्चय है कि वे लोग जो मरे हैं सो जीवेंगे हमारे मुर्दे उठ खड़े होंगे हे कबर के रहनेहारे जागके ऊंचे स्वर से गाओ क्योंकि यहोवा की गिराई हुई ओस जो ज्योतियों से उत्पन्न होती है तुम पर पड़ेगी तब पृथिवी ढेर दिन के मरे हुओं को भी उगल देवेगी" (यशायाह २६ १६)। "जैसे पानी के गिरने से भूमि गीली होके सब प्रकार के पौधों और फलों को उगाती है तैसे मसीह ने अपनी मृत्यु के द्वारा से भूमि को खोला कि हम उस की धूल में से अनन्त जीवन के लिये जी उठें"। जो शक्ति मसीह ने अपनी मृत्यु और जी उठने के द्वारा उन पवित्र लोगों पर प्रगट किई वही शक्ति वह नियत समय में उन सभों पर प्रगट करेगा जो प्रभु में मर गये हैं। वह उनकी कबरों को भी खोलेगा जैसा लिखा है कि 'हे मेरी प्रजा के लोगो सुनो मैं तुमहारी कबरों के खोलने और तुम को उन से निकालने पर हूं"। (यहेज. ३७ १२) पवित्र लोग कबरों में से निकलके और यरूशलेम में प्रवेश करकर उन लोगों को दिखाई दिये जो प्रभु से प्रेम रखते थे। हम भी जी उठके स्वर्गीय यरूशलेम में प्रवेश करके दूतों और मुक्त पवित्र लोगों की सगति करने पावेंगे॥

जो पवित्र लोग जी उठे वे कौन थे यह हम नहीं जानते हैं। पर निश्चय जान पड़ता है कि वे ऐसे पवित्र लोग थे जो जीते जी इस्राएल के उद्धार की वाट जोहते रहते थे। शायद इब्राहीम की कबर खुल गई और क्या जाने प्रभु ने याकूब और यूसुफ पर दया करके उन की आशा पूरी किई। अय्यूब उन धन्य लोगों में से एक हुआ होगा। जब वह सब से बड़े संकट में पड़ा हुआ था तब परमेश्वर ने उस के ऊपर छाये हुए अन्धकार को थोड़ी देर लों हटाया। तब अय्यूब ने कहा "मुझे निश्चय है कि मेरा छुड़ानेहारा जीता है और वह सभों के पीछे मिट्टी पर खड़ा होवेगा। सो जब मेरे शरीर का यों नाश भी हो जावेगा तब शरीर से अलग होके मैं ईश्वर का दर्शन पाऊंगा। उस का कोई विराना नहीं मैं आप अपनी ही आंखों से दर्शन करूंगा"। (अय्यूब १६ : २५-२७)॥

"धर्ती डोली"। जब सृष्टि की नेव हिलनी लगती है तब मेरा मन भी कांपे। जो शतपति क्रूश के पास पहरा देता रहा सो भूमि के डोलने पर कांपने लगा। उस ने इस्राएल के ईश्वर को पुकारके कहा "निश्चय

यह मनुष्यधर्मी था और ईश्वर का पुत्र था "। उस ने यहूदियों की निन्दा सुनी और उन को यह कहते सुना था कि "उसने कहा है कि मैं ईश्वर का पुत्र हूं "। अब उस ने भूईंडोल में ईश्वर का शब्द पहिचाना और उस को निश्चय हुआ कि ईश्वर ने आप अपने पुत्र पर साक्षी दिई। प्रभु ने अपने सात वचनों से उस को प्रकाशित करके उस के मन को नरम किया था सो जिसे यहूदियों ने बध किये जाने के योग्य ठहराया, उसी को उस ने धर्मी ठहराया। इस शतपति का स्वीकार परमेश्वर की दया से कराया हुआ अद्भुत कर्म है। क्रूश के निकट यह वचन पूरा होने लगा कि "हे यहोवा तू ने जो उस का प्राण दोषबलि कर दिया इसी से वह अपना वंश देखने पावेगा "। इस्राएलवंशियों में से मसीह के दुःखों का पहिला फल जो था सो क्रूश पर चढ़ाया हुआ डाकू था और अन्य-देशियों में से पहिला फल शतपति था॥

हे भाइयो ईश्वर के क्रूश पर मारे हुए मेम्ने पर दृष्टि करो। हां जैसे शतपति ने उस पर दृष्टि लगाके उसे देखा तुम भी उस पर दृष्टि लगाके अपनी धर्मपुस्तक को खोलो और इन पदों को ध्यान से पढ़ो कि "उस का रूप यहां लों बिगड़ा हुआ होगा कि मनुष्य का सा न जान पड़ेगा और उसमें आदमवंशियों की सी सुन्दरता न रह जावेगी पर पीछे वह बहुत सी जातिगण पर रुधिर छिड़कके उन्हें शुद्ध करेगा और उस को देखके राजा भी अचंभे के मारे चुप रहेंगे क्योंकि वे तब ऐसी बात देखेंगे जिस का वर्णन उन से कभी न किया गया होगा और ऐसी बात समझ लेवेंगे जो उन्हों ने कभी न सुनी होगी। (यशायाह ५२ १४ और १५)॥

भूले भटके साधारण यहूदियों ने महायाजकों और अध्यापकों से भरमाये जाके अपने राजा के क्रूश पर घात किये जाने में सम्मति दिई थी परन्तु दुःख और संकट सहने में उस के अद्भुत धीरज को देखते २ वे घबरा गये। फिर भूईंडोल से और दूसरे चमत्कारों से जो मसीह की मृत्यु पर हुए उन के मन में कुछ असर हुआ। वे विलाप करने और अपनी २ छाती पीटने लगे। अनुमान होता है कि उन का यह शोक ईश्वर की इच्छा के अनुसार था क्योंकि पचास दिन के पीछे बहुत से यहूदियों ने क्रूश पर चढ़ाये हुए मसीह की कथा सुनके विश्वास किया। अन्तिम दिनों में जब प्रभु परमेश्वर दया करके यरूशलेम के निवासियों पर अनुग्रह करनेहारा और प्रार्थना सिखानेहारा आत्मा उंडेलेगा तब वे रो रोके

विलाप करेंगे। हां वे पश्चात्ताप करेंगे और विशेष करके इस लिये पछतावेंगे कि उन्हों ने अपने राजा को मरवा डाला था॥

जो लोग शोकित न थे सो फरीसी थे। उन्हो ने व्यवस्था के पूरा करनेहारे को घात किया था पर अब उन्हो ने चाहा कि व्यवस्था की आज्ञा पूरी किई जावे अर्थात् लोथे उतारी जावें जिस्तें उनके कारण देश अपवित्र न होवे बल्कि लोग निस्तारपर्ब्ब का मेम्ना खा सकें। उन की इच्छा के अनुसार पिलात ने आज्ञा दिई कि क्रूशों पर चढ़ाये हुओं की हड्डियां तोड़ी जावें। जिस डाकू पर प्रभु ने दया किई थी उस को भी यह पीड़ा सहनी पडी। जब सिपाही मसीह के क्रूश के पास आये तब उन्हों ने देखा कि उस का प्राण निकला है इस लिये उस की कोई हड्डी तोड़ी नही गई। योहन प्रेरित कहता है कि "यह इस लिये हुआ कि धर्मपुस्तक का वचन पूरा होवे" कि उस की कोई हड्डी नहीं तोड़ी जावेगी"। धर्मपुस्तक में निस्तारपर्ब्ब के मेम्ने के विषय यह आज्ञा है कि उस की कोई हड्डी न तोडी जावे बल्कि वह समूचा खाया जावे। सो यह वचन भी मसीह में पूरा हुआ क्योंकि वह हमारे निस्तारपर्ब्ब का मेम्ना है जो हमारे लिये दिया गया है। योहन बपतिस्मा देनेहारे को पुकारते सुनकर कि "देखो ईश्वर का मेम्ना जो जगत के पाप उठा ले जाता है प्रभु यीशू का चेला हुआ। वह उसे क्रूश पर चढ़ाया हुआ मेम्ना मानता था। जैसे इस्राएली निस्तारपर्ब्ब के मेम्ने को समूचा खाते थे तैसे हम भी मसीह को अपना ज्ञान अपना धर्म अपनी पवित्रता और अपना उद्धार जानके समूचा ग्रहण करें॥

धर्मपुस्तक का एक और वचन सिपाहियों के द्वारा पूरा किया गया अर्थात् उन्हों ने निश्चय जानने चाहा कि यीशू मरा है। सो एक ने भाले से उस का पंजर बेधा और तुरन्त लोहू और पानी निकला। तब यह वचन पूरा हुआ कि "जिसे उन्हों ने बेधा उसे ताकेंगे"। (जकर्याह १२ १०)। हां रोमी सिपाहियों को भी धर्मपुस्तक का वचन पूरा करना पड़ा। इस्राएली लोग अपने बेधे हुए राजा को देखने पावेंगे। उस का भालेवाला घाव सब जाति के लोगों को दिखाई देगा और वे मान लेके कहेंगे कि हम ने अपने पापरूपी भाले से उस को बेधा है। पर परमेश्वर के चुने हुए लोग जब मसीह प्रगट होगा तब वे महिमा सहित उस के संग प्रगट होवेंगे और उस के समान होंगे क्योंकि उस को जैसा वह है तैसा देखेंगे। आमेन॥

यूसुफ का यीशू की लोथ को क्रूश पर से उतारना और कबर में रखना।

जब सांझ हुई इस लिये कि तैयारी का दिन था जो विश्रामवार के एक दिन आगे है तब अरमथिया नगर का यूसुफ नाम एक प्रतिष्ठित और धनवान मन्त्री जो उत्तम और धर्मी पुरुष होके दूसरे मन्त्रियों के परामर्श और काम में नहीं मिला था वह आप भी यीशू का शिष्य था और वह ईश्वर के राज्य की बाट जोहता था उस ने साहस करके पिलात के पास जाके यीशू की लोथ मांगी। पिलात ने अचभा करके पूछा कि क्या वह मर गया और शतपति को अपने पास बुलाके उस से पूछा कि क्या उस को मरे कुछ वेर हुई। और जब शतपति से यह जान लिया तब यूसुफ को लोथ दिलवा दिई। और यूसुफ ने मलमल मोल लेके यीशू को उतारा। निकोदीम भी जो पहिले एक रात को यीशू के पास आया था पचास सेर के अटकल मिलाये हुए गन्धरस और एलवा लेके आया। तब उन्हों ने यीशू की लोथ को लिया और यहूदियों के गाड़ने की रीति के अनुसार उस सुगन्ध के संग मलमल के कपड़े में लपेटा। और जहां वह क्रूश पर चढ़ाया गया उस स्थान में एक बारी थी और बारी में एक नई कबर थी जो चटान में खोदी हुई थी और जिस में कोई कभी नहीं रखा गया था। सो यहूदियों की तैयारी के दिन के कारण उन्हों ने यीशू को वहां रखा क्योंकि वह कबर निकट थी। और वे कबर के द्वार पर बड़ा पत्थर लुढ़काके चले गये। वे स्त्रियां भी जो गालील से उस के संग आई थीं पीछे हो लिईं और उन्हो ने कबर को और उस की लोथ को कि क्योंकर रखी गई देख लिया। और उन्हों ने लौटके सुगन्ध द्रव्य और सुगन्ध तेल तैयार किया। और उन्हों ने आज्ञा के अनुसार विश्राम-वार को विश्राम किया॥

दूसरे दिन जो तैयारी के दिन के पीछे था महायाजक और फरीसी पिलात के पास एकट्ठे हुए और कहा हे प्रभु हमें स्मरण है कि उस भर-मानेहारे ने अपने जीते जी कहा था कि तीन दिन के पीछे मैं जी उठूंगा। सो आज्ञा कर कि तीसरे दिन लों कबर की रक्षा किई जाय न हो कि शिष्य आके उसे चुरा ले जायें और लोगों से कहें वह मृतकों में से जी उठा है तब पिछली भूल पहिली से बुरी होगी। पिलात ने उन से कहा तुम्हारे पास पहरा है जाओ अपने जानते भर रक्षा करो। और उन्हों ने

जाके पत्थर पर छाप देके कबर की रक्षा किई और पहरा उन के संग था। मत्ती २७ : ५७–६६। मार्क १५ : ४२–४७। लूक २३ . ५०–५६। योहन १९ : ३८–४२॥

यशायाह नबी ने कहा है कि "यह इच्छा तो थी कि उस को दुष्टों की रीति पर अनादर से मिट्टी दिई जावे पर इस के उलटे जब वह मरा तब उस को एक धनी की कबर मिली"। हां पावल प्रेरित ने कहा है कि "वह धर्मपुस्तक के अनुसार, गाडा गया" जिन लोगों ने उस की हड्डियों को तोड़ने चाहा उन की इच्छा थी कि हम कुकर्मी की रीति पर अनादर से उस को मिट्टी देवेंगे पर अवश्य था कि वह धर्मपुस्तक के वचन के अनुसार आदर के साथ कबर में रखा जावे। उस का कबर में रखा जाना उस की दीनताई की दशा में शामिल तो है पर जब से वह क्रूश पर से उतारा गया तब से उस की कुछ महिमा प्रगट होने लगी। जो लोग पहिले डर के मारे मनुष्यों के साम्हने मसीह को मान न सकते थे उन को उस की मृत्यु पर हियाव बधाया गया कि उन्हों ने निर्भय होके अपने तुच्छ जाने हुए और निन्दित गुरु की लोथ को क्रूश पर से उतारके आदर से मिट्टी दिई। प्रभु यीशू दरिद्रता में उत्पन्न हुआ और अपराधी के समान मर गया पर जब वह उत्पन्न हुआ था तब भक्तिमान परदेशियों ने आके उस का आदर और सन्मान कर कुछ धन उस को दिया। वह तो अपने निज लोगों के पास आया पर उन्हों ने उसे ग्रहण न किया पर जब वह मरा तब उस के निज लोगों में से दो आदरमान और धनवान जनों ने उस का बड़ा आदर करके उस को धनवान की रीति पर मिट्टी दिई॥

अरमथिया नाम नगर का एक रहनेहारे यूसुफ ने और अध्यापक निकोदीम ने उस समय प्रभु यीशू का आदर किया जिस समय उसके सब और मित्रों ने डर के मारे कुछ नहीं किया। जब प्रभु की दशा सब से बुरी थी और लोग उस को कुकर्मी की रीति पर मिट्टी देने पर थे तब उन दोनों आदरमान पुरुषों के मनों में प्रभु की ओर तप्त प्रेम प्रगट हुआ। वे सोचने लगे कि जो कुछ हो सो हो पर दुष्ट लोग हमारे प्रिय गुरु को अपराधी की रीति पर मिट्टी देने न पावेंगे। जैसे बुढ़ी हन्ना ईश्वर के राज्य की बाट जोहते २ मसीह की आशा करती थी तैसे ये दोनों भी करते थे। उन को मालूम हो गया था कि यीशू नासरी प्रतिज्ञात मसीह को है। वे दुष्टों की युक्ति पर चलने न चाहते थे इस लिये उन्हों ने मसीह

दण्ड के योग्य ठहराने में से सम्मति न दिई। निकोदीम समझने लगा होगा कि उस वचन का अर्थ क्या है जो यीशू ने उस से कहा था अर्थात् " जिस रीति से मूसा ने जंगल में सांप को ऊंचा किया उसी रीति से मनुष्य का पुत्र भी ऊंचा किया जावेगा कि जो कोई उस पर विश्वास करे सो नाश न होवे परन्तु अनन्त जीवन पावे "। यीशू मसीह को क्रूश पर देखने से उस का विश्वास यहां लों बढ़ गया कि वह विश्वास में बड़ा शूरवीर हो गया। मनुष्यों का जो डर मन में था सो सब उड़ गया। पर हे यूसुफ और हे निकोदीम बताइये कि आप किस कारण इतने निर्भय और साहसी विश्वासी हो गये। आप तो उत्तर देते हैं कि मसीह के अथाह प्रेम ने हम को मोह लेके हमारे भय को भगाया। यीशू मसीह हम से प्रेम रखता गया और होते होते हम निश्चय जानने लगे कि वह *प्रेमस्वरूप परमेश्वर* का अवतार है जो संसार का पापरूपी भार दूर करने को प्रगट हुआ। हां हम को निश्चय हुआ कि उस ने पाप से हमारा उद्धार किया है। उस ने जो हमारे लिये अपना प्राण दिया उस से हम काहेको लज्जित होंगे। हम उस दयासागर और कृपानिधान प्रभु को मान लेके सारे लोगों के देखते उस का आदर करेंगे॥

हे भाइयो तुम जो मसीह से निष्कपट प्रेम रखते हो पर मनुष्यों के डर के मारे उसे मान नहीं लेते हो इन दोनों जनों से सीखो। जब प्रभु यीशू कुकर्मी के समान घात किया गया था और जब वैरी उन सभों को सताने और दुःखाने को तैयार थे जो यीशू नासरी को मसीह मानके प्रिय जानते थे तब इन दोनों ने हियाव बांधके मसीह का आदर किया। उन का प्रेम बहुत बड़ा था। हे भाइयो यह मत सोचो कि हम दुष्टों के परामर्श में सम्मति नही देते हैं बल्कि मसीह से गुप्त में प्रेम रखते हैं सो हमारे लिये कोई डर नहीं। डर बहुत है। जानना चाहिये कि जो लोग इसी प्रकार का सोच करते हैं सो बड़ी भूल में पड़े हैं क्योंकि जो लोग मसीह के संग ससाररूपी छावनी के बाहर जाके उस के साथ निन्दा और दुःख सह लेते हैं केवल वे ही उस के संग महिमा पावेंगे। मसीह ने कहा है कि " जो मुझे मनुष्यों के साम्हने मान लेवे मैं अपने स्वर्गीय पिता और उस के दूतों के साम्हने उसे मान लूंगा "। यह भी लिखा है कि " यदि सन्तान हैं तो अधिकारी भी हैं हां ईश्वर के अधिकारी और मसीह के संगी अधिकारी यदि हम सचमुच उस के संग दुःख उठाते हैं तो उस के संग महिमा भी पावें "। (रोमियों को ८ १७)। सो हे

भाइयो ढाड़स बांधो और यूसुफ और निकोदीम के समान मसीह का मान लेओ। देरी मत करो बल्कि आज ही उसी को मान लेओ जिस ने तुम्हारे लिये अपना प्राण दिया। वह इस के योग्य है कि तुम तन और मन से उस का स्वीकार करो। उन सिपाहियों के समान न होना जो हथियार बांधे हुए युद्ध के दिन पीठ फेरते हैं। क्रूश पर चढाये हुए मसीह से कभी न लजाना बल्कि सकट और दु:ख के दिन में भी उस का स्वीकार करना। उस के स्वीकार करने से तुम को सामर्थ्य मिलेगा क्योंकि वह जीवता है वह तीसरे दिन यूसुफ की कबर में से जीता हुआ निकला और सदा जीता रहता और अपने स्वीकारकों के सग संग होता हुआ उन्हें अपनी शक्ति के बचन के द्वारा सभालता उन की रक्षा करता और उन्हें सच्चाई के मार्ग पर चलाता रहता है॥

तैयारी के दिन की सांझ यूसुफ मसीह को कबर में रखने की तैयारियां करने लगा। उस ने इस लिये शीघ्रता किई कि विश्रामवार होने पर था और उचित न था कि मसीह की पवित्र देह स्राप की लकड़ी पर लटकी रहे। परमेश्वर की इच्छा भी थी कि मसीह की देह विश्रामवार को कबर में अपने कार्य्यों से विश्राम करके तीसरे दिन जी उठे। यूसुफ ने साहस कर पिलात के पास जाके यीशू कीलोथ मांगी मसीह के प्रेम ने यूसुफ को वश कर लिया इस लिये उस ने बिना छूत माने अध्यक्षभवन के भीतर जाके निस्तारपर्ब्ब के उस मेम्ने को मांगा जिस का लोहू मनुष्यों को उन के पापों से शुद्ध करता है। यूसुफ ने पिलात से अत्यन्त बड़ा दान मांगा क्योंकि उस ने उस देह को मांगा जिस में परमेश्वरताई की सारी पूर्णता बास करती है और जो जीवते बचन का घर और परमेश्वरके अद्भुतकर्मों का वसीला ठहरती है। पिलात इन बातों से अनजान था। उस ने सोचा होगा कि अच्छी बात है कि वह कबर में रखी जावे तो मैं उस के विषय फिर न सुनने पाऊंगा। पर उस ने कहा मालूम करना चाहिये कि वह सचमुच मरा है कि नहीं। पिलात ने सुनके कि यीशू मर गया है उस की देह यूसुफ को दिई कि वह यहूदियों की रीति के अनुसार कबर में रखी जावे। यूसुफ ने मलमल मोल लेके लोथ को उतारा। यद्यपि वह आदरमान मन्त्री था तौभी उस ने आप उसे उतारा। संभव है कि और लोगों ने जो मसीह से प्रेम रखते थे उस की सहायता किई हो। प्रभु ने अपने शिष्यों के पांव धोया था तो वे काहेको उस की लोहूलुहान लोथ से लजावें। किसी ने कहा है कि लोग दूसरे प्रकार से

भी मसीह को क्रूश पर से उतार सकते हैं अर्थात् जब लों मनुष्य पाप करता रहता है तब लों वह माने मसीह को क्रूश पर चढ़ाया हुआ रखता है क्योंकि हमारे पाप उस के क्रूश पर चढ़ाये जाने के कारण हैं परन्तु जब मनुष्य सच्चे मन से अपने पापों से पछताने लगता है तब मसीह को माने क्रूश पर से उतारता और अपनी गोद में लेता है। जो मनुष्य पाप से पछताके विश्वासरूपी हाथ से उस को ग्रहण करे उस पर वह दया करके उस की अभिलाषा को पूरा करेगा॥

फिर निकोदीम भी पचास सेर के अटकल मिलाये हुए गन्धरस और एलवा लेके आया। जैसी मरियम ने प्रभु को प्रेम दिखाके बहुमूल्य सुगन्ध तेल से उसे मला था वैसे निकोदीम ने भी बड़ा खर्च करके मिलाये हुए बहुमूल्य गन्धरस और एलवा को मोल लिया कि मसीह की पवित्र देह उन में रखी जावे। उन दोनों ने मसीह की देह को मलके और शुद्ध मलमल में लपेटकर कबर में रखा। "उस को धनी की कबर मिली"। यूसुफ न केवल नाशमान धन का धनी था बल्कि विशेष करके प्रेम का धनी। हां यूसुफ और निकोदीम के मन प्रेम से परिपूर्ण थे॥

जिस कबर में मसीह की लोथ रखी गई सो एक बारी में थी। एक बारी में आदम पाप में गिरा और इस पाप के कारण सारी सृष्टि पर स्राप पड़ा। एक बारी में मसीह ने संसारके पापों के दूर करने के साधन का आरंभ किया और एक बारी में मसीह के संग संसार के सारे पाप और स्राप को मिट्टी दिई गई। मसीह की लोथ यूसुफ की कबर में रखी गई। अवश्य नहीं था कि कबर मसीह की निज की होवे क्योंकि उस ने केवल तीन दिन लों उस में रहने चाहा। जो अपराधियों के संग गिना गया और अपराधियों के संग मरा उस ने धर्मी जन की कबर में थोडी देर लों विश्राम करना पसन्द किया क्योंकि वह एक बेर पापियों के लिये मरा और फिर कभी न मरेगा बल्कि वह उन सभों को जो उस पर विश्वास रखते हैं जीवन और धर्म देता है। मसीह की देह नई कबर में रखी गई। इस के विषय किसी ने कहा है कि जो मनुष्य को नये सिरे से उत्पन्न करता है उस ने चाहा कि मैं अद्भुत रीति पर उत्पन्न होऊंगा और जिस ने नये पुनरुत्थान को स्थापन किया है उस ने एक नई कबर में विश्राम करने की इच्छा किई। हां जो नये मन में वास करने का अभिलाषी है उस ने नई कबर में आराम करने चाहा। यह कबर चटान में खोदी गई थी क्योंकि अवश्य था कि वह इतनी दृढ़ होवे कि केवल दूत

उस को हिला सकें। वे कबर के द्वार पर बड़ा पत्थर लुढ़काके चले गये। उन्हों ने सोचा होगा कि पर्व के पीछे हम प्रभु की देह को ऐसी जगह में रखेंगे कि दुष्ट लोग उसे छूने न पावें। किसी ने कहा है कि यदि प्रभु यीशू हमारे मन में विश्राम करने लगा हो तो चाहिये कि हम मन के द्वार को बन्द करें कि कोई उस में प्रवेश करने न पावे॥

भक्तिमान स्त्रियां देख रही थीं कि उस की लोथ क्योंकर रखी गई। उन्हों ने भी मसीह का आदर करने की इच्छा और तैयारी किई। पर परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार उन्हों ने विश्रामवार के दिन विश्राम किया। जिस दिन में प्रभु यीशू जी उठा सो प्रभु का दिन कहावता है और वही मसीहियों का विश्रामवार है। सच्चे मसीही परमेश्वर के सेंतमेंत दिये हुए अनुग्रह में विश्राम करके सप्ताह का आरंभ करते और सप्ताह भर परायों का उपकार करते जाते हैं॥

प्रेरितों के विश्वासदर्पण में लिखा है कि मसीह गाड़ा गया और पावल प्रेरित ने कहा है कि वह धर्मपुस्तक के अनुसार गाड़ा गया। यीशू मसीह ने भी कहा था कि मनुष्य का पुत्र पृथिवी के अन्दर में रखा जावे। यह बात भारी है और मसीही मण्डली आरम्भ से मानती आई है कि प्रभु को मिट्टी दिई गई अर्थात् उस की देह कबर में रखी गई। यदि मसीह की इच्छा होती तो वह तुरन्त अपना शारीरिक जीवन फिर लेता क्योंकि मृत्यु उस की इच्छा के विरुद्ध उसे पल भर रख न सकी। पर उस ने इस कारण से अपना जीवन तुरन्त फिर न लिया कि उस ने चाहा कि मैं हर एक बात में भाइयों के समान होऊं जिस्तें मैं उन की सहायता कर सकूं। उस ने कबर में रखे जाने से सब पृथिवीवासियों के मार्ग अर्थात् उनकी कबर को पवित्र किया है। उस की देह भी कबर के योग्य थी क्योंकि वह उस की दीनताई और दुर्बलताई की देह थी। वह पाप के शरीर की समानता हां एक लोथ थी। जैसे पुराना मनुष्यत्व उस के संग क्रूश पर चढ़ाया गया वैसे कबर में उस की रखी हुई देह के द्वारा पाप का शरीर नष्ट होता है। मसीह की कबर में से न कोई दुर्बलता न पाप के शरीर की समानता निकली क्योंकि प्रभु ने नाशमान देह और सेवक के रूप को छोड़के प्रतापी और आत्मिक देह को धारण किया। जय में मृत्यु निगल गई। सो अब यीशू मसीह पर विश्वास रखनेहारों के लिये मृत्यु मृत्यु नहीं ठहरती है। शारीरिक मृत्यु के द्वारा

उन के जीने की गति वदलती है। व मृत्यु के द्वारा अपूर्णता और दुःख के लोक को छोड़कर पूर्णता और सुख के लोक में प्रवेश करते हैं। परमेश्वर धन्य होवे कि स्राप दूर किया गया और पृथिवी शुद्ध हो गई। इस बात पर साक्षी देने के लिये मसीह कबर में रखा गया। जो क्रूश पर टंगा था सो सांझ को उस पर से उतारा गया जिस्तें मालूम हो जावे कि स्राप दूर किया गया। जो लोग मसीह पर विश्वास रखते हुए यहां से कूच करते हैं सो कबर में अपने साथ कुछ नहीं लेते हैं जो दण्ड के योग्य है। उन की कबरें उन के विश्रामस्थान ठहरती हैं। "जैसे मसीह हमारे लिये उत्पन्न हुआ और हमारे लिये दुःख भोगके मरा वैसे वह हमारे लिये कबर में भी रखा गया जिस्तें हम उस के कारण कबर में विश्राम करें। परमेश्वर ने सृष्टि का काम समाप्त करके सातवें दिन विश्राम किया और विश्रामवार को हमारे लिये पवित्र ठहराया। इसी रीति से प्रभु यीशू ने भी उद्धार का काम पूरा करके कबर में विश्राम करने चाहा जिस्तें हमारा आत्मा परमेश्वर में और हमारी देह कबर में विश्राम पावें"। मसीह ने अधोलोक में उतरके उसके निवासियों पर प्रगट किया कि मैं जीवतों और मृतकों का स्वामी हूं। अवश्य था कि मसीह कबर में से जी उठके पृथिवी के निवासियों को मृत्युंजय दिखाई देवे। कबर में से जीवता निकलके उस ने प्रगट किया कि मैं जीवन का हाकिम हूं। हां उस ने प्रगट किया कि मैं जीता हूं और मृत्यु और परलोक की कुंजियां मेरे पास हैं। मसीह ने अपनी मृत्यु के द्वार "मृत्यु को मृत्यु कर दिया" और शैतान के अधिकार को लोप किया। सो हम मसीही न मृत्यु से और न कबर से भय खावें। वे हमारी हानि कर न सकती हैं। हमारी देह भूमि में रखी जावेंगी और मिट्टी हो जावेंगी पर उनमें एक अविनाशी बीज जो है उस से नई देह निकलेंगी जो मसीह की प्रतापी देह के सदृश होवेंगी जैसा लिखा है कि "वह हमारी दीनताई की देह का रूप बदल डालेगा कि वह उस के ऐश्वर्य्य की देह के सदृश हो जावे"॥

धर्मियों ने विश्रामवार को विश्राम किया पर अधर्मी बेचैन थे। मसीह के मरने के दिन के पीछे का दिन जो यहूदियों का बड़ा विश्रामवार था उस दिन को वे एकट्ठे होके पिलात के पास गये। वे व्याकुल थे और डर के मारे चैन पा न सके क्योंकि उन को यीशू मसीह का वह वचन स्मरण आया जो उस ने कहा था कि "मैं तीसरे दिन जी उठूंगा। मसीह के शिष्य इस वचन को भूल गये थे। यदि वे उस को स्मरण

देखते तो उन का भला होता और उन का सारा शोक और सारी व्याकुलता जाती रहती। अधर्मियों ने मसीह को घात किया था पर वे उस के वचन को नाश न कर सके। ऐसा न हो कि प्रभु का बचन पूरा होवे अर्थात् वह अपने वचन के अनुसार कबर में से जीता निकले सो उन्हों ने पिलात से चाहा कि मसीह की कबर की रक्षा किई जावे। पिलात ने कबर की रक्षा करने की आज्ञा तो दिई और उन्हों ने जाके पत्थर पर छाप दिई और पहरा देने के लिये सिपाहियों को लगाया। यह करके उन्हों ने सोचा होगा कि हमने अच्छा उपाय किया है। अब वह कबर में से निकलने न पावगा। सब लोगों को मालूम होगा कि उस के वचन विश्वास के योग्य नहीं हैं। जानना चाहिये कि उन्होंने धोखा खाया क्योंकि मसीह कबर के बधनों को तोड़के अपने कहे हुए वचन के अनुसार जी उठा॥

जब से यहूदियोंने मसीह की कबर के पत्थर पर छाप दिइ तब से संसार के लोग मसीह को और उस के अनुगामियो को कबरों और जेलखानों में बन्द करने का यत्न करते आये हैं पर वे सुफल न हुए। मसीह अपनी सेना सहित विजयी होता आया है और वह विजयी बना रहेगा। बहुत से लोग इस समय में भी उस को झुठलाया करते हैं कि वह भरमानेहारा है पर जानना चाहिये कि उस ने किसी को कभी नहीं भरमाया है। उस ने लाखों करोड़ों मनुष्यों को अपने प्रेमरूपी रस्सियों से अपनी ओर खींचके और उन्हे चेले बनाके अपने अनुगामी बनाया और उन्हे अनन्त जीवन और सदा के सुख के भागी बनाया है। जानना चाहिये कि जो कोई मसीह की शरण में आके सच्चे मन से उस पर बिश्वास करे सो उस की मृत्यु के फलों का भागी होगा अर्थात् वह धार्मिकता पापों की क्षमा परमेश्वर से मेल आत्मिक जीवन और सुख और शान्ति आदि बरदान पावगा। आमेन॥

PRINTED BY E CALEB, AT THE ALLAHABAD MISSION PRESS
1914